वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

मई 2022



मई दिवस (15)



हिजाब विवाद (8)


अगर परमाणु युद्ध ... (31)


टेकफॉग: नफरत का टूलकिट (12)



सच कहने के साधन तो बहुत हो गए पर, सच कहने वाले कम हो गए।

कौन जात हो भाई ?

दलित हैं साब!
नहीं मतलब किसमें आते हो?
आपकी गाली में आते हैं
गन्दी नाली में आते हैं
और अलग की हुई थाली में आते हैं साब!
मुझे लगा हिन्दू में आते हो!
आता हूँ न साब! पर आपके चुनाव में।
क्या खाते हो भाई?
जो एक दलित खाता है साब!
नहीं मतलब क्या-क्या खाते हो?
आपसे मार खाता हूँ
कर्ज़ का भार खाता हूँ
और तंगी में नून तो कभी अचार खाता हूँ साब!
नहीं मुझे लगा कि मुर्गा खाते हो!
खाता हूँ न साब! पर आपके चुनाव में।
क्या पीते हो भाई?
जो एक दलित पीता है साब!
नहीं मतलब क्या-क्या पीते हो?
छुआ-छूत का गम
टूटे अरमानों का दम
और नंगी आँखों से देखा गया सारा भरम साब!
मुझे लगा शराब पीते हो!
पीता हूँ न साब! पर आपके चुनाव में।
क्या मिला है भाई
जो दलितों को मिलता है साब!
नहीं मतलब क्या-क्या मिला है?
ज़िल्लत भरी जिंदगी
आपकी छोड़ी हुई गंदगी
और तिस पर भी आप जैसे परजीवियों की बंदगी साब!
मुझे लगा वादे मिले हैं!
मिलते हैं न साब! पर आपके चुनाव में।
क्या किया है भाई?
जो दलित करता है साब!
नहीं मतलब क्या-क्या किया है?
सौ दिन तालाब में काम किया
पसीने से तर सुबह को शाम किया
और आते जाते ठाकुरों को सलाम किया साब!
मुझे लगा कोई बड़ा काम किया!
किया है न साब! आपके चुनाव का प्रचार..।

बच्चा लाल उन्मेष

मुख्य संपादक
बलबीर लौंगोवाल
balbirlongowal1966@gmail.com
98153 17028
संपादक
प्रा बलवंत सिंह
tarksheeleditor@gmail.com
94163 24802

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार गिल, कनेडा
अछर सिंह खरलवीर, कवैंटरी (इंगलैंड)
(+44 748 635 1185)
मा. भजन सिंह कनेडा
बलदेव रहिपा, टोरांटो

पत्रिका शुल्क :-
द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400
में जमा करा सकते है।

प्रा. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।

इस अंक में

संपादकीय

किधर जा रहे है हम ...?

फासीवादी शक्तियों द्वारा अल्पसंख्यकों के प्रति सांप्रदायिक फासीवाद अपने चरम पर है। तथाकथित संत/महंत/साध्वी, भाजपा/संघ के नेता साम्प्रदायिक बयानबाजी कर इस देश को साम्प्रदायिक आग में जलाने के लिए पूरी ताकत झोंक रहे हैं। साध्वी ऋतंभरा कहती हैं, ''हिंदू भाइयों से अनुरोध है कि चार बच्चे पैदा करें, उनमें से दो राष्ट्र को और दो समाज को दें, तब हिंदू राष्ट्र बनेगा।'' विवादास्पद पुजारी यति नरसिंहनन्द हिंदुओं से अपील करते हैं, ''ज्यादा बच्चे पैदा करो वरना, हिन्दू खत्म हो जाएंगे। अगर एक बार एक गैर-हिंदू प्रधान मंत्री बन गया तो लगभग 20 वर्षों में यह देश एक गैर-हिंदू राष्ट्र बन जाएगा।'' महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के प्रमुख राज ठाकरे ने घोषणा की कि अगर 3 मई तक मस्जिदों से लाउडस्पीकर नहीं हटाए गए, तो मस्जिदों के बाहर लाउडस्पीकर लगाकर हनुमान चालीसा का पाठ किया जाएगा। मुसलमानों को धमकाते हुए बजरंग दास मुनि ने कहा, ''अगर आप खैराबाद में एक भी हिंदू लड़की से छेड़छाड़ करते हैं, तो मैं आपकी बहू और बेटियों का खुलेआम बलात्कार करूंगा।'' एक संवैधानिक सीट पर बैठे हुए ने कहा, ''सरकार पर शिक्षा का भगवाकरण करने का आरोप है लेकिन भगवा में क्या गलत है?'' पांच राज्यों में चुनावों से पूर्व संघ से जुड़े साधु संतों ने धर्म संसद का आयोजन कर साम्प्रदायिक भाषण दिए और चुनावों में मिली चार राज्यों की जीत के बाद तो साम्प्रदायिक सौहाद्र बिगाड़ने के पूरे प्रयास हो रहे हैं। साम्प्रदायिक भीड़ ने 'न्यूज लांड्री' की पत्रकार शिवांगी सक्सेना, रौनक भाटी, 'दी क्विट' के प्रमुख पत्रकार मेघनाद बोस, हिंदुस्तान गजट के मीर फैसल, फोटो जर्नलिस्ट मुहम्मद मेहरबान,आजाद पत्रकार अरबाब अली की सरेआम पिटाई की। विधानसभा चुनाव से पहले चार राज्यों में भाजपा की जीत ने सांप्रदायिकता को और खींच लिया है। जे.एन.यू. में की गई गुंडागर्दी जग जाहिर है। गाय की सुरक्षा के नाम पर हो रही गुंडा गर्दी भी सामने है। राम नवमी के उत्सव के मद्देनजर 10 अप्रैल को मध्य प्रदेश, झारखंड और गुजरात में हुई हिंसा की घटनाओं ने संवेदनशील व्यक्ति को झकझोर कर रख दिया है कि देश किस दिशा में जा रहा है। दिल्ली में जहांगीर पुरी में खुले सांप्रदायिक दंगे हुए। आंध्र प्रदेश, उत्तराखंड में हनुमान जयंती के अवसर पर सांप्रदायिक गिरोहों द्वारा हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया गया। पीड़ितों को ही अरेस्ट किया जा रहा है। उड़ीसा के बरगढ़ जिले में 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती मना रहे दलित युवकों पर बजरंग दल के गुंडों ने हमला कर उन्हें बुरी तरह पीटा। विभिन्न स्थानों पर अल्पसंख्यक समुदाय के घरों में बुलडोजर चलाए जा रहे हैं। देश की तस्वीर का दूसरा पहलू-महंगाई चरम पर है, लाखों नौकरियां चली गईं, सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं समाप्त हो रही हैं। इस सब पर पर्दा डालने के लिए और लोगों की समस्याओं को हल करने में व्यवस्था की नाकामी को ढकने और पूंजीवाद की पकड़ को ऊंचाई की तरफ ले जाने के लिए जनता का ध्यान हटाने के लिए साम्प्रदायिक जहर फैलाया जा रहा है।

आइए हम सांप्रदायिक जहर फैलाकर देश को सांप्रदायिक दंगों में डुबाने की तैयारी को समझें और असली जनहित के मुद्दों की तरफ गौर करें। **-बलबीर लौंगोवाल**

मोक्ष के लिए आत्महत्या और हत्याएं

भारत भूषण श्रीवास्तव

लगभग 140 करोड़ की आबादी वाले हमारे देश में कोई एक आदमी भी मय सबूत के यह दावा पेश नहीं कर सकता कि वह धर्मग्रंथों में वर्णित 84 लाख योनियों में से पिछले जन्म में क्या था। मानव योनि में ही था या कोई शेर, चीता, सरीखा हिंसक जंगली पशु था या उड़ने वाला कोई तोता, कौवा, चिड़िया था या कि मछली, मेंढक, मगरमच्छ था।

> मोक्ष का जिक्र हर धर्म में हैं। यह इसलिए ताकि मेहनत का फल मानने वालों को उन के मेहनताने से दूर किया जा सके व उन्हें पंडेपुजारियों द्वारा समझाया जा सके कि असल फल या मुक्ति तो मोक्ष मिलने पर है। आज भी इस काल्पनिक मोक्ष के चक्कर में कई परिवार उजड़ रहे हैं।

यह सवाल मोक्ष के मद्देनजर बेहद मौजूं है जिस के बारे में आम धारणा यह है कि जीवनमृत्यु यानी जन्ममरण के चक्र से मुक्ति पा जाने को ही मोक्ष कहते हैं और यह मोक्ष हर किसी को यों ही नहीं मिल जाता।

मोक्ष के लिए बड़े धार्मिक जतन करने पड़ते हैं जिन में से पहला तो यह हैं कि आदमी कोई पाप न करे, बस, पुण्य ही पुण्य करता रहे। पाप क्या और पुण्य क्या, इस के लिए आप को अपने नजदीकी पंडे से संपर्क साधना चाहिए जो हजार दो हजार रुपए में बता देगा कि पाप और पुण्य इतने उतने तरीके के और ऐसे वैसे होते है। लेकिन आप कितनी भी कोशिश कर लें पाप करने से नहीं बच सकते। इसलिए आप की मोक्ष की कामना पूरी नहीं होने वाली।

तो फिर हर किसी को काल्पनिक मोक्ष की हवस क्यों और वह कैसे पूरी हो, इस के लिए धर्म के दुकानदारों ने कई तरीके अर्थात विधिविधान फैला रखे हैं जिन पर अमल कर के आप मोक्ष को पा सकते हैं। इन में दान और एकादशी का व्रत प्रमुख हैं और शर्त यह है कि दान भी सिर्फ ब्राह्मण को ही दिया जाए, तभी मनोकामना पूरी होती है। किसी और को दान दे दिया तो मोक्ष का आप का कन्फर्म टिकट कैंसिल हो जाएगा। दरअसल, मोक्ष क्या है (और कुछ है भी या नहीं), जिसे लोग हासिल करने के लिए कुछ भी करने को क्यों तैयार रहते हैं, इसे समझने के लिए पहले हरियाणा के एक शख्स का किया चिंतनीय और जानलेवा कृत्य समझना ज़रूरी है जो दिमागीतौर पर बीमार लोगों की कैटेगिरी में आता है।

मोक्ष के लिए 4 हत्याएं

रमेश को 'राक्षस' कहना कोई हर्ज की बात नहीं जो हरियाणा के हिसार जिले के नंगथला गांव में रहता था। प्रिंटिंग प्रैस और एडवरटाइजिंग के काम के जरिए उसे इतनी आमदनी हो जाती थी कि जिस से वह अपने परिवार का पेट सम्मानजनक तरीके से भर लेता था। इस दौर का सब से बड़ा सुख तो उसे मिला ही हुआ था। पत्नी किसी बात पर कलह नहीं करती थी। तीनों बच्चे आज्ञाकारी थे और पढ़ाई-लिखाई में होशियार थे। गाँव के लोगों की नज़र में यह एक सुखी व आदर्श परिवार था। यह तो थी ऊपर से दिखने वाली बात लेकिन अंदर की बात धर्म की चाशनी में डूबी डूबी कड़वी व जहरीली है जिस ने 4 हत्याओं के लिए रमेश को उकसाया और मोक्ष के झांसे में आ कर उस ने एक नृशंस वारदात को अंजाम दे भी दिया।

जरूरत से ज्यादा धार्मिक प्रवृत्ति के रमेश का लाइफस्टाईल बड़ा अजीब था। वह गाँव के घरों से जहरीले जानवरों को पकड़ कर उन्हें जंगल में छोड़ देता था और इस बाबत कोई फीस नहीं लेता था, इसलिए लोग उसे पर्यावरण प्रेमी के खिताब से नवाज चुके थे।

रमेश की इच्छा संन्यासी बन जाने की थी जो घरगृहस्थी के बंधनों के चलते पूरी नहीं हो पा रही थी। मोक्ष का जब तक आने वाला ख्याल 20 दिसंबर को रमेश के सिर ऐसा चढ़ा कि अक्ल, समझ, व्यावहारिकता और विवेक ने उस का साथ पूरी तरह छोड़ दिया।

सब से पहले उस ने अपनी 38 वर्षीया पत्नी को कुदाल जैसे नुकीले हथियार से मौत के घाट उतारा, फिर एक

एक कर 2 बेटियों व इकलौते बेटे का भी बेरहमी से कत्ल कर दिया। ये चारों उस के मकसद में आड़े न आएं, इसलिए उसने खीर में नशीली चीज़ मिला कर इन्हें खिला दी थी।

जब ये बाधाएं हमेशा के लिए दूर हो गईं तो उस ने बिजली के करंट के जरिए खुद को मारने यानी आत्महत्या करने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हो पाया तो वह बरबाहा–अग्रोहा सड़क पर आ कर तेज गति से आ रही एक गाड़ी के सामने आ गया जिस से उस की भी मौत हो गई।

पुलिस वाले जब इस मौत की खबर देने उस के घर पहुंचे तो वहां खून से सनी 4 लाशें पहले से ही उन का इंतज़ार कर रही थीं। इंतज़ार क्या कर रहीं थीं बल्कि धर्म के अंधे एक सनकी का जनून बयां कर रही थीं।

रमेश के घर से बरामद एक डायरी से यह खुलासा हुआ कि उस ने मोक्ष की चाह में अपना हराभरा घर उजाड़ लिया। अपने सुसाइड नोट में रमेश ने लिखा था कि वह मोक्ष का अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए परिवारजनों की हत्याएं और खुद आत्महत्या कर रहा है। आसपास के इलाके में सनसनी मची। देश भर में मोक्ष चाहने वाले इस नृशंस हत्याकांड की चर्चा हुई।

क्या है यह जानलेवा बीमारी

अपने 11 पृष्ठों के सुसाइड नोट में रमेश ने जो लिखा उस से यह बात तो साबित होती है कि उस के अंदर सांसारिकता और बाबाओं के उपदेश यानी तथाकथित आध्यात्मिकता का द्वंद्व चल रहा था जो उस के लिखे इन शब्दों से समझ भी आता है। जिंदगी के आखिरी दिनों में बहुत मन लगाने के कोशिश की थी। मशीनें खरीदीं, दुकान भी खरीद ली थी। 2 लाख रुपए दे दिए थे और भी बहुत पैसा आ रहा था। चुनाव में बहुत पैसा आया। कई लाख आए थे लेकिन शरीर व दिमाग हार मान चुके थे।

मन अब आज़ाद होना चाहता था। कोई सुख कोई बात अब रोक नहीं सकता। रोज रात को यह सब सोचता हूँ। 3 दिन से पूरी रात जागा हूँ। आखों में नींद नहीं।

मन को बहुत लालच दिया लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। अब रुकना मुश्किल था। आखिर दिमाग का बोझ उतर ही गया। कोई अफसोस कोई दुख नहीं। मुझे मोक्ष, शांति चाहिए थी। जो भी पढ़ रहा है मुझे अपराधी ना समझे। मेरा मन पिछले 15 वर्षों से संन्यासी था।

अस्थियाँ हरिद्वार के बजाय श्मशान के पेड़ पौधों में डाल दी जाएं। हम को इतनी शांति चाहिए। मेरे घर को, हमेशा बंद रखा जाए। मेरी आत्मा यही शांति से रहेगी। मुझे संन्यासी की तरह विदा किया जाए। मैं मानसिक रोगी हूँ। बस, शांति चाहता हूँ।

धर्म से उपजा पागलपन

निश्चित रुप से रमेश विक्षिप्त हो चुका था और ऐसे पागलों की देश में कमी नहीं जिन के पागलपन और सनक का जिम्मेदार धर्म है जो मोक्ष की बातें प्रमुखता से करता है। तमाम धर्मग्रंथों में मोक्ष का इफरात से जिक्र है। इस के झांसे में जो एक बार आ जाए वह जिंदगीभर मेहनत की कमाई मोक्ष के नाम पर पंडे पुजारियों पर लुटाता रहता है और इस पर भी सुकून या गारंटी न मिले तो हत्याएं और आत्महत्या तक कर बैठता है।

यह पागलपन मनोविज्ञान का विषय है। जो लोग धर्मकर्म में दिन रात डूबे रहते हैं, उन्हें शांति तो नहीं मिलती बल्कि इस शांति की चाह में वे इतने अशांत हो उठते हैं कि मौत ही इकलौता हल इससे छुटकारा पाने का उन्हें लगता हैं।

भोपाल के गांधी नगर इलाके की एम.एस.सी. की एक छात्रा 25 वर्षीय अन्नू दास ने बीती 16 नवंबर को इसी अशांति और बेचैनी के चलते आत्महत्या कर ली थी। मौत के एक रात पहले अन्नू सामान्य थी और इस ने घर वालों के साथ खाना भी खाया था। सुबह जब उस की लाश उस के कमरे में फंदे से झूलती मिली तो मां और रिटायर्ड आर्मीमैन पिता अजय दास सकते में आ गए।

अपने सुसाइड नोट में अन्नू ने लिखा था, ''भगवान मुझे बुला रहे हैं। सौरी, मम्मी पापा, मुझे माफ कर देना।'' लगता नहीं कि दास दंपती न केवल बेटी को, बल्कि खुद को भी कभी माफ कर पाएंगे। भगवान से मिलने की इच्छा और मोक्ष में कोई खास फर्क नहीं है। हां, एक समानता जरूर है कि दोनों का ही कोई आस्तित्व नहीं। लेकिन कुछ लोग धर्म के भ्रमजाल में आ कर इन्हें सच मान लेते हैं। और इस कथित रहस्य को जानने के लिए अपनो को रोता बिलखता छोड़

हसीन व खूबसूरत जिंदगी का खात्मा करने की मूर्खता कर बैठते हैं। इस बारे में भोपाल के नामी और वरिष्ठ मनोचिकित्सक विनय मिश्रा कहते हैं, ''यह मनोविकार और एक मानसिक बीमारी सिजोफ्रेनिया है जिस में रोगी वास्तविक जीवन में रुचि लेना छोड़ देता है और दिन रात आध्यात्म की बातें सोचता रहता है। कई युवा रोगियों के पेरैंट्स भी गलती करते उन्हें अलौकिक शक्तियों का स्वामी मानने लगते हैं।''

यानी हकीकत से कट जाना और खयालों में जीने लगना व उन्हें ही सच मान लेना आदमी को कहीं का नहीं छोड़ते। दिक्कत तो यह है कि यह खुराफात धर्म की देन हैं। अन्नू और राकेश जैसे लाखों करोड़ों लोग इस पागलपन के शिकार हो कर या तो पागलखानों में या फिर घरों में ही अपने व गैरों के लिए सिरदर्द व बोझ बने हुए हैं क्योंकि उन का दिमागी संतुलन बिगड़ चुका है।

दुनिया के सभी धर्मों की पूरी दुकानदारी पुनर्जन्म पर टिकी हुई है जिस के तहत बचपन से ही रटा दिया जाता है कि मरने के बाद अच्छे और बुरे कर्मों की बिना पर स्वर्ग और नर्क में जाना पड़ता है। इस जन्म मरण के चक्र का बड़ा वीभत्स चित्रण है जिसे सुन कर अच्छे खासे लोगों के दिल और दिमाग दोनों हिल जाते हैं।

मसलन, मरने के बाद शरीर से आत्मा निकलती है और ऊपरी लोकों की तरफ जाती है जहां स्वर्ग और नर्क स्थित हैं। जिन लोगों को कर्मों के अनुसार मोक्ष मिल जाता है वे स्वर्ग के सुख भोगते हैं। उन्हें वहां कुछ कामधाम नहीं करना पड़ता, मुफ्त के जायकेदार पकवान मिलते हैं, सुरा यानी शराब मिलती है। सुंदर अप्सराऐं नाचगाने से जी बहलाती हैं और सब से खास बात, आदमी को दोबारा जन्म ले कर नीचे मृत्युलोक में नहीं आना पड़ता जहां दुख ही दुख हैं।

नर्क का चित्रण दिल दहला देने वाला है कि वहां जो जाता है उसे तरह तरह की यातनाएं भोगनी पड़ती हैं। मसलन, मृतक को खौलते तेल के कड़ाहों में डाला जाता है। मलमूत्र के कुंडों में डुबोया जाता है। उस के शरीर में कीलें ठोकी जाती हैं।

कुम्भीपाक नाम के नर्क में गरम रेत और जलते अंगारों पर नंगे पांव चलाया जाता है। रौरव नाम के नर्क में पापियों को गन्ने की तरह पेरा जाता है। एक और नर्क जयंती में पापियों को भारी भरकम चट्टान के नीचे दबा दिया जाता है वगैरह। अब इतना सुनने के बाद भला कौन नर्क जाना चाहेगा। इसलिए लोग आंख बंद कर दानपुण्य में लग जाते हैं। मोक्ष मिलने की विधियां और तरीके भी ये धर्मग्रंथ बताते हैं।

ऐसी सैंकड़ों बातें मोक्ष के लिए बताई गई हैं और हर जगह पंडा स्वाभाविक तौर पर है क्योंकि वही ऊपर वाले का प्रतिनिधि है जिस के पास मोक्ष दिलाने का लाइसैंस हैं।

लेकिन प्रमाण कोई नहीं

मोक्ष का जिक्र हरेक धर्म ग्रंथ में हैं और इसे आदमी के लिए जरूरी बतलाया गया है। 4 तरह के पुरुषार्थों में से मोक्ष एक है। बाकी 3 धर्म, अर्थ और काम हैं। इन में से मोक्ष, दुकानदारी का बड़ा जरिया है जिस के लिए लोगों को पहले डराया जाता है। फिर दक्षिणा वसूली जाती है। पूजापाठ, भजन कीर्तन आदि के निर्देश देने का मतलब यही है कि लोग धार्मिक पाखंडों में किसी न किसी तरह उलझे रहें।

लेकिन धर्म जो कहता है उस के कोई प्रमाण नहीं है। चूंकि धार्मिक साहित्य में लिखा है इसलिए आंख मूंद कर मान लिया गया है कि मरने के बाद दोबारा जन्म लेना पड़ता है और तरह तरह की तकलीफें झेलनी पड़ती हैं। अब अगर इन से मुक्ति चाहिए तो मोक्ष प्राप्त करो।

हिसार के रमेश और भोपाल की अन्नू दास इसी चक्रव्यूह में फंस कर आत्महत्या कर बैठे जबकि उन के पास इज्जत, शान और सुख से जीने के विकल्प मौजूद थे, जिन्हें धर्म और मोक्ष ने इन से छीन लिया। ये दोनों मरने के बाद कहां गए, यह कोई नहीं बता सकता। हां, धर्म के ठेकेदार जरूर पूरी बेशर्मी से कहेंगे कि वे तो ऊपर स्वर्ग का सुख भोग रहे हैं।

अज्ञात और रहस्यों के प्रति जिज्ञासा बेहद कुदरती बात है और होना भी चाहिए क्योंकि यहीं से विज्ञान शुरू होता है लेकिन मरने के बाद भी कोई दुनिया या असित्तव है, यह मान लेने की कोई वजह नहीं और जो मान लेते हैं उन की जिंदगी जरूर जीते जी नर्क हो जाती है और वे दुनिया के तमाम सुखों से वंचित और विक्षिप्त हो जाते हैं।

(स्रोत : सरिता (फरवरी, प्रथम, 2022)

वास्तु तर्क पर भारी पड़ता वहम

प्रतिभा अग्निहोत्री

देश में आज भी ऐसे लोग हैं जो अजीबोगरीब अंधविश्वासों से घिरे हुए हैं, गरीब टोनाटोटका से घिरे रहते हैं तो पौश वास्तुदोष में फंसे रहते हैं, अधिक दिक्कत इन्हीं शिक्षित पौश लोगों से है जो पढ़लिख कर भी अंधविश्वास को अपना रहे हैं।

आजकल वास्तुशास्त्र के हिसाब से बैडरूम, किचन, बाथरूम और बालकनी बनवाने का चलन जोरों पर है। इससे पंडित पुजारी अंधविश्वास और वहम के चक्कर में फंसा कर लोगों से खूब पैसा ऐंठ रहे हैं।

निम्न बातों का रखें खास ध्यान

घर खरीदते या बनवाते समय किसी पूजा-पाठ को करने या वास्तुशास्त्री से सलाहमशवरा करने के स्थान पर इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

* घर में पर्याप्त वैंटिलेशन हो ताकि हवा का आवागमन सुचारु रूप से हो सके और घर के सदस्यों को ताजी हवा प्राप्त हो सके।

* यह सुनिश्चित करें कि सूर्य के उदय अथवा अस्त होते समय सूर्य का प्रकाश आपको मिल सके क्योंकि इस समय सूर्य की रोशनी में अल्ट्रावोयलेट रेंज नहीं होतीं और धूप विटामिन डी से भरपूर होती है।

* किचन, बाथरूम और बालकनी आदि से पानी के निकास की समुचित व्यवस्था होनी अत्यंत आवश्यक है।

* बाथरूम में एंटी स्किड टाइल लगी हों ताकि पैर आदि के स्लिप होने का डर न रहे।

* ऐसी लोकेशन पर घर लें जहां या तो सोसायटी में ही रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता हो अथवा बाजार आप के घर के पास हो।

2 वर्ष पहले मेरी सहेली नीमा ने बड़े अरमानों से अपनी सारी जमा पूंजी लगा कर अपने सपनों का आशियाना बनवाया, घर में एक एक चीज उसने कई माह तक बाजार में घूमघूम कर, चुनचुन कर लगवाई। धूमधाम से गृहप्रवेश कर के खुशी खुशी परिवार सहित घर में रहने आ गई।

अभी एक माह ही हुआ था कि उसे चिकनगुनिया ने आ घेरा। वह अभी पूरी तरह ठीक भी नहीं हो पाई कि उसकी सास के बाथरूम में फिसल कर गिर जाने से पैर में प्रैक्चर हो गया। इसी प्रकार कुछ अन्य छोटी मोटी समस्याएं तकरीबन एक साल तक चलती ही रहीं।

एक दिन उस के पति के एक मित्र मिलने आए। वे बोले, 'इस घर का नक्शा वास्तु के हिसाब से अनुचित है, इसीलिए इस घर में आने के बाद से ही आप लोग समस्याओं से घिरे हैं। बेहतर है कि आप इसे वास्तु के हिसाब से बनवा लीजिए, सारी समस्याओं का अंत हो जाएगा।'

सहेली के परिवार के मन में यह बात इतने गहरे तक घर कर गई कि 2 माह के अंदर ही उसने घर खाली कर के किराए पर चढ़ा दिया और अपने पुराने घर में रहने चली गई।

रमेश ने अपनी समस्त जमा पूंजी से एक फ्लैट खरीदा। घर में वृद्ध मातापिता थे, सो हारीबीमारी लगी ही रहती। एक दिन उनके एक वास्तुशास्त्री मित्र आए और बोले, 'यार, इस घर में वास्तुदोष है। परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए और भोजन प्रदान करने वाला अन्नपूर्ण किचन गलत स्थान पर बना हुआ है। तू किचन को कमरा और कमरे को किचन में परिवर्तित करेगा तो वह दोष समाप्त हो जाएगा, वरना तेरे घर में कोई न कोई बीमार ही रहेगा और आर्थिक संकट भी रहेगा।

रमेश व उनकी पत्नी को उन की बात समझ आ गई और अगले दिन से ही कमरे को किचन में तबदील करने का काम प्रारंभ कर दिया गया। चूंकि कमरे में नाली की कोई व्यवस्था न थी, सो कमरे के बीच में टाइल्स के नीचे से एक पतली सी नाली बना दी गई ताकि रसोईघर में स्थित सिंक का पानी बाहर निकल सकें।

किचन से कमरे के इस आमूलचूल परिवर्तन के बाद रमेश आश्वस्त थे कि अब घर में बीमारी का नामोनिशान नहीं रहेगा और उनका व्यवसाय भी फलेगा। पर एक दिन उस नवनिर्मित नाली में कचरा अटक जाने से सिंक ओवरफ्लो हो गया तथा सिंक का पानी फर्श पर आ गिरा।

रमेश की पत्नी का पैर फिसला और वे चारों खाने चित हो गई। रीढ़ की हड्डी में फ्रैक्चर हो जाने से 3 माह

बिस्तर पर रहीं। पत्नी की बीमारी के कारण व्यवसाय में पर्याप्त ध्यान न दे पाने से उधर भी घाटा होने लगा। अब रमेश हैरत में थे कि घर में वास्तुदोष समाप्त हो जाने के बाद भी आर्थिक और शारीरिक कष्ट क्यों हुआ?

आजकल वास्तुशास्त्र का चलन बहुत जोरों पर है। घर खरीदने से पूर्व उस के मुख्यद्वार, बैडरूम, किचन और बाथरूम की दिशा आदि को वास्तुशास्त्री द्वारा दिखाए जाने का प्रचलन बहुत अधिक बढ़ गया है। गृहप्रवेश के समय वास्तुपूजा को भी आवश्यक माना जाता है।

एक राजपत्रित अधिकारी संजय घर में प्रवेश के समय वास्तु पूजा कराना अत्यंत आवश्यक मानते हैं। उनके अनुसार, वास्तुपूजा करा लेने से घर में निहित समस्त दोष समाप्त हो जाते हैं और घर में सदा सुखशांति व खुशहाली रहती है।

विज्ञान की दृष्टि में वास्तु

पेश से सिविल इंजीनियर एस. के. भटनागर कहते हैं, '**वास्तु' का सीधा तात्पर्य घर में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, पानी की समुचित निकासी और ताजी हवा के आवागमन से है और इसके वैज्ञानिक कारण भी हैं क्योंकि यह सर्वविदित है कि प्रत्येक बीमारी के कीटाणु अंधेरे और सीलनभरे वातावरण में ही जन्म लेते हैं। जब घर में बीमारी होगी तो आर्थिक प्रगति तो असंभव ही है। इसके विपरीत जब हवा, प्रकाश के आवागमन व पानी के निकास की समुचित व्यवस्था होगी तो बीमारियां जन्म ही नहीं लेंगी। सो, परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ और प्रस्न्न रहेंगे। ऐसे में आर्थिक उन्नति भी होगी ही।'**

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए इंजीनियर भटनागर कहते हैं, 'वर्तनमान समय में इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण में अंधविश्वास का प्रवेश हो जाने से जनमानस में वहम व्याप्त हो गया है जिससे कोई बार लोग अपने अच्छे खासे घर में ही आमूलचूल परिवर्तन करा देते हैं जो सर्वथा अनुचित है।'

केवल मन का वहम है वास्तु

भोपाल के आर्किटैक्ट और 10 वर्षों से इंजीनियर डैकोरेशन का काम कर रहे आशीष मालवीय वास्तु को कोरा इंसानी वहम बताते हैं। वे कहते हैं, '**प्रकाश, ताजी हवा और खुलेपन के सीधेसादे फंडे में अंधविश्वास और वहम का तड़का लगा कर कुछ लोगों ने इसे अपनी मोटी कमाई का जरिया बना लिया है। आजकल के पंडे और ज्योतिषी मानवीय कमजोरियों का लाभ उठा कर उसके जीवन की समस्त समस्याओं को वास्तु से जोड़ कर मन में वहम उत्पन्न कर देते हैं और फिर विभिन्न उपायों द्वारा उस दोष को समाप्त करने का झांसा देकर खासी रकम वसूलते हैं।' आश्चर्य इस बात का है कि वास्तु के इस फेर में समाज का पूर्ण शिक्षित उच्चवर्ग फंसा हुआ है।**

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए आशीष कहते हैं, **'समाज के खासे रसूख और पैसे वाले लगभग 50 प्रतिशत लोग वास्तु की गिरफ्त में हैं। उनके मनमस्तिष्क में तथाकथित वास्तु ने इतनी गहरी पैठ बना ली है कि वे अपने ज्योतिषी या पंडित की सलाह के अनुसार घर के पूरे नक्शे को ही परिवर्तित करा देते हैं, फिर चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही पैसा क्यों न खर्च करना पड़े।'**

वास्तु की सच्चाई भी यही है कि पंडितों और ज्योतिषियों द्वारा आम आदमी के मन में वास्तु का वहम अतनी गहराई से भर दिया गया है कि लोग घर में छोटे-छोटे आवश्यक कार्य भी वास्तु के अनुसार कराना चाहते हैं। अपने घर में इंटीरियर का काम करा रहीं महिला चिकित्सक मेघा गर्मी में ग्रीन नैट या दीवाली पर झालर लगाने के लिए परमानैंट हुक या रौड लगवाना वास्तु के अनुसार नहीं मानतीं।

अपने तर्क को सही सिद्ध करते हुए वे कहती हैं, **'वास्तु के अनुसार घर में हुक या कीलें परमानैंट लगाने से घर की सुखशांति नष्ट हो जाती है, इसलिए इसके लिए कोई टैंपरैरी इंतजाम करना ही उपयुक्त रहेगा।'**

आश्चर्य इस बात का है कि आम जनमानस पंडितों को ईश्वर का दूत मान कर उनके द्वारा कराई गई शांतिपूजा पर विश्वास कर के घर में प्रवेश करना उचित समझता है, जबकि पंडित जी का उद्देश्य मनुष्य के मन में वहम उत्पन्न कर के सिर्फ अपनी कमाई करना होता है।

वर्मा जी के नवनिर्मित घर का अवलोकन कर एक पंडित जी ने सलाह दी, 'आप का पुरा घर तो वास्तु के अनुसार बना है परंतु हौल के दाहिने कोने में दोष है जिससे घर के मुखिया के जीवन को हानि है। मेरे पास इसका उपाय है, मैं पूजा से उस कोने को दोषमुक्त कर दूंगा।'

वास्तु के नाम पर लंबी-लंबी पूजाएं करा कर जनमानस को दिग्भ्रमित करने के अनेक उदाहरण हमें अपने आस-पास देखने को मिल जाएंगे जहां पर घर को दोषयुक्त बता कर पंडित उसे दोषमुक्त कराने का दावा करते हैं और

जिसके लिए वे यजमान से खासी रकम वसूल कर अपनी जेबें भरते हैं।

सैनिक स्कूल से बतौर प्रिंसीपल रिटायर हुए कर्नल आर.के. सिंह आज के तथाकथित वास्तु पर कड़ी टिप्पणी करते हुए कहते हैं, **'कुछ दशकों पूर्व तक जमीन की कमी नहीं थी, जिससे इंसान मनचाहा घर बना लेते था परंतु आज जमीन की कमी के चलते फ्लैट कल्चर का चलन है जहां बिल्डर एक साथ सैकड़ों हज़ारों की संख्या में घर बनाता है तो एक ही दिशा में घर बन पाना असंभव है।'**

'दोष घरों में नहीं, बल्कि इंसान की मानसिकता में है जो अपने जैसे ही पंडित रूपी आम आदमी से पूजा करा कर घर के दोष को समाप्त करवाने में विश्वास करते हैं और अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई को खुशी-खुशी उनके चरणों में अर्पित कर देते हैं।'

क्या है आवश्यक

वास्तव में घर की सुखशांति और खुशहाली के लिए किसी वास्तु पंडित, पूजा अथवा ज्योतिषि की नहीं, बल्कि घर के सदस्यों के परस्पर सहयोग व समझदारी की आवश्यकता होती है और इसे बनाए रखने के लिए घर के प्रत्येक सदस्य को मेहनत करनी होती है।

रजनी ने अपने घर में कोई वास्तु और नक्षत्र पूजा नहीं करवाई और आज घर में रहते हुए 5 वर्ष हो गए हैं। वे कहती हैं, **'इस घर में आने के बाद हमें कभी कोई परेशानी नहीं हुई बल्कि प्रत्येक कार्य उसी तरह हुआ जैसे हम चाहते थे। हां, हम दोनों पति-पत्नी की ट्यूनिंग बहुत अच्छी है, जिससे समस्याएं उत्पन्न होने से पूर्व ही हल हो जाया करती हैं। आखिर हमारी अपनी समस्याओं को कोई दूसरा कैसे हल कर सकता है।'**

कर्नल सिंह भी कुछ ऐसे ही विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं, **'घर में रोशनी और हवा का पर्याप्त आवागमन जरूरी है। शारीरिक, पारिवारिक और आर्थिक परेशानियां तो जीवन की समामान्य प्रक्रिया है, उससे घर का कोई लेना-देना नहीं होता और न ही मन में कोई इस प्रकार के वहम को कोई जगह देनी चाहिए।'**

वास्तव में वास्तु मन का कोरा वहम और अंधविश्वास है जिसका तर्क से कोई लेना-देना नहीं है। आज आवश्यकता है पंडितों के इस फैलाए जाल से बाहर निकल कर तर्क से विचार करने की कि क्या वास्तव में तथाकथित पंडितों के पास घर में सुखशांति लाने की कोई जादू की छड़ी है। जबकि सच्चाई यही है कि सहनशीलता, परस्पर सम्मान, बच्चों को अच्छे संस्कार देने की जादू की छड़ी हमारे अपने हाथ में है जिस का उपयोग कर के हम अपने जीवन की समस्त समसायाओं का निदान कर सकते हैं।

स्रोत : सरिता (फरवरी 2022) (प्रथम)

रुक जाती है मेरी कलम

रुक जाती है मेरी कलम लिखते-लिखते
इंसानियत को जब कत्ल होते देखता हूँ
धर्म जब दंगो की शकल ले लेता है
रूक जाती है मेरी कलम लिखते-लिखते
जंग
दुनिया के लिए जब मनोरंजन बन जाए
बेघर हुए लोगों की आवाजें
बच्चों की चीखें
मीडिया द्वारा जंग के शोर में दफन कर दी जाएं
रूक जाती है मेरी कलम लिखते-लिखते
सब का पेट भरने वाला किसान
अपने बच्चों की भूख न मिटा पाए
किसी औरत की आबरू
दुनिया के लिए जब खिलौना बन जाए
रूक जाती है मेरी कलम लिखते-लिखते
भूख हज़ारों लोगों की
मौत का जब कारण बन जाए
फिर भी यह खबर
देश के लिए खबर न बन पाए
रूक जाती है मेरी कलम लिखते-लिखते।

-वतन

धर्म मूढ़ता है और यह मानव के विकास क्रम में एक सोपान की तरह आता है।

- ऑगस्ट कॉम्टे

हिजाब विवाद

प्रदीप

हिज़ाब मुस्लिम महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक कपड़ा है जिससे वे अपना पूरा सिर और मुंह ढक लेती हैं। भारत में ऐसे बहुत से परिवार हैं जहां संकीर्णता इतनी नहीं बची कि पुरुष अपने घरों की महिलाओं को सिर से पांव तक बुर्के से ढक कर रखें लेकिन इतनी भी खत्म नहीं हुई कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर रखकर सोचना शुरू कर दें, वहां हिज़ाब एक बीच के रास्ते की तरह है। कुछ-कुछ वैसा जैसे उत्तर भारत के हिंदू समाज में औरतें बड़े बुजुर्गों के सामने आने पर अपनी चुनरी से सिर ढक लेती हैं। कुछ समय पहले तक उनसे घूंघट करने की उम्मीद की जाती थी। ग्रामीण समाज में अभी भी घूंघट करना ज़रूरी समझा जाता है। लेकिन शहरी क्षेत्रों में सिर को चुनरी से ढक लिया जाता है-बीच के रास्ते की तरह। सिर को चुनरी से ढकना नारीवादी दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता, न ही हिज़ाब को। लेकिन यह भी सच है कि समाज में जो चीज़ें गहराई के साथ पैठ बनाए होती हैं, उन्हें बदलने में वक्त लगता है। जिस प्रकार शहरी क्षेत्रों में महिलाओं खासकर युवाओं में सूट और चुनरी का स्थान जींस ने ले लिया है और घूंघट संस्कृति निश्चित रूप से खत्म होने की ओर है, लव मैरिज धीरे-धीरे स्वीकार्य होने लगी है; ठीक ऐसा ही रहन-सहन, खानपान और पहनने के सभी सामंती तौर-तरीकों के साथ भी है।

भारतीय मुस्लिम समाज हिंदू समाज की तुलना में अधिक संकीर्ण है जिसके सुस्पष्ट ऐतिहासिक-सामाजिक कारण हैं। यह बात इसलिए लिखनी ज़रूरी है क्योंकि मौजूदा समय में देश में बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो यह सोचते हैं कि मुस्लिम अपने धर्म की वजह से ज्यादा कट्टर और संकीर्ण होते हैं। लेकिन यह सच नहीं है। इराक, किर्गीस्तान, कज़ाकिस्तान, तुर्की व लेबनान जैसे देशों में पहनने, खाने के मामलों में या महिला आज़ादी से जुड़ी वर्जनाएं बहुत पहले तोड़ दी गईं थीं। यहां तक कि अफगानिस्तान में भी 70 के दशक में मुस्लिम महिलाएं आमतौर पर बुर्के में नहीं, बल्कि पश्चिमी परिधानों में नज़र आती थीं। खैर, हम बात भारत की कर रहे हैं। यहां बुर्का पहनने को लेकर संकीर्णता उतनी अधिक कभी भी नहीं रही, जितनी कुछ कट्टर मुस्लिम देशों में दिखाई पड़ती है। लेकिन उन्होंने कभी उतनी आज़ादी भी महसूस नहीं की, जितनी अन्य धर्मों की महिलाओं को पहरावे में है।

किसी समाज के सांस्कृतिक रीति रिवाज़ उसके खानपान, पहरावे, त्यौहारों, जन्म-मृत्यु के समय किए जाने वाले कर्मकाण्डों के समय नज़र आते हैं। बहुत बार इनका धर्म से कोई लेना-देना नहीं होता।'हमारे यहां तो ऐसे होता है', कहकर कर्मकाण्ड परिवारों में चलते रहते हैं। विवाहित महिलाएं ससुराल में बहुत से ऐसे कर्मकाण्ड अपनी सास से पूछकर करती हैं और अधिकांश मामलों में उसने अपने मायके में यह सब नहीं देखा होता, क्योंकि मायके में कुछ दूसरी किस्म की परंपराओं का निर्वाह किया जा रहा होता है। अब देखा जाए तो दोनों परिवार एक ही धर्म से होते हैं, एक ही एरिया से भी हो सकते हैं, पर फिर भी रीति-रिवाज़ अलग-अलग होते हैं। इसमें खास बात यह है कि प्रत्येक परिवार को अपने रीति-रिवाज़ बहुत प्रिय होते हैं, उनके साथ एक गहरा भावनात्मक रिश्ता जुड़ा होता है और उन्हें बदलने या तोड़ने के लिए वह तैयार नहीं होता। अगर बहू उन रीति-रिवाज़ों का निर्वाह नहीं करती तो इसे बहुत बुरा माना जाता है। यह सच है कि धर्म या नैतिकता की दृष्टि से इन रीति-रिवाज़ों का महत्त्व बहुत गौण होता है लेकिन उस परिवार के दृष्टिकोण से पीढ़ियों से चले आ रहे इन रीति-रिवाज़ों की अवहेलना किसी अनिष्ट की आशंका को जन्म देती है। भावनात्मक जुड़ाव के चलते भी परिवार आसानी से इनको नहीं छोड़ पाते। उस परिवार या समाज के लिए ये अस्मिता का सवाल बन जाते हैं।

असल में संस्कृति (रीति-रिवाज़ों) के संदर्भ में सच बात यह है कि समाज या परिवार से इनका संबंध रक्त और मांस जैसा होता है। अगर जबरदस्ती किसी को इनसे तोड़ने की कोशिश की जाती है तो संबंधित व्यक्ति या समाज उत्पीड़ित जैसा महसूस करते हैं। जोर-ज़बरदस्ती पुराने रीति-रिवाज़ों में नई जान फूंकने का काम करती है। समाज और मजबूती के साथ इनसे जुड़ने की कोशिश करता है। अगर इन्हें नजरअंदाज़ किया जाए तो समय के साथ इनमें बदलाव आते रहते हैं। पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाज़ों का स्थान नई परंपराएं और नए रीति-रिवाज़ ले लेते हैं।

कुछ उदाहरण देखते हैं। समाज हमेशा से ही अंतर्जातीय

या अंतरधार्मिक विवाह का विरोधी रहा है। सम्मान के लिए हत्याएं हमारे समाज की कड़वी सच्चाई हैं। लेकिन मौत का डर भी युवाओं को प्यार करने से नहीं रोक सका। अंतर्जातीय विवाह पहले से भी ज्यादा संख्या में हो रहे हैं। इस तरह के सैंकड़ों उदाहरण हैं। लड़कियों की जींस महानगरों से शुरू होकर छोटे शहरों से होते हुए गांवों में पहुंच रही है। घूंघट ग्रामीण समाज तक सीमित हो गया है। सामंती सोच के चलते जींस का विरोध या घूंघट का समर्थन न जींस को रोक पाया और न घूंघट को।

इतिहास में बहुत तानाशाहों ने जनता के खान-पान, पहरावे या रीति-रिवाजों को नियमित करने के प्रयास किए हैं। लेकिन हर बार उन्होंने मुंह की खाई है। वैलेंटाइन डे ऐसे ही एक तानाशाह द्वारा प्यार शादी को नियंत्रित करने के कुप्रयासों के खिलाफ एक पादरी के विद्रोह की याद में शुरू किया गया था। यह अलग बात है कि आज यह बाज़ार की शक्तियों द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है। हिज़ाब को हमें इसी पृष्ठभूमि में समझना होगा। पूरा समाज हिज़ाब को लेकर दो हिस्सों में बंटा है। कुछ इसके विरोध में हैं, कुछ इसके पक्ष में। हालांकि जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं, वो किसी एक सांझे कारण से विरोध नहीं कर रहे। ऐसा ही जो पक्ष ले रहे हैं, उनका भी एक सांझा कारण नहीं हैं।

कर्नाटक के एक स्कूल से शुरू हुआ यह विवाद पूरे कर्नाटक में फैल गया। फिर पूरे देश में बहस का मुद्दा बन गया। बजरंग दल या विभिन्न हिंदुत्ववादी संगठनों द्वारा हिज़ाब का विरोध कोई महिला विरोधी रीति-रिवाज़ों की खिलाफत करना नहीं है। वे समाज से हर प्रकार के ऐसे प्रतीकों को खत्म करने की ओर आमादा हैं और हर उस प्रतीक के प्रति अपमानजनक रवैया अपना रहे हैं जो किसी भी रूप में मुस्लिम समाज से जुड़े हुए हैं। कुछ प्रगतिशील लोग हिज़ाब का विरोध कर रहे हैं क्योंकि यह औरत के सामंती शोषण के प्रतीकों में से एक है। कुछ छद्म प्रगतिशील या उदारवादी लोग हिज़ाब का विरोध कर रहे हैं क्योंकि उन्हें लग रहा है कि जब मलाला जैसी महिलाएं अफगानिस्तान में हिज़ाब का विरोध करती हैं तो भारत में क्यों नहीं। ऐसे ही इसके पक्षकारों के कारण भी अलग-अलग हैं। लड़कियां इसके पक्ष में खड़ी हैं क्योंकि कल तक जो लिबास उनके शरीर के एक हिस्से जैसा था, उससे अलग होना उनके लिए बेहद अजीब है। मुस्लिम कट्टरपंथी इसके पक्ष में खड़े हैं क्योंकि वे औरतों को उसी सामंती गुलामी की ओर वापिस ले जाना चाहते हैं जहां से वे बहुत संघर्ष करते हुए आगे बढ़ी हैं।

ऐसे में सही दृष्टिकोण क्या हो?

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, सांस्कृतिक मसलों, रीति-रिवाजों, पहरावे और खान-पान को नियंत्रित करने की कोशिशें गलत हैं। इन मामलों में किसी भी प्रकार की ज़ोर-जबरदस्ती सहन नहीं की जा सकती। अगर कोई किसी मुस्लिम महिला को जबरदस्ती हिज़ाब पहनाना चाहता है तो वह भी उतना ही बुरा है जितना बुरा उस महिला के सिर से जबर्दस्ती हिज़ाब उतारना। अफगानिस्तान में हिज़ाब और बुर्का पहनाने के लिए जबरदस्ती की जा रही है इसलिए वह गलत है, अलोकतांत्रिक है और हर स्तर पर उसका विरोध किया जाना चाहिए और किया भी जा रहा है। लेकिन औरत की स्वतंत्रता के नाम पर जबरदस्ती हिज़ाब उतरवाना भी उतना ही गलत है, लेकिन इस पर समाज बंटा हुआ दिखाई देता है।

निश्चित तौर पर आधुनिक समाज में हिज़ाब का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। लेकिन यह मुस्लिम महिलाओं की सहमति से होगा और ऐसा हो भी रहा था। मुस्लिम लड़की को अपने परिवेश से बाहर जाकर पढ़ाई करने या नौकरी करने के लिए हो सकता है, आज हिज़ाब की ज़रूरत हो और बिना हिज़ाब के उसके लिए घर से निकलने के रास्ते ही बंद हो जाएं। लेकिन एक बार आत्मनिर्भर होकर, अपने समाज और अपने बारे में सही समझ हासिल कर वह इस लायक अवश्य हो सकती है कि हिज़ाब को उतार फेंके। ऐसा बहुत सी मुस्लिम महिलाओं ने किया भी है। कॉरपोरेट जगत, मीडिया, इंजीनियरिंग, मेडिकल साइंस के क्षेत्र में कितनी ही मुस्लिम महिलाएं देखी जा सकती हैं, जो हिज़ाब नहीं पहनतीं।

इसलिए वर्तमान विवाद में न केवल हिंदुत्ववादी संगठनों के गलत मंसूबों का विरोध किया जाना चाहिए बल्कि हमारा ध्यान इस प्रकार के ग़ैरजरूरी मुद्दों की बजाय महिलाओं को कैसे ज्यादा से ज्यादा शिक्षित किया जाए, उन्हें रोजगार के अवसर कैसे मुहैया करवाए जाएं, इन बातों पर केंद्रित होना चाहिए। (स्रोत: 'अभियान' मार्च 2022)

प्रारंभ से ही धर्म बलि की प्रक्रिया रही है, जिसने हमारे विश्वास, विवेक, विचार सब की बलि ली है।

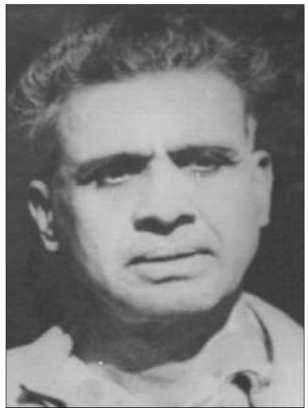
– नीत्शे

क्रांतिकारी राज कुमार सिन्हा



सुधीर विद्यार्थी

कानपुर के माल रोड पर 'मार्कंडेय भवन' की इमारत को खोजना अब कठिन कवायद है। वे निशानात भी पूरी तरह धुंधला गए हैं, जिनके जरिये जाना जा सके कि बाबू मार्कंडेय दास के उस मकान का क्या हुआ, जिसमें उनकी पत्नी शरत कुमारी सिन्हा अपने विप्लवी हौसले से दोनों बेटों को मुक्ति-संग्राम का बड़ा योद्धा बना सकीं। कानपुर इस वीर मां को भी विस्मृत कर चुका है और उन बेटों को भी, जिन्होंने अपने रक्त से क्रांति की इबारत लिखकर इस शहर को इतिहास में जगह दी। इस मां के बेटे राजकुमार सिन्हा को काकोरी मामले में दस साल की सजा हुई थी और छोटे विजय कुमार सिन्हा को भी भगत सिंह वाले मुकदमे में काला पानी का हुक्म सुनाया जा चुका था। दोनों भाई अपनी-अपनी जेलों में भूख हड़ताल पर थे। यह जानकर एक युवा शिवकुमार मिश्र इस मां के पास पहुंचकर रोने लगे। मां ने डांटते हुए कहा, 'कैसा क्रांतिकारी है, जो रोता है? मेरी ओर देख। मैं दो बाघों की मां हूं। मेरे बेटे जेल में अनशन पर हैं। फिर भी मैं खुश हूं।' कभी देश के विप्लवियों का केंद्र और आश्रयस्थल रहे इस घर की, जो अब दफन हो चुका है, मिट्टी को स्पर्श करना मेरी ख्वाहिश था।



क्रांतिकारी राज कुमार सिन्हा



कलक्ते में क्रांतिकारी राज कुमार सिन्हा और प्रकिरती सिन्हा के विवाह समय नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

राजू दा की बहन सुशीला घोष की क्रांतिकारी संग्राम में भागीदारी को भी आज कौन जानता है। लाहौर केस की फांसियों के बाद 'भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव मेमोरियल फंड में आर्थिक श्रद्धांजलि दीजिए' शीर्षक से सुशीला जी ने देशवासियों के नाम एक मार्मिक अपील निकाली थी, जिसमें उनका पता एमडी सिन्हा भवन, माल रोड, कानपुर छपा था। बाद में जब राजकुमार और उनके तीन साथी बरेली के केंद्रीय कारागार में अनशन पर थे, तब इस बहन का जीवट फिर देखने को मिला था। चार-पांच वर्ष पूर्व मेरे पास अमेरिका से राजू दा की पुत्री का फोन आया। फिर बर्लिन से प्रदीप घोष ने, जो सुशीला घोष के बेटे हैं, ई-मेल के जरिये संपर्क किया। मैंने उन्हें बरेली और आगरा की केंद्रीय जेलों में राजकुमार सिन्हा के नाम पर बनवाए गए स्मृति-द्वारों के चित्र भेज दिए, पर 'मार्कंडेय दास भवन' का जमींदोज होना हमें प्रतिपल पीड़ा देता है। कोई शहर इस कदर बदलते जाने को अभिशप्त क्यों है कि अपने इतिहास के निशानों को ही मिटता देखता रह जाए।

राजू और विजय दा की प्रारम्भिक शिक्षा कानपुर के बंगाली स्कूल और क्राइस्ट चर्च कॉलेज में हुई। बाद में राजू दा विज्ञान की पढ़ाई के लिए काशी गए, तो किताबों के साथ क्रांतिकारियों का भी साथ मिला। उन्होंने दिल्ली की कांग्रेस में हिस्सेदारी की। उन्होंने एक निबंध लिखा, 'राष्ट्रीय आंदोलन और छात्रों का कर्तव्य', जिसे छात्र परिषद के एक अधिवेशन में पढ़े जाने के बाद अदालत में पेश किए जाने पर राजद्रोहात्मक बताया गया। यही वह बुनियाद थी, जो फिर दरकी नहीं। काकोरी केस से उनको जोड़े जाने का आधार बनारस में उनके कमरे से बरामद चीजों को बनाया गया, जिनमें दो रायफलें, दारोगा का झब्बा और

पगड़ी थी। पुलिस ने साबित करने का प्रयास किया कि इनमें से एक रायफल का इस्तेमाल मैनपुरी मामले में किया गया था। गिरफ्तारी के बाद कानपुर और लखनऊ जेल में उन्हें रखा गया तथा उन पर दबाव डाला गया कि अपना कबूलनामा पेश कर दें, पर राजू दा झुके नहीं। तभी उन्हें अपने पिता के निधन का समाचार मिला। जेल जीवन में उन्होंने रूसी, चीनी और जर्मन भाषाएं सीख लीं। बाहर आकर भी मजदूर आंदोलन और कांग्रेस में उनकी सक्रियता निरंतर बनी रही और व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी उन्होंने भाग लिया। फिर नेता जी सुभाष से प्रभावित हो वह 'फारवर्ड ब्लॉक' में चले गए। नेता जी जब कानपुर आए, तब राजू दा के कराचीखाना वाले मकान पर उनकी वीर मां शरत कुमारी सिन्हा के प्रति आदर व्यक्त करने पहुंचे थे। तब राजू दा और विजय दा जेलों में थे।



बरेली केंद्री जेल में क्रांतिकारी राज कुमार सिन्हा गेट



आगरा केंद्री जेल में क्रांतिकारी राज कुमार सिन्हा गेट

वर्ष 1937 में रिहाई के बाद एक बंगाली युवती प्रकृति से राजू दा का विवाह हुआ। नेता जी सुभाष कलकत्ता के उस आयोजन में उपस्थित थे। मेरे पास यही एक यादनामा बचा है, जिसे मैं सीने से चिपकाए बैठा हूं। बयालीस में पकड़े जाने पर वह चार साल नजरबंद रहे। आजादी के बाद भी राजू दा संग्रामी बने रहे। मैं बार-बार किसी बुजुर्ग कानपुरिये से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या उनकी आंखों में कराचीखाना के आसपास अपनी साइकिल पर हर रोज़ आते-जाते हुए राजू दा की कोई छवि है। मैं राजू दा का लिखा हुआ भी तलाश रहा हूं, जिनके कुछ अंश 1937 में 'सैनिक' में छपे थे। रूस, चीन आदि कम्युनिस्ट देशों के प्रशंसक रहे राजू दा गरीब और शोषित जनता के आजीवन पक्षधर बने रहे और उन्होंने 'वारान्निकोव रूसी प्रशिक्षण मंदिर' की स्थापना भी की। वह एक सुमधुर गायक भी थे।

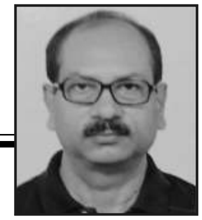
18 दिसंबर, 1972 को राजू दा के निधन के बाद उनकी पत्नी को सेन बालिका विद्यालय, कानपुर की पूर्व अध्यापिका होने के आधार पर 300 रुपये पेंशन से गुजर-बसर करनी पड़ी। मुझे नहीं पता कि प्रकृति कब तक जीवित रही। सुना कि उनकी आंखों के सामने ही पुत्र भास्कर सिन्हा मात्र 52 की उम्र में चल बसे थे। आजादी के बाद राजू दा की जिंदगी का पच्चीस साल का लेखा-जोखा हमें बहुत विचलित करता है। वह कभी डीएवी कॉलेज, आईआईटी, डिफेंस लेब, तो किसी समय डीआरएलएम में क्लास लेने हर मौसम में साइकिल से आते-जाते रहे और 67 की उम्र में एक दिन हमें अलविदा कह दिया। कानपुर अपने इस आजीवन विप्लवी के सम्मान में एक 'जयगान' नहीं रच सका। उनके नाम का कोई पत्थर तक शहर के किसी इलाके में नहीं है।

97608 75491

नैतिकता धर्म से मुक्त रहे, यही अच्छा है।
- डेविड ह्यूम

टेकफॉग : नफरत का ऑटोमेटिड टूलकिट

मुकेश असीम



टेकफॉग बीजेपी आईटी सेल द्वारा प्रयोग किया जाने वाला वह एप है जिसके द्वारा वह मिनटों-घंटों में स्वचालित तरीके से सोशल मीडिया के टविटर, फेसबुक, व्हटसप्प, शेयरचैट, आदि प्लाटफ़ार्मों के जरिए अपने प्रचार, विरोधियों पर हमले और नफरती दुष्प्रचार का ऐसा तूफान छेड़ती है जिससे ऐसा लगता है जैसे उसके पक्ष में लाखों लोग सोशल मीडिया पर लिख रहे हों और विरोधियों की आवाज उस तूफान में दब कर रह जाए। अप्रैल 2020 में नौकरी का वादा पूरा न होने पर बीजेपी आईटी सेल की एक पूर्व सदस्य आरती शर्मा ने एक ट्वीट में इस एप का नाम जाहिर कर दिया गया था। इसके बाद दो पत्रकारों द्वारा लंबी जांच पड़ताल की रिपोर्ट 'द वायर' ने 3 किश्तों में प्रकाशित की है, जिसके मुख्य बिन्दु निम्न हैं :-

1. यह एप विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ार्म पर खुद बड़ी संख्या में अकाऊंट बना सकता है जिनके जरिए एक ही व्यक्ति इन प्लेटफ़ार्म के बैलिडेशन्स को बाइपास कर उन पर मनचाहे पोस्ट/मेसेज आदि कर सकता है। इससे लगेगा कि बहुत सारे लोग वही बात कर रहे हैं। इस जरिए हज़ारों-लाखों मेसेज के जरिए सोशल मीडिया पर मनचाहे ट्रेंड्स को कुछ ही देर में शीर्ष पर लाया जा सकता है।

2. इसके जरिए बीजेपी आईटी सेल के लोग दूसरों के निष्क्रिय व्हाट्सप्प अकाउंट में सेंध लगा कर उसके कॉन्टैक्ट्स को मनचाहे संदेश भेज सकते हैं जिससे लगेगा कि वह व्यक्ति खुद ऐसे संदेश भेज रहा है। बहुत सारे व्वाहट्सप्प ग्रुप का प्रबंधन भी इसके जरिए मुमकिन है।

3. बीजेपी का विरोध करने वाले मुखर पत्रकारों/बुद्धिजीवियों/कलाकारों बगैरह को निशाना बनाने के लिए एप में एक्सेल शीट को जोड़कर उन्हें स्वचालित ढंग से भारी संख्या में गालियां, अपशब्द, धमकियाँ आदि भेजे जा सकते हैं, उनके पोस्ट/ट्वीट आदि के मनचाहे जवाब भेजे जा सकते हैं और उनकी बातों पर कुतर्क भरे सवाल किये जा सकते हैं। इसके जरिए सरकार व बीजेपी पर प्रश्न उठाने वाली कुछ प्रमुख महिलायों को पत्रकारों को खास तौर पर निशाना बनाया गया और उन्हें लाखों ट्वीट के जरिए रंडी, वेश्या, देशद्रोही, आदि से लेकर बहुत कुछ कहा गया, उन्हें व उनके परिवारों को हत्या व बलात्कार जैसी धमकियाँ दी गईं।

4. सोशल मीडिया में यह खोजकर कि कौन सरकार पर सवाल उठा रहा है, उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियाँ स्वचालित ढंग से की जा सकती हैं।

5. पहले तबलीगी जमात के खिलाफ और फिर सीएए आंदोलन के वक्त दिल्ली में हिंसा फैलाने के लिए इस एप का प्रयोग किया गया।

6. इस काम के लिए शेयरचैट जैसे और भी कई आईटी टूल्स का सहारा लिया जाता है इसके जरिए पहले क्या फैलाना है वह तय कर लिया जाता है फिर टेकफॉग के जरिए उसे बड़े पैमाने पर फैलाया जाता है। अर्थात् टेक फ़ॉग बीजेपी दुष्प्रचार और नफरती अभियान का टूलकिट है।

स्रोत : 'यथार्थ' जनवरी, 2022

हिंदू राष्ट्र संविधान

प्रयागराज से भारत को 'हिंदू राष्ट्र' बनाने की संकल्पना साकार करने की दिशा में 'संतों' ने काम शुरू कर दिया है। हिंदू राष्ट्र का अपना संविधान होगा, जिसे 'हिंदू राष्ट्र संविधान' नाम दिया जाएगा। अखिल भारतीय विद्वत परिषद के महामंत्री डा. कामेश्वर उपाध्याय संविधान निर्माण के संयोजक बनाए गए हैं। इनके अंतर्गत कानून के जानकार, शास्त्र मर्मज्ञ व सुरक्षा विशेषज्ञों की तीन समितियां बनेंगी। हर समिति में कम से कम 25 लोग शामिल होंगे। इसमें सिख, बौद्ध, जैन सहित, 127 पंथों के प्रतिनिधि सम्मलित होंगे। श्रावण मास तक 'हिंदू राष्ट्र संविधान' का प्रारूप तैयार करने का लक्ष्य है, जबकि 2023 के माघ मेला में धर्म संसद संचालन समिति संत सम्मेलन का आयोजन कर उसमें नए संविधान को संतों व श्रद्धालुओं के समक्ष प्रस्तुत करेगी। माघ मेला क्षेत्र के ब्रह्मर्षि आश्रम शिविर में 29 जनवरी को धर्म संसद संचालन समिति ने संत सम्मेलन का आयोजित किया था। सम्मेलन में भारत को हिंदू राष्ट्र लिखने व बोलने का प्रस्ताव पारित हुआ था।

धर्म संसद संचालन समिति के संयोजक स्वामी आनंद

स्वरूप ने बताया कि हिंदू राष्ट्र बनाने की दिशा में काम आरंभ है। देश के 543 संसदीय क्षेत्रों में सांसद की जगह धर्म सांसद' का निर्वाचन होगा। हिंदू राष्ट्र के संविधान में धर्म सांसदों के निर्वाचन की न्यूनतम उम्र 25 वर्ष और मतदाताओं की 16 वर्ष होगी। स्वामी आनन्द स्वरूप बताते हैं कि हिंदू राष्ट्र का मंत्रिमंडल चंद्रगुप्त मौर्य की तरह बनाया जाएगा। इसमें सुरक्षा, शिक्षा, राजकीय चिकित्सा आदि नई व्यवस्था होगी। मुस्लिमों को सम्मान व सुरक्षा मिलेगी। लेकिन मतदान का अधिकार नहीं होगा। महामंडलेश्वर अन्नपूर्णा भारती ने कहा कि इस्लामी जिहाद के खिलाफ लड़ाई तेज़ होगी। हमें रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की साजिश रची जा रही है, लेकिन मुहिम रुकेगी नहीं। हिंदू राष्ट्र बनाने व इस्लामी जिहाद खत्म करने को अंतिम सांस तक लड़ेंगे।

धर्म संसद

अनिवार्य होगी गुरुकुल शिक्षा

'हिंदू राष्ट्र संविधान में गीता, श्रीराम चरितमानस, मनु स्मृति सहित समस्त वेद पुराणों के अंश शामिल होंगे। मातृकुल (गुरुकुल) शिक्षा अनिवार्य होगी। इसमें तीन से आठ वर्ष के बालक, बालिकाओं को गुरुकुल शिक्षा ग्रहण करनी होंगी। तभी उन्हें अन्य विद्यालयों में जाने की अनुमति मिलेगी।

स्रोत : दैनिक जागरण, वाराणसी, 11 फरवरी, 2022

(शरद द्विवेदी) (प्रयागराज)

तुम को शहीदो भूले नहीं हम

तुम को शहीदो भूले नहीं हम

भूली नहीं संग्रामी जनता

रक्त-रंजित लाल निशान

भूली नहीं विप्लवी क्षमता

व्यर्थ न होगा रक्त आपका

जलेगा विद्रोही सीने में

तुम को शहीदो भूले नहीं हम

मरना तय था

कुछ मारे गए
जब दंगे हुए
विभाजन के
हिंदू -मुस्लिम के
मंदिर- मस्जिद के
दिल्ली -गुजरात के
कुछ मारे गए
जब महामारियां आई,
अकाल पड़े
हमले हुए, विश्व युद्ध हुए
जंग जीते,जंग हारे
कुछ मारे गए
भूख, गरीबी, बेरोजगारी में
कुछ मारे गए कर्जदारी में
बाकी जो बचे
वे मारे गए
जन-संघर्षों में
जेलों और थानों में
गोली और फांसी में
सदियों से
मरते रहे लोग
लगातार, सिलसिलेवार
इनका मरना तय था
क्योंकि
किसी का जीना भी तय था

-जयपाल

धर्म के कालपनिक स्वपनों से चिपके रहने की बजाये, अपने अनुभव की सीमा में रहते हुए अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेना अच्छा है ।

- लुडविग बुचनर

लघु कथा

प्रेमवती की चिट्ठी

गजेन्द्र रावत

बैरिक में घुसते ही प्रकाश ने बेल्ट कमर से खींचकर खूंटी पर लटका दी। बिस्तर के साथ पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए वह तकिये के नीचे से चिट्ठी निकालकर पढ़ने लगा.... मुन्नी के पापा, हम सब यहाँ ठीक-ठाक हैं। आप वहाँ राजी खुशी होंगे, मैं ऐसी कामना करती हूँ। पूरा साल हो गया है, आप घर नहीं आये... न जाने क्यों डर-चिंता सताती रहती है। पिता जी की खांसी ठीक नहीं हो रही है, रोज डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता है। नुक्कड़ वाले डॉक्टर ने फीस बढ़ाकर तीन चार गुनी कर दी है पर उसके पास जाना भी मजबूरी ही है। मुन्नी बहुत याद करती है। उसे भी छोटे स्कूल में डाल दिया है, अभी फीस भी भरनी है। आप जो रुपये भेजते हो वो सब तो उधारी में ही चले जाते हैं। बन पड़े तो कुछ ज्यादा रूपए भेजना। यहाँ हर चीज़ के दामों में आग लगी हुई है, महीने के आखिर में पाई-पाई को दूसरे का मुँह देखना पड़ता है। बस बाकी फिर। आपको उत्तर की प्रतीक्षा में! आपकी-प्रेमवती।

''दामों....में....आग।'' वह जूते उतारता हुआ बुदबुदाया। फिर आँखें मूँद बिस्तर पर पैर पसार लिये।

उसकी नींद तब खुली जब अपने बिस्तर पर बैठते हुए सिपाही महेंद्र ने सूचना दी-''भाई लोगो! कल भी संसद मार्ग पर ही डयूटी है।''

''क्यों कल क्या है?'' प्रकाश लेटे लेटे बोला।

''होगा कोई प्रदर्शन!''

''क्या नौकरी है!'' वह बड़बड़ाया।

सुबह तैयारियाँ शुरू हो गईं। संसद मार्ग को बैरीकेड से बंद कर दिया गया। हेलमेट, लाठियों से लैस सिपाहियों की दो कतारें बैरीकेड से सटकर तैनात हो गई। दोनों किनारों पर दो-दो सिपाही टियर गैस सेल भरकर खड़े कर दिये गए। सबसे पीछे की पंक्ति हथियारबंद सिपाहियों की थी।

थोड़ी देर में, ए० सी० पी० ने सिपाहियों को संबोधित किया, ''हर वक्त मुस्तैद रहना है, इशारे भर से हरकत में आ जाना है। कोशिश करो वे बैरीकेड तक न पहुँच पाएं। समझे! वे जी-तोड़ कोशिश करेंगे बैरीकेड गिराने की, लेकिन जो हुक्म हो उसे सख्ती से लागू करना है। कानून व्यवस्था हर हाल में बनाये रखनी है....समझे!''

प्रकाश बैरीकेड से सटी पहली पंक्ति में खड़ा था। तैयारी पूरी हो चुकी थी, बस प्रदर्शनकारियों का इंतज़ार था। कुछ ही देर में नारों की गुनगुनाहट सुनाई देने लगी। धीरे-धीरे आवाज स्पष्ट होती गई....इंकलाब जिंदाबाद। पूंजीवाद मुर्दाबाद। महंगाई पर रोक लगाओ।

देखते ही देखते झंडों और बैनरों का सैलाब एकदम आँखों के सामने आ खड़ा हुआ।

अब हाथों में उठाए बैनरों पर लिखी इबारत साफ दिखाई देने लगी-दवाइयों के दाम कम करो। मँहगाई पर रोक लगाओ। शिक्षा मुफ्त करो।

प्रकाश एक-एक बैनर को गौर से पढ़ने लगा। फिर आश्चर्यवश अचानक बोला, ''अरे....यह तो प्रेमवती की चिट्ठी है!''

तभी पीछे से ए० सी० पी० की क़ड़क आवाज़ आई, ''लाठीचार्ज!''

[इस लघु कथा को कथादेश लघुकथा पुरस्कार भी मिला है।]

ले मशालें चल पड़े हैं,
लोग मेरे गाँव के
अब अंधेरा जीत लेंगे
लोग मेरे गाँव के
कह रही है झोपड़ी
और पूछते हैं खेत भी
कब तलक लुटते रहेंगे
लोग मेरे गाँव के
बिन लड़े कुछ भी नहीं मिलता
यह जान कर
अब बन्दूकें बो रहे हैं
लोग मेरे गाँव के

- बल्ली सिंह चीमा

शहीदों को सलाम !

मई दिवस



हेम राज स्टेनो

दुनिया भर में मजदूर वर्ग द्वारा 1 मई के दिन को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। मई दिवस का संदेश क्या है, आज हम इसके बारे बात करने जा रहे हैं।

19वीं शताब्दी की शुरुआत में श्रमिकों से दिन में 14-14, 16-16 घंटे ही नहीं बल्कि 18-20 घंटे काम करवाना आम बात थी। इन स्थितियों को सुधारने के लिए, दुनिया की पहली ट्रेड यूनियन मानी जाने वाली 'मकेनिक्स यूनियन ऑफ फिलाडोल्फिया' ने 1827 में दस घंटे काम करवाने के लिए निर्माण क्षेत्र में लगे मजदूरों से हड़ताल करवाई। 1834 की न्यूयॉर्क की हड़ताल को एक नामी अखबार ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। इसके तुरंत बाद ही विभिन्न क्षेत्रों में काम के घंटे कम करने की मांग ने एक आंदोलन का रूप धारण कर लिया। यह आंदोलन बढ़ता ही गया। ऑस्ट्रेलिया में भी निर्माण उद्योग में लगे मजदूरों ने आठ घण्टे काम आदि... के नारों के तहत संघर्ष किया। 1856 में उनकी यह मांग मानी गई।

1884 में संयुक्त राज्य अमेरिका में आठ घंटे काम के नारे के तहत आंदोलन शुरू हुआ, हड़तालें हुईं। इनमें बड़ी संख्या में मजदूर शामिल हुए। एक मई को चाहे हड़ताल का मुख्य केंद्र शिकागो था परन्तु साथ ही यह हड़ताल अन्य शहरों मे भी हुई। यह हड़ताल बहुत व्यापक थी। हड़ताल की तैयारी के लिये 'आठ घंटे संघ' का गठन बहुत पहले हो गया था। वामपंथी श्रमिक संघों में से एक सेंट्रल लेबर यूनियन (यूनाइटेड फ्रंट) ने इस ऐसोसिएशन को अपना पूरा समर्थन दिया। इस तरह के संघर्षों ने ही मई दिवस को जन्म दिया।

1 मई, 1886 को अमेरिका के शिकागो में संगठित हुए मजदूरों के आह्वान पर शहर के मजदूरों ने अपने औजारों का संचालन बंद कर दिया और उत्पादन ठप हो गया।

इन सभी मजदूर आंदोलनों ने मजदूरों को उनकी वर्गीय एकता की शक्ति का बोध कराया और साथ ही उन्हें यह अहसास भी कराया कि समाज की जीवन शक्ति उनका श्रम ही है। यह सच भी है क्योंकि मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए केवल एक श्रम ही है जो सब कुछ उत्पन्न करता है। तो इस तरह इस संघर्ष ने मजदूर वर्ग के संघर्ष के इतिहास में एक नया अध्याय लिखा और श्रम की मुक्ति की कहानी चलाई।

लेकिन पूंजीपति भी शांत नहीं बैठे थे। उन्होंने इसे कुचलने के लिए अपनी भलाई के लिए बनाए गए प्रशासनिक ढांचे की ओर इशारा किया। प्रशासन ने बड़ी संख्या में मजदूर नेताओं को गिरफ्तार कर लिया, जैसा कि आज कल भी होता है। इतना ही नहीं, मजदूरों की भीड़ पर हिंसक हमले करके मजदूरों का खून बहाया गया।

इसके बाद 'हे मार्केट कांड' के नाम से जानी जाने वाली घटनाएं हुईं जो मई दिवस की हड़ताल का ही परिणाम था। 3 मई को पुलिस ने मजदूरों की एक सभा पर हिंसक हमला कर दिया। इसके विरोध में 4 मई को हे मार्केट स्क्वायर में विरोध प्रदर्शन किया गया। इस विरोध प्रदर्शन पर पुलिस ने हमला किया जिसमें छह श्रमिकों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। हे मार्किट में हमले के दौरान, पूंजीपतियों के समर्थकों ने सभा के बीच में एक बम गिरा दिया। इन झड़पों में चार मजदूरों की मौत हो गई और सात पुलिसकर्मी भी मारे गए। मजदूर नेताओं की गिरफ्तारियां शुरू हो गईं व उन पर मुकदमें चलाये गये। मजदूर नेता पार्सन्स, स्पाइस, फिशर और इंजेल को मौत की सजा सुनाई गई और अन्य संघर्षरत नेताओं को उम्रकैद की सजा सुनाई गई।

मई दिवस दुनिया भर में मनाने की शुरुआत

इन सभी घटनाओं के कारण, कम्युनिस्टों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने 1 मई, 1889 को विश्व श्रम दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। तभी से 1 मई के दिन को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल द्वारा इस तरह का आह्वान किसी खास देश के मज़दूरों के लिए आठ

घंटे की मांग न रहा। यह पूरी दुनिया के मजदूरों को एक वर्ग के तौर पर एकजुट होकर पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के आह्वान के रूप में सामने आया।

मई दिवस का संदेश वर्ग रहित और शोषण रहित समाज का निर्माण करना ठीक क्यों है, इस बारे संक्षेप में बात करते हैं।

मानवीय इतिहास पर नज़र डालें तो हमें पता चलता है कि यहां गुलाम समाज भी मौजूद रहे हैं। दास युग में गुलामों को बोलते औजार (Speaking tools or Talking tools) कहा जाता था और पशुओं को (Mute tools/ Semi Mute tools) कहा जाता था। दासों को तो मनुष्य भी नहीं गिना जाता था। इस बात से ही हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि दासों की जीवन हालत कितनी अमानवीय रही होगी। इन्हीं हालतों में से ही दासों के विद्रोहों ने जन्म लिया। उदाहरण के लिए रोम, जहां सबसे लंबा दास युग होना माना जाता है, में स्पार्टाकस के नेतृत्व में 100000 दासों ने दास मालिकों के विरुद्ध विद्रोह किया। इसी तरह अन्य देशों में भी गुलामों के विद्रोह हुए। पर जहां कहीं भी दासों के विद्रोह हुए, वहां इसका लाभ उठाते हुए दूसरा लुटेरा वर्ग जैसे सामंतवाद सत्ता पर काबिज हो गया। इसी तरह सामंतवाद के विरुद्ध मेहनती लोगों ने संघर्ष किया तो पूंजीवाद ने इसका स्थान ग्रहण करके लूट शुरू कर दी। इतिहास में शोषित वर्ग संघर्ष तो करते रहे पर एक के बाद दूसरा लुटेरा प्रबंध कायम होता रहा। इस कारण लूट रूप बदलती रही पर कायम रही। यह सामाजिक विकास का एक नियम ही है जो इतिहास ने साबित किया। यह नियम यह है कि मानव इस समाज को बदल तो सकता है पर यह नहीं कि वे उसे जैसे मर्जी तब्दील कर दें अर्थात उन्हें हर हालत में ऐतिहासक चरणों अनुसार ही यह करना पड़ता है।

जब देशों में उद्योग स्थापित हो गए तो तब पूंजीवादी व्यवस्था कायम हुई। उसी समय मजदूर जमात भी पटल पर आई अर्थात जिस वर्ग के पास अपनी श्रम शक्ति बेचने के सिवा जीवित रहने के लिए कोई साधन नहीं होते या नाममात्र ही होते हैं। जब मजदूर वर्ग का उदय हुआ तो दुनिया के दो महान दार्शनिकों-मार्क्स और एंगेल्स ने मजदूरों की मुक्ति के सिद्धांत की रचना की। (यहां यह बहुत महत्वपूर्ण बात नोट करने योग्य है कि जब मजदूर वर्ग का उदय हुआ तो ही दुनिया के दो महान दार्शनिक-मार्क्स और एंगेल्स मजदूरों की मुक्ति का सिद्धांत रच सके।) उन्होंने दर्शाया कि जब तक इस लुटेरे प्रबंध की जगह वर्ग रहित, शोषण रहित, बराबरी वाला प्रबंध स्थापित नहीं किया जाता, तब तक मानवता की मुक्ति संभव नहीं।

अतीत में, अर्थशास्त्र में एक सिद्धांत था कि मुक्त प्रतिस्पर्धा और हितों की विभिन्नता अर्थव्यवस्था और राष्ट्रों के विकास के लिए अच्छे हैं, भाव यह कि यह सिद्धांत पूंजीवाद को बदलकर यहां एक समतावादी समाज स्थापित करने की आवश्यकता को नकारता था। यह सिद्धांत, वास्तव में, पूंजीपतियों की संचित संपत्ति को श्रमिकों की लूट नहीं बल्कि राष्ट्र की संपत्ति मानता था। खैर, यह सिद्धांत यह कहते हुए कि पूंजीपति तो मजदूर को उसकी मजदूरी का भुगतान कर देता है, श्रम को लूटकर पूंजीपतियों द्वारा जमा की गई संपत्ति के असली रहस्य को ढक देता था। इसीलिए दुनिया के महान दार्शनिक मार्क्स ने इस सिद्धांत का खंडन किया और उन्होंने कहा कि श्रम का बेशी मूल्य (स्ह्वह्स्श्चद्यह्वद्य 1ड्डद्यह्वद्ग) मजदूर को उसकी पूरी मजदूरी दिए बिना खुद पूंजीपति द्वारा हड़प लिया जाता है और पूंजीपति द्वारा हड़प किया गया और मजदूरों द्वारा खोया गया बेशी मूल्य ही पूंजीपतियों के पास धन के रूप में जमा हो जाता है। मार्क्स ने इस संचित धन को जमे हुए श्रम या मृत श्रम (स्न्ह्ल्श5द्गठ्ठ द्यड्डढ्डश्ह्वह्ल श्ह्ल स्त्रद्गड्डस्त्र द्यड्डढ्डश्ह्वह्ल) का नाम दिया। इस मृत श्रम में सभी प्रकार की संपत्ति जैसे सोना, पैसा, चांदी, हीरे, नकदी, उत्पादन के साधन और उत्पादन के स्रोत शामिल हैं। इस तरह पूंजीपति एक ओर जीवित श्रम और दूसरी ओर मृत श्रम के माध्यम से अपनी संपत्ति में वृद्धि करते रहते हैं और मजदूर लगातार भूखमरी की स्थिति में रहने को मजबूर होता है। पूंजीपति इस मृत श्रम के द्वारा और भी अधिक लूट करता रहता है।

इस सिद्धांत को सामने रखने वाले मार्क्स और एंगेल्स जैसे महान दार्शनिकों ने भी दिखाया कि जब तक मजदूरों की मजदूरी की लूट होती रहेगी, मजदूरों की दुर्दशा

बनी रहेगी और पूंजीवाद का खजाना बढ़ता रहेगा। इस तरह पूंजीपति वर्ग और मजदूरों के बीच अमीरी और गरीबी की खाई भी चौड़ी होती जाएगी। आज जब हम अपने देश की स्थिति को देखते हैं, तो हम ऐसा होते हुए देख सकते हैं। आएं कुछ आंकड़े लें-

कृषि क्षेत्र में काम करने वाले ज्यादातर किसान और मजदूर गरीब हैं। देश के 44% से अधिक लोग (मजदूर) सीधे तौर पर किसान और खेतिहर मजदूर के रूप में कृषि पर निर्भर हैं लेकिन उन्हें देश की कुल आय का केवल 17.18% भाग ही मिलता है। ..वर्तमान में कृषि क्षेत्र में धन का संचय काफी कम हो गया है। इस समय धन का संचय कॉरपोरेट घरानों के पास ही हो रहा है। 1950-51 में कॉरपोरेट क्षेत्र को कुल राजस्व का केवल 5% प्राप्त हुआ जो 1992-93 में बढ़कर 13% हो गया। 2018-19 में यह हिस्सेदारी 40% के करीब पहुंच गई।[1]

2014 में भाजपा की सरकार बनने के बाद इस पर और जोर दिया गया। संपत्ति कर, जो 1950 के दशक से लागू है, 2016 में समाप्त कर दिया गया। कॉरपोरेट आयकर 35 फीसद से घटाकर 22 फीसद किया गया।[2]

कॉरपोरेट सेक्टर की कर्ज माफी, गुप्त सब्सिडी और टैक्स में कटौती आम जनता पर बोझ है। कॉरपोरेट टैक्स की दरों को कम करने से सरकार को हर साल लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इस घाटे को सरकार अप्रत्यक्ष करों के जरिए पूरा करती है।....पिछले समय में सरकार ने पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की कीमतों में लगातार बढ़ौतरी कॉरपोरेट क्षेत्र को रियायतें देने से हुए नुक्सान की भरपाई करने के लिए की है।[3]

ऑक्सफैम की 2022 की रिपोर्ट के मुताबिक, देश की कुल संपत्ति का 77% हिस्सा 10% आबादी के पास एकत्र हो गया है। बाकी 90% आबादी के पास सिर्फ 23% दौलत बची है। दस वर्षों में अमीरों की संपत्ति में दस गुना वृद्धि हुई है, इस दौरान आम लोगों की संपत्ति में केवल 1% की वृद्धि हुई है। इसलिए हमारे देश में अरबपतियों की संख्या इतनी तेजी से बढ़ी है। सन 2000 में अरबपतियों की संख्या सिर्फ 9 थी, जो 2017 में बढ़कर 101 और 2022 में 119 हो गई।[4]

इसीलिए मार्क्स और एंगेल्स जैसे महान दार्शनिकों ने निष्कर्ष निकाला था कि सभी अमानवीय तत्वों को मिटाने के लिए हमें इस लुटेरी व्यवस्था से छुटकारा पाना होगा और एक वर्ग-विहीन, समानता वाले समाज का निर्माण करना होगा अन्यथा यही जारी रहेगा। यहां एक और बात स्पष्ट कर दी जानी चाहिए कि मजदूर सिर्फ एक कारखाना मजदूर नहीं है जिसके पास खुद का कोई संसाधन नहीं है। बल्कि, श्रमिकों की विभिन्न परतें होती हैं जैसे तकनीकी कर्मचारी, कर्मचारी, भूमिहीन और जमीन पर काम करने वाले किसान-मजदूर (अर्थात मानसिक और शारीरिक श्रम करने वाले) सभी के सभी मजदूरों की श्रेणी में आते हैं।

तो मानवता के उद्धार का अंतिम लक्ष्य- मई दिवस की सच्ची भावना का पालन करते हुए एक वर्गहीन, शोषण-रहित, समतावादी समाज के निर्माण के लिए प्रयास करना है। जब यहां समानता का समाज बनेगा और इंसान की लूट असंभव हो जाने के कारण हर इंसान लूट से मुक्त होगा तब दुनिया खुशियों से भरी होगी। उस समय किसी भी मनुष्य के मन में जन्म और मृत्यु से मुक्त होने और मोक्ष की मिथ्या धारणा नहीं पलेगी और न ही वह काल्पनिक शक्तियों का सहारा लेने वाले किसी अंधविश्वास की ओर भागेगा। प्रत्येक मनुष्य में अधिक से अधिक जीवन जीने की इच्छा होगी और समानता वाला समाज होने के कारण प्रत्येक प्राणी को सभी आवश्यक सुविधाएं प्राप्त भी होंगी ताकि वह एक लंबा और खुशहाल जीवन जी सके। मई के शहीदों को सलाम!

अनुवाद-मुलख पिपली
98769-53561

सन्दर्भ: 1, 2 विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, डॉ. बलबीर सिंह, प्रकाशन पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2003, पृष्ठ 78

3.- ऊपर- पेज 166

4. पंजाबी ट्रिब्यून, 12 अप्रैल, 2022, लेखक- अर्थशास्त्री सुच्चा सिंह गिल

तर्कशील बनो, तर्कशील पढ़ो

बाबाओं के 'काले' कारनामें

कानपुर : प्रखर जी महाराज के खिलाफ दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज

प्रखर परोपकार मिशन के संस्थापक एवं निर्वाणी अखाड़ा के प्रखर जी महाराज के खिलाफ युवती के साथ दुष्कर्म, छेड़छाड़ और धमकी के आरोप में रिपोर्ट दर्ज की गई है। किदवईनगर क्षेत्र की रहने वाली युवती की मां ने इस संबंध में आशा ज्योति केंद्र के वन स्टॉप सेंटर में राज्य महिला आयोग की सदस्य पूनम कपूर से शिकायत की थी। उनके निर्देश पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की है। युवती की मां ने पुलिस को बताया कि 2020 फरवरी में प्रखर जी महाराज धार्मिक कार्यक्रम के लिए कानपुर प्रवास पर थे। अपने पति और बेंगलुरु से पढ़ाई कर लौटी बेटी के साथ वह भी पहुंची थी। आरोप है कि महाराज ने बेटी के साथ एकांत कमरे में दीक्षा देने के बहाने छेड़छाड़ व दुष्कर्म किया। किसी से कुछ कहने पर माता-पिता की हत्या करने की धमकी भी दी। इसी डर से वह और पति लौट आए, जबकि बेटी को छोड़ दिया। बाद में पता चला कि प्रखर महाराज उनकी बेटी को अपने साथ हरिद्वार शंकराचार्य मार्ग स्थित भूपत वाला विश्वनाथ आश्रम ले गए हैं।

समर्थ त्रिपाठी महाराज

समर्थ त्रिपाठी उर्फ सीताराम दास महाराज ने शराब पीकर अपने तीन साथियों के साथ मिलकर नाबालिग किशोरी को जबरन शराब पिलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। रीवा के अधिकारी इसे वीआईपी ट्रीटमेंट देते हैं, रामकथा पाठ करने के लिए सर्किट हाउस गया था ये महंत।

दुष्कर्म में दोषी गुरुद्वारे के ग्रंथी को 25 साल कैद

कैथल। दो नाबालिग छात्राओं से दुष्कर्म के दोषी गुरुद्वारे के ग्रंथी को न्यायालय ने 25 साल की कारावास और एक लाख रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि समाज में जिस पद पर दोषी है, उसे देखते हुए यह सजा जरूरी थी, ताकि दूसरे लोगों को इससे सबक मिल सके। महिला विरुद्ध अपराध की स्पेशल न्यायालय की अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पूनम सुनेजा ने उक्त सजा सुनाई है। बता दें कि आरोपी जसवीर सिंह (50) चीका थाना क्षेत्र के एक गांव में स्थित गुरुद्वारे का ग्रंथी था, जहां एक संस्था की तरफ से बच्चों को पढ़ाया जाता था। उसी गांव की नौ और दस वर्षीय छात्राएं भी वहां पढ़ने जाती थी। चार फरवरी 2019 को गुरुद्वारे में ही जसवीर सिंह ने दोनों छात्राओं से दुष्कर्म किया। नाबालिग छात्राओं की ओर से इसकी जानकारी परिजनों को दी गई, जिसके बाद शिकायत के आधार पर छह फरवरी 2019 को आरोपी के विरुद्ध चीका थाने में पुलिस ने केस दर्ज किया था। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

पांच लोगों की हुई गवाही, 48 पन्नों का आया फैसला

नाबालिग छात्राओं से दुष्कर्म मामले में सुनवाई के दौरान कोर्ट में पांच लोगों की गवाही हुई, जिसके आधार पर ग्रंथी जसवीर सिंह को दोषी पाया गया। इस संबंध में कोर्ट ने 48 पन्नों का फैसला लिखा है। जिला उप न्यायवादी जयभगवान गोयल ने बताया कि न्यायाधीश ने सभी कानूनों को ध्यान में रखते हुए सुबूतों के साथ यह फैसला सुनाया है।

तांत्रिक पति ने 6 माह कैद में रखा : कपड़े नहीं पहनने देता था, गलत हरकत करता था.........फिर भी बेटा न हुआ तो दे दिया तीन तलाक

मेरठ में एक तांत्रिक पति ने बेटे की चाह में पत्नी पर तंत्र-मंत्र की क्रियाएं की। हर दिन तरह-तरह की यातनाएं दीं और जब बेटी पैदा हो गई तो तलाक देकर घर से निकाल दिया। वह हैवानियत पर इस कदर उतारू था कि हर दिन जुल्म ढाता था। पत्नी के कपड़े उतारकर उसे पीटता और कहता था कि बेटा ही पैदा होना चाहिए। पीड़ित पत्नी ने अपने ऊपर ढाए गए जुल्म की दास्तां बयां की है।

लिसाड़ीगेट की रहने वाली महिला (23) का निकाह तीन साल पहले तांत्रिक बाबा उर्फ खान के साथ हुआ था। महिला के मुताबिक, जब परिवार के लोगों ने निकाह किया तो उसे बताया गया था कि लड़का प्राइवेट नौकरी करता है। लेकिन बाद में पता चला कि उसका शौहर तांत्रिक है, जो महिलाओं पर तंत्र-मंत्र करके ठगी करता है।

पीड़िता ने अपना दर्द सुनाते हुए कहा कि निकाह के एक महीने बाद ही पति कमरे में बंधक बनाकर बुरी तरह से

मारपीट करने लगा। कमरे में रात में तीन-तीन घंटे खड़ा रखने की सजा देता। विरोध करने पर पति जल्लाद जैसा बर्ताव करता। सुसराल में भी अपना दर्द सुनाया लेकिन उसके बाद भी सुसराल में कोई मदद नहीं हुई।

6 माह तक कमरे में कैद रखा

पीड़िता का कहना है कि कुछ समय पहले ही मुझे बेटी पैदा हुई है। महिला ने पुलिस को बताया कि जब वह गर्भवती थी तो पति बेटा पैदा करने के लिए उसके ऊपर तंत्र किया करता था। जब विरोध किया तो कपड़े उतारकर बुरी तरह से मारता पीटता था। बंद कमरे में कई कई घंटे पहनने के लिए कपड़े नहीं देता था। 6 माह तक कमरे में कैद रखा। तांत्रिक पति कहता था कि तंत्र-मंत्र से ही बेटा पैदा हो सकता है। पीड़िता ने बताया कि इतने जुल्म पति ने ढहाए हैं कि मैं बता नहीं सकती।

बेटी पैदा होने पर दिया तीन तलाक

पीड़िता ने बताया कि बेटी पैदा होने के बाद पति मारपीट कर टॉर्चर करने लगा। रात में बंधक बनाकर पीटा और कहा कि मैं तीन तलाक दे रहा हूं। उसके बाद घर से भी निकाल दिया। महिला अपने मायके पहुंची और आपबीती बताई जिसके बाद मायके वाले तांत्रिक के घर पहुंचे लेकिन तांत्रिक ने ससुर के साथ जमकर मारपीट की और लोहे की रॉड से उनका सर फोड़ दिया।

इंस्पेक्टर लिसाड़ीगेट उत्तम सिंह राठौर ने बताया कि इस मामले में पुलिस जांच कर रही है। उचित कार्रवाई की जाएगी।

दो महिलाओं से दुराचरण करने वाले चर्च के संस्थापक को हटाया

सिडनी -करीब एक दशक पहले ब्रायन ने चर्च की एक महिला स्टाफ को अशोभनीय एसएमएस भेजा था। इस वजह से इस महिला ने चर्च छोड़ दिया।

2019 में चर्च की कॉन्फ्रेंस के बाद ब्रायन ने एक अनजान महिला के होटल के कमरे में जाकर कुछ समय बिताया। चर्च ने उसका बचाव कर कहा कि उस समय ब्रायन ने नींद की गोलियां और शराब दोनों का सेवन कर रखा था, वह बहका हुआ था।' हालांकि बाद में चर्च को मानना पड़ा कि ब्रायन का आचरण गलत था।

बच्ची से यौन शोषण के दोषी तांत्रिक को 20 साल की कैद

सोनीपत। अतिरिक्त जिला एव सत्र न्यायधीश (फास्ट ट्रैक) सुरुचि अतरेजा सिंह की अदालत ने बच्ची का यौन शोषण करने के मामले में आरोपी तांत्रिक व पीड़िता की मां को दोषी करार दिया है।

अदालत ने दोनों को 20-20 साल कैद की सजा सुनाई है। दोषी तांत्रिक पर 80 हजार रुपये व महिला पर 70 हजार रुपये जुर्माना लगाया है। जुर्माना राशि में से 50-50 हजार पीड़िता को देने के आदेश दिए गए हैं। सिटी थाना क्षेत्र के रहने वाले व्यक्ति ने पुलिस को बताया था कि उसकी पत्नी तंत्र क्रिया करने वाले एक व्यक्ति के संपर्क में आ गई थी।

इसके बाद उसने उसे भी घर से निकाल दिया था। व्यक्ति ने बताया था कि उसकी पत्नी जनवरी में 12 साल की बेटी को लेकर तांत्रिक के पास गई थी। वहां पर आरोपी ने उसकी बेटी का यौन शोषण किया था। उसने बताया था कि दो दिन पहले उसकी साली अपनी बहन के पास गई तो उसकी बेटी ने मौसी को मामले से अवगत कराया था। उसकी साली ने उसे मामले की सूचना दी।

पृष्ठ 34 का शेष -कर्म किया गया है? ब्राह्मण कहते हैं कि हिन्दू-धर्म वैदिक-धर्म है। बाह्मण खुद को आर्य बताते हैं। ऐसे में वे अपने धर्म को भी आर्य धर्म बताते हैं। अंग्रेजी के शब्दकोशों में हिन्दू-धर्म को ब्राह्मणों का धर्म बताया गया है। यह एक गैर-ईसाई, गैर-मुस्लिम धर्म है।

इसी और अधिक व्याख्या करने की आवश्यकता है। लेकिन, मैं इसे संक्षेप में कहूंगा। हिन्दू-धर्म का पूरा ब्यौरा वेदों, शास्त्रों और पुराणों में मिलता है। उसके इतिहास में अतीत के कुछ ऐतिहासिक और कुछ मिथकीय किस्से जुड़े हैं। इस धर्म के मुताबिक, हम चौथी और पांचवी जाति में आते हैं। इस हिसाब से हमें उपरोक्त ग्रंथों को पढ़ने तक की इजाजत नहीं है।

वेद, शास्त्र, पुराणा, इतिहास आदि सभी ने हमारे लोगों को नीचा दिखाया है। हमें बेईमान के रूप में चित्रित किया गया और कई तरह से हमें अपमानित किया गया है। इसीलिए हम कहते हैं कि ईश्वर, धर्म, धर्म-सिद्धांत, पुराणों और इतिहास आदि में भरोसा समाप्त करना होगा।

(विदुथलई, सम्पादकीय-17.12.1969)

(अंग्रेजी से अनुवाद : पूजा सिंह)

(स्रोत : पुस्तक 'धर्म और विश्वदृष्टि')

इंसानी शरीर में धड़का सूअर का दिल

दुनिया में पहली बार ऐसा ट्रांसप्लांट

बाल्टीमोर, 11 जनवरी (एजेंसी)

एक मरीज का जीवन बचाने के अंतिम प्रयास के तहत अमेरिकी चिकित्सकों ने उसमें 'जेनेटिकली मॉडीफाइड' सूअर का दिल ट्रांसप्लांट किया, जो चिकित्सा जगत में पहली बार किया गया प्रयोग है। मैरीलैंड के एक अस्पताल ने बताया कि अत्यधिक प्रयोगात्मक इस सर्जरी के बाद भी मरीज की तबीयत ठीक है। हालांकि, ऑपरेशन की सफलता के बारे में अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी, लेकिन जीवनरक्षक प्रतिरोपणों में किसी जानवर के अंग का इस्तेमाल करने को लेकर जारी दशकों पुराने अनुसंधान की दिशा में यह एक बड़ा कदम है।

'यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड मेडिलक सेंटर' के चिकित्सकों ने कहा कि यह प्रतिरोपण दर्शाता है कि जेनेटिक (आनुवांशिक) बदलाव के साथ जानवर का दिल तत्काल अस्वीकृति के लक्षण दिखाए बिना मानव शरीर में काम कर सकता है। मरीज डेविड बेनेट (57) के बेटे ने बताया कि डेविड को पता था कि इस प्रयोग के सफल होने की कोई गांरटी नहीं, लेकिन वह मरणासन्न अवस्था में थे, वह सामान्य प्रतिरोपण के योग्य नहीं थे और उनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं था। 'यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड मेडिकल सेंटर' के एक बयान के अनुसार ऑपरेशन से एक दिन पहले बेनेट ने कहा, 'यह प्रतिरोपण मेरे लिए करो या मरो की स्थिति है। मैं जीना चाहता हूं। मै जानता हूं कि यह अंधेरे में तीर चलाने के समान है, लेकिन मेरे पास यही अंतिम विकल्प है।' बेनेट सोमवार का स्वयं सांस ले पा रहे थे, लेकिन वह अब भी हृदय और फेफड़ों संबंधी मशीनों की मदद ले रहे हैं। उनके स्वास्थ्य के लिहाज से आगामी कुछ दिन अहम होंगे। मैरीलैंड यूनीवर्सिटी के पशुओं-से-मानवों में प्रतिरोपण कार्यक्रम के वैज्ञानिक निदेशक डॉ. मोहम्मद मोहिउद्दीन ने कहा, 'अगर यह ऑपरेशन सफल रहता है, तो पीड़ित मरीजों के लिए इन अंगों की अंतहीन आपूर्ति होगी।'

जीन्स में किया बदलाव

इससे पहले इस प्रकार के प्रतिरोपण को कोशिशें नाकाम रही हैं और इनका मुख्य कारण यह रहा कि आनुवांशिक अंतर के कारण इंसानी शरीरों ने जानवरों के अंगों को स्वीकार नहीं किया। वैज्ञानिकों ने संभावित नुकसानदेह जीन्स को हटाकर व उनमें बदलाव करके इस समस्या को दूर करने का प्रयास किया है। बेनेट के शरीर में ट्रांसप्लांट किया गया दिल, जिस सूअर से लिया गया, उसके 3 जीन्स को हटाया गया था, जबकि 6 इंसानी जीन्स डाले गये थे। इसके अलावा, सूअर के दिल के आकार की ज्यादा वृद्धि रोकने के लिए भी एक जीन हटाया गया। इन आनुवांशिक बदलावों के अलावा बेनेट को किनिक्सा फार्मा कंपनी द्वारा विकसित एक प्रयोगात्मक एंटी रिजेक्शन दवा भी दी गयी।

धरती को सोना बनाने वाले

धरती की सोना बनाने वाले भाई रे
माटी से हीरा उगाने वाले भाई रे
अपना पसीना बहाने वाले भाई रे
उठ तेरी मेहनत को
लूट रहे है कसाई रे
धरती भी तेरी
ये अम्बर भी तेरा
तुझको ही लाना है
अपना सवेरा

- ब्रज मोहन

खबर है कि

तुलसी विवाह के लिए रू. 5 लाख का चंदा इकट्ठा कर भागा महंत

रूदावत। उच्चैन के गांव चुरारी गुर्जर के लोगों के साथ आस्था के नाम पर धोखाधड़ी हो गई। गांव के सीतराम मंदिर का महंत भागवत कथा व तुलसी विवाह कार्यक्रम कराने के नाम पर लोगों से चंदा एकत्रित कर पांच लाख रुपए लेकर फरार हो गया। उच्चैन एसएचओ राजेश कसाना ने बताया कि गांव चुरारी गुर्जर निवासी जयसिंह पुत्र मानसिंह भगत गुर्जर ने मामला दर्ज कराया है कि गांव में सीतारामजी का मंदिर है। जिस पर करीब एक वर्ष से कोटा निवासी महात्मा महावीरदास पूजा-पाठ करता था, इसलिए सभी ग्रामवासी समय-समय पर महंत को दान दिया करते थे। महंत महावीरदास ने 15 नवम्बर 2021 को मंदिर पर सभी ग्रामवासियों की पंचायत बुलाकर कहां कि मंदिर में तुलसी विवाह व भागवत कथा कार्यक्रम करवाना है। इसके लिए गांव से चंदा एकत्रित करूंगा। जिस पर महंत के कहने पर ग्रामीणों ने चंदा राशि देना शुरू कर दिया। इसी तरह से महंत ने दो दर्जन से अधिक ग्रामीणों से करीब पांच लाख रुपए एकत्रित कर लिए और 18 दिसम्बर की रात्रि को मंदिर से फरार हो गया।

(दैनिक भास्कर, 10-02-2022)

बड़े हनुमान मंदिर में चोरों ने निकालीं आँखें

बिलहरी के बड़े हनुमान मंदिर में चोरों ने मूर्ति की आँखें ही चुरा लीं। चोरों ने हनुमान का चाँदी का तिलक भी चुरा लिया। सवेरे जब पूजा के लिए लोग मंदिर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि हनुमान की आँखें गायब थीं और उनका तिलक भी नहीं था।

(दैनिक भास्कर, 2 3-09-2019)

आध्र प्रदेश : बलि के दौरान बकरे की जगह काट दी पकड़ने वाले की गर्दन, आरोपी गिरफ्तार

आंध्र प्रदेश के चित्तूर से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, यहांनशे में धुत एक युवक ने बकरे की जगह उसे पकड़ने वाले आदमी की गर्दन काट दी। अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने हत्या के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। मामला चित्तूर के वलसापल्ले (Valasapalle) का है, संक्रांति के अवसर पर यहां यल्लमा मंदिर में बलि का आयोजन किया गया था। आरोपी चलापथी जानवरों की बलि दे रहा था। 35 साल का सुरेश बलि के दौरान बकरे को पकड़े हुए था, तभी अचानक चलापथी ने बकरे की जगह सुरेश की गर्दन काट दी।

पुलिस ने मुताबिक चलापथी नशे में था। उसने बकरे की जगह हथियार सुरेश की गर्दन पर मार दिया, घायल अवस्था में उसे नजदीकि मदनपल्ले के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। यहां डॉक्टरों ने सुरेश को मृत घोषित कर दिया। चलापथी को पुलिस ने मौके से पकड़ लिया है।

मूर्ति विसर्जन के दौरान डूबे छात्र का शव बरामदः इकलौते पुत्र की मौत के बाद परिवार में मचा कोहराम, स्कूल प्रबंधक पर लापरवाही का आरोप

जहानाबाद जिले में मूर्ति विसर्जन के दौरान 4 छात्र दर्द्धा नदी में डूब गए थे। इनमें 3 छात्रों को ग्रामीणों के सहयोग से बचा लिया गया था। लेकिन, हिमांशु कुमार नामक बालक का पता नहीं चल पाया था। पुलिस हिमांशु कुमार की खोज कर रही थी। हिमांशु कुमार का शव बरामद हो गया। प्रशासन द्वारा शव को बरामद करने के लिए NDRF की टीम को लगाया गया था। जैसे ही हिमांशु कुमार का शव नदी से बाहर आया उसके परिवार में चीख-पुकार मच गई। परिजनों में कोहराम मच गया। बच्चे के माता-पिता के चीख-पुकार से उपस्थित लोगों की भी आंखें नम हो गई।

शब्द, किताबें और लोग



गुरचरण सिंह नूरपुर

प्राचीन काल से लेकर आज तक की सभ्यता तक मनुष्य ने अपने उपयोग के लिए हजारों उत्पाद बनाए हैं, लेकिन अब तक का सबसे अच्छा कार्य पुस्तिका है।

कई शताब्दियों के प्रयास के बाद मनुष्य वर्णमाला तक पहुँचा। अक्षर शब्द बन गए, शब्द वाक्य बन गए और वाक्य पुस्तकें। शब्द एक बड़ी ताकत हैं। कहते हैं पत्थर टूट सकते हैं लेकिन शब्द नहीं।

मनुष्य ने पहले पत्थरों पर फिर पत्तों पर लिखना शुरू किया और जब कपड़ा बुनने की खोज हुई तो उसने कपड़े पर लिखना शुरू किया। सदियों बाद, उन्होंने कागज का आविष्कार किया, और किताबें अस्तित्व में आईं।

किसी ने सच ही कहा है कि शब्दों से आप पूरी दुनिया को जीत सकते हैं लेकिन तलवार से नहीं। जो लोग शब्द के महत्व को समझते हैं वे जीवन भर किताबों से जुड़े रहते हैं और अच्छी किताबें पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में निखार आने लगता है। हम कह सकते हैं कि मनुष्य को महापुरुष बनाने की शक्ति किताबों में छिपी है। किताबों की महानता के बारे में लिखते हुए, विद्वान जेम्स रसेल लिखते हैं: किताबें मधुमक्खियों की तरह होती हैं, जो पराग को एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क तक ले जाती हैं। किताबें हमें अतीत की झलक देती हैं। सदियों पहले के लोगों का परिचय। विश्व की प्रमुख घटनाओं के दृश्य हमारी आँखों के सामने प्रकट होते हैं।

एक बहुत ही दिलचस्प अरब कहावत है, ''एक किताब जेब में, एक बगीचे की तरह होती है।''

किताबें कई तरह की होती हैं। एक वो किताबें जो हम पढ़ भी नहीं पाते और मुफ्त में दूसरों को सौंप देते हैं, दूसरी वो जो हम खुद पढ़ते हैं और अपने दोस्तों को यह कहने से रोकते हैं कि यह समय की बर्बादी है। तीसरे वे हैं जिन्हें हम बड़ी रुचि के साथ पढ़ते हैं और अन्य मित्रों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। चौथे प्रकार की पुस्तकें वे हैं जिन्हें पढ़ते समय हमें भय होता है कि कहीं यह पुस्तक शीघ्र ही समाप्त न हो जाए। पांचवीं तरह की किताबें वे हैं जो हम किसी को नहीं देते हैं। अगर कोई मांग कर ले भी ले तो हमें तब तक चैन नहीं आता जब तक हम इसे दोबारा खरीद कर अपनी लाइब्रेरी में नहीं रख लेते।

किताबें जरूर पढ़ें, क्योंकि किताबों में इंसान को महान बनाने की क्षमता होती है। भारत की धरती उन महान शख्सियतों की धरती है जिन्होंने अपनी बुद्धि से पूरी दुनिया को प्रभावित किया। भगत पूरन सिंह जी ने न केवल देश में बल्कि दुनिया में मानवता की सेवा करके एक मिसाल कायम की। भगत जी पुस्तकों को पढ़ना अपना नियम मानते थे। शब्दों की ताकत जगजाहिर थी। वे स्वयं एक अच्छे लेखक थे।

इंग्लैंड और फ्रांस जैसे देशों में किताबें पढ़ने की प्रथा पहले से कहीं ज्यादा थी, आज भी है। कई देशों में, अगर बस में पचास यात्री यात्रा कर रहे हैं, तो उनमें से चालीस कोई न कोई किताब या पत्रिका पढ़ रहे हैं। समाज को आकार देने में पुस्तकें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अगर आज हमारी युवा पीढ़ी दूसरे देशों में अपना भविष्य तलाश रही है तो इसमें किताबों की बड़ी भूमिका है।

पुस्तकों को पढ़ने के लिए, हमें एक होम लाइब्रेरी स्थापित करने और पढ़ने के लिए समय और स्थान अलग रखने की आवश्यकता है। प्रतिदिन किसी पुस्तक के दस से बारह पन्ने पढ़कर हम अपने अंदर के परिवर्तन को महसूस कर सकते हैं। इसलिए हमें पढ़ने के लिए आधा घंटा या एक घंटा अलग रखना चाहिए। हम दिन भर मोबाइल स्क्रीन पर अपनी उँगलियाँ थपथपाने में बहुत समय बर्बाद करते हैं। हम अपने दिमाग को अनावश्यक डेटा के रूप में बहुत सारे कबाड़ से भर रहे हैं। यह हमें बौद्धिक रूप से बौना बना रहा है। हमें अपने सोचने के तरीके को वैज्ञानिक बनाने के लिए अच्छी किताबें पढ़नी चाहिए। एक बार मुझे केरल जाने का मौका मिला। हमने वहां किताबों की अलमारियां लटकी देखीं। बस में सफर के दौरान 55-60 साल की एक महिला बस में किताबें बेचने के लिए चढ़ गई। यहां हमने किराना और मुनरी की दुकानों पर भुजिया के पैकेट जैसी किताबें और पत्रिकाएं लटकी देखीं।

हमारे समाज में पढ़ने की रुचि कम होती जा रही है। टीवी हावी हो रहा है। इसके कारण हो रहे हैं, चैनलों पर

अंधविश्वासी कार्यक्रमों का प्रसारण, मोबाइल इंटरनेट और मशीन कल्चर का विकास। बहुत से पंजाबी साक्षर होते हुए भी अख़बार तक नहीं पढ़ते, किताबों की तो बात ही छोड़िए। हमारे लोग दस-पंद्रह रुपये मोबाइल पर धुन लगाकर या किसी से बेवजह बात करके बर्बाद कर देंगे लेकिन 2-3 रुपये में अखबार खरीदना पैसे की बर्बादी लगती है। धनवान लोग घर बनाते समय घरों में पूजा-कक्ष बना लेते हैं, लेकिन घरों में किताबों के लिए जगह नहीं होती। हमारे लोग फालतू समारोहों, फालतू के कर्जों, शादियों, महंगे घरों, महंगी कारों और महंगी कारों पर पैसा खर्च करने को तैयार हैं। ऐसे और भी कई काम करने में हम दुनीयां में नंबर वन हैं। लेकिन ज्यादातर लोगों के लिए किताबों का बजट जीरो प्रतिशत होता है। तथाकथित बाबाओं, डेरों, ज्योतिषियों, वास्तु शास्त्रियों का व्यवसाय भी भारत के सभी राज्यों में फल-फूल रहा है। हमारे पास हर तरह के उत्पाद हर दिन बढ़ रहे हैं लेकिन हम बौद्धिक रूप से गरीब होते जा रहे हैं। जहां किताबों का अनादर होगा वहां मानवता का भी अनादर होगा। हम हमारी सोचने की क्षमता को बढ़ाएं। लेकिन हम इसके लिए बहुत कम करते हैं। अच्छे अखबार, अच्छी किताबें इसमें हमारी सबसे बड़ी मदद हो सकती हैं। साथ ही अच्छे लेखकों, विद्वानों और विचारकों के लिए स्कूलों और कॉलेजों में सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए। सोच विकसित करके और अपने इतिहास के मूल्यों को अपनाकर, हमारी विरासत के महान लोगों के मूल्य अपनाकर, हम बौद्धिक रूप से आगे बढ़ सकते हैं।

चीनियों का कहना है कि किताब में सोने का घर है। जैसा कि आइसलैंडिक कहावत है, ''बिना किसी घोड़े से बेहतर गरीब घोड़ा।'' किताबें हमारे जीवन के कई दुखों को हमेशा के लिए दूर करने की ताकत रखती हैं। हंगेरियन लोग कहते हैं कि किताब मूक गुरु है। आइए किताबों से जुड़ें, किताबों को घरों और दिलों में रखें /

9855051099

तोड़ो ये दीवारें
भर दो अब ये गहरी खायी
जागो दुखियारे इन्सानों
तस्वीर बदल दो दुनिया की
-शशि प्रकाश

गांव लवाना मे चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिनांक 14 अप्रैल 2022 को बाबा साहब भीम राव आंबेडकर कमेटी-लवाना (यमुनानगर) के तत्वावधान मे बाबा साहब भीमराव आंबेडकर जी के 131वें जन्मदिवस को समर्पित तर्कशील सोसायटी हरियाणा की टीम द्वारा अंधविश्वास मिटाने एवं चमत्कारों का पर्दाफाश करने वाला एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में तर्कशील पथ पत्रिका संपादक मा. बलवंत सिंह तथा मा.राकेश कुमार ट्रीमैन द्वारा जादू के विभिन्न ट्रिक दिखाकर तथा बाद मे उनके पीछे छिपे हुए रहस्यों को समझा कर चमत्कारों एवं पाखंडवाद का नकाब उतारकर लोगों मे तार्किक सोच उत्पन्न करने का सराहनीय कार्य किया। कार्यक्रम में गांव लवाना तथा आसपास के कई गांवों से बच्चे, बुजुर्ग और नौजवान लोग सभी अपने परिवारों के समेत काफी बडी संख्या में सम्मिलित हुए। सभी ने कार्यक्रम मे मनोरंजन के साथ साथ खूब ज्ञानार्जन भी किया। कार्यक्रम में मंच संचालन की जिम्मेदारी मा. सुरजीत सिंह ने बखूबी निभाई। कार्यक्रम के आयोजन में प्रोफेसर रविकांत, मा. लहरी सिंह, सिद्धार्थ नरेश, मा. दिनेश कंवल, सेवा पाल, सुभाष, अमनदीप, अजय, सतीश, मा. संजीव कुमार, ओमबीर सिंह तथा प्रधान सोहन लाल जी आदि का सराहनीय योगदान रहा। अंत में कमेटी की तरफ से उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले बच्चों को मैडल पहना कर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर राकेश कुमार ट्रीमैन द्वारा अपनी नर्सरी मे तैयार किए गए पौधों में से गांव के आंबेडकर भवन परिसर मे दो पौधों का रोपण किया गया तथा गांव वालों को अपने अपने घरों व खेतों में लगाने के लिए लगभग 25 पौधे वितरित किए गए।

बलवंत सिंह
संपादक (तर्कशील पथ)

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा कि तुम लड़ो, तुम लड़ो। - शशि प्रकाश

साम्प्रदायिकता और संस्कृति

मुंशी प्रेमचंद

साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है। उसे अपने असली रूप में निकलने में शायद लज्जा आती है, इसलिए वह उस गधे की भाँति जो सिंह की खाल ओढ़कर जंगल में जानवरों पर रोब जमाता फिरता था, संस्कृति का खोल ओढ़कर आती है। हिन्दू अपनी संस्कृति को कयामत तक सुरक्षित रखना चाहता है, मुसलमान अपनी संस्कृति को। दोनों ही अभी तक अपनी-अपनी संस्कृति को अछूती समझ रहे हैं, यह भूल गये हैं कि अब न कहीं हिन्दू संस्कृति है, न मुस्लिम संस्कृति और न कोई अन्य संस्कृति। अब संसार में केवल एक ही संस्कृति है, और वह है आर्थिक संस्कृति। मगर आज भी हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति का रोना रोये चले जाते हैं। हालाँकि संस्कृति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। आर्य संस्कृति है, ईरानी संस्कृति है, अरब संस्कृति है। हिन्दू मूर्तिपूजक हैं, तो क्या मुसलमान कब्रपूजक और स्थान पूजक नहीं है? ताजिये को शर्बत और शीरीनी कौन चढ़ाता है? मस्जिद को खुदा का घर कौन समझता है ? अगर मुसलमानों में एक सम्प्रदाय ऐसा है, जो बड़े से बड़े पैगम्बरों के सामने सिर झुकाना भी कुफ्र समझता है, तो हिन्दुओं में भी एक ऐसा है जो देवताओं को पत्थर के टुकड़े और नदियों को पानी की धारा समझता है। यहाँ तो हमें दोनों संस्कृतियों में कोई अन्तर नहीं दिखता। तो क्या भाषा का अन्तर है? बिल्कुल नहीं। मुसलमान उर्दू को अपनी मिल्ली भाषा कह लें, मगर मद्रासी मुसलमान के लिए उर्दू वैसी ही अपरिचित वस्तु है जैसे मद्रासी हिन्दू के लिए संस्कृत। हिन्दू या मुसलमान जिस प्रान्त में रहते हैं सर्वसाधारण की भाषा बोलते हैं चाहे वह उर्दू हो या हिन्दी, बंग्ला हो या मराठी। बंगाली मुसलमान उसी तरह उर्दू नहीं बोल सकता और न समझ सकता है, जिस तरह बंगाली हिन्दू। दोनों एक ही भाषा बोलते हैं। सीमाप्रान्त का हिन्दू उसी तरह पश्तो बोलता है, जैसे वहाँ का मुसलमान। फिर क्या पहनावे में अन्तर है? सीमाप्रान्त के हिन्दू और मुसलमान स्त्रियों की तरह कुरता और ओढ़नी पहनते-ओढ़ते हैं। हिन्दू पुरुष भी मुसलमानों की तरह कुलाह और पगड़ी बाँधता है। अक्सर दोनों ही दाढ़ी भी रखते हैं। बंगाल में जाइये, वहाँ हिन्दू और मुसलमान स्त्रियाँ दोनों ही साड़ी पहनती हैं, हिन्दू और मुसलमान पुरुष दोनों कुरता और धोती पहनते है तहमद की प्रथा बहुत हाल में चली है, जबसे साम्प्रदायिकता ने ज़ोर पकड़ा है। खान-पान को लीजिए। अगर मुसलमान माँस खाते हैं तो हिन्दू भी अस्सी फीसदी माँस खाते हैं। ऊँचे दरजे के हिन्दू भी शराब पीते हैं, ऊँचे दरजे के मुसलमान भी। नीचे दरजे के हिन्दू भी शराब पीते है, नीचे दरजे के मुसलमान भी। मध्यवर्ग के हिन्दू या तो बहुत कम शराब पीते हैं, या भंग के गोले चढ़ाते हैं जिसका नेता हमारा पण्डा-पुजारी वर्ग है। मध्यवर्ग के मुसलमान भी बहुत कम शराब पीते है, हाँ कुछ लोग अफीम की पीनक अवश्य लेते हैं, मगर इस पीनकबाजी में हिन्दू भाई मुसलमानों से पीछे नहीं है। हाँ, मुसलमान गाय की कुर्बानी करते हैं। और उनका माँस खाते हैं लेकिन हिन्दुओं में भी ऐसी जातियाँ मौजूद हैं, जो गाय का माँस खाती हैं यहाँ तक कि मृतक माँस भी नहीं छोड़ती, हालांकि बधिक और मृतक माँस में विशेष अन्तर नहीं है। संसार में हिन्दू ही एक जाति है, जो गो-माँस को अखाद्य या अपवित्र समझती है। तो क्या इसलिए हिन्दुओं को समस्त विश्व से धर्म-संग्राम छेड़ देना चाहिए?



संगीत और चित्रकला भी संस्कृति का एक अंग है, लेकिन यहाँ भी हम कोई सांस्कृतिक भेद नहीं पाते। वही

राग-रागनियाँ दोनों गाते हैं और मुगलकाल की चित्रकला से भी हम परिचित हैं। नाट्य कला पहले मुसलमानों में न रही हो, लेकिन आज इस सींगे में भी हम मुसलमान को उसी तरह पाते हैं जैसे हिन्दुओं को। फिर हमारी समझ में नहीं आता कि वह कौन सी संस्कृति है, जिसकी रक्षा के लिए साम्प्रदायिकता इतना ज़ोर बाँध रही है। वास्तव में संस्कृति की पुकार केवल ढोंग है, निरा पाखण्ड। शीतल छाया में बैठे विहार करते हैं। यह सीधे-सादे आदमियों को साम्प्रदायिकता की ओर घसीट लाने का केवल एक मन्त्र है और कुछ नहीं। हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति के रक्षक वही महानुभाव और वही समुदाय हैं, जिनको अपने ऊपर, अपने देशवासियों के ऊपर और सत्य के ऊपर कोई भरोसा नहीं, इसलिए अनन्त तक एक ऐसी शक्ति की ज़रूरत समझते हैं जो उनके झगड़ों में सरपंच का काम करती रहे। इन संस्थाओं को जनता को सुख-दुःख से कोई मतलब नहीं, उनके पास ऐसा कोई सामाजिक या राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है जिसे राष्ट के सामने रख सकें। उनका काम केवल एक-दूसरे का विरोध करके सरकार के सामने फरियाद करना है। वे ओहदों और रियायतों के लिए एक-दूसरे से चढ़ा-ऊपरी करके जनता पर शासन करने में शासक के सहायक बनने के सिवा और कुछ नहीं करते।मुसलमान अगर शासकों का दामन पकड़कर कुछ रियायतें पा गया है तो हिन्दु क्यों न सरकार का दामन पकड़ें और क्यों न मुसलमानों की भाँति सुख़रू बन जायें। यही उनकी मनोवृत्ति है। कोई ऐसा काम सोच निकालना जिससे हिन्दू और मुसलमान दोनों एक राष्ट का उद्धार कर सकें, उनकी विचार शक्ति से बाहर है। दोनों ही साम्प्रदायिक संस्थाएँ मध्यवर्ग के धनिकों, ज़मींदारों, ओहदेदारों और पदलोलुपों की हैं। उनका कार्यक्षेत्र अपने समुदाय के लिए ऐसे अवसर प्राप्त करना है, जिससे वह जनता पर शासन कर सकें, जनता पर आर्थिक और व्यावसायिक प्रभुत्व जमा सकें। साधारण जनता के सुख-दुख से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं। अगर सरकार की किसी नीति से जनता को कुछ लाभ होने की आशा है और इन समुदायों को कुछ क्षति पहुँचने का भय है, तो वे तुरन्त उसका विरोध करने को तैयार हो जायेंगे। अगर और ज़्यादा गहराई तक जायें तो हमें इन संस्थाओं में अधिकांश ऐसे सज्जन मिलेंगे जिनका कोई न कोई निजी हित लगा हुआ है। और कुछ न सही तो हुक्काम के बंगलों पर उनकी रसोई ही सरल हो जाती है। एक विचित्र बात है कि इन सज्जनों की अफसरों की निगाह में बड़ी इज्जत है, इनकी वे बड़ी ख़ातिर करते हैं। इसका कारण इसके सिवा और क्या है कि वे समझते हैं, ऐसों पर ही उनका प्रभुत्व टिका हुआ है। आपस में खूब लड़े जाओ, खूब एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाये जाओ। उनके पास फरियाद लिये जाओ, फिर उन्हें किसका नाम है, वे अमर हैं। मजा यह है कि बाजों ने यह पाखण्ड फैलाना भी शुरू कर दिया है कि हिन्दू अपने बूते पर स्वराज प्राप्त कर सकते है। इतिहास से उसके उदाहरण भी दिये जाते हैं। इस तरह की गलतफहमियाँ फैला कर इसके सिवा कि मुसलमानों में और ज़्यादा बदगुमानी फैले और कोई नतीजा नहीं निकल सकता। अगर कोई ज़माना था, तो कोई ऐसा काल भी था, जब हिन्दुओं के ज़माने में मुसलमानों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया था, उन ज़मानों को भूल जाइये। वह मुबारक दिन होगा, जब हमारे शालाओं में इतिहास उठा दिया जायेगा। यह ज़माना साम्प्रदायिक अभ्युदय का नहीं है। यह आर्थिक युग है और आज वही नीति सफल होगी जिससे जनता अपनी आर्थिक समस्याओं को हल कर सके जिससे यह अन्धविश्वास, यह धर्म के नाम पर किया गया पाखण्ड, यह नीति के नाम पर ग़रीबों को दुहने की कृपा मिटाई जा सके। जनता को आज संस्कृतियों की रक्षा करने का न अवकाश है न ज़रूरत। 'संस्कृति' अमीरों, पेटभरों का बेफिक्रों का व्यसन है। दरिद्रों के लिए प्राणरक्षा ही सबसे बड़ी समस्या है। उस संस्कृति में था ही क्या, जिसकी वे रक्षा करें। जब जनता मूर्छित थी तब उस पर धर्म और संस्कृति का मोह छाया हुआ था। ज्यों-ज्यों उसकी चेतना जागृत होती जाती है वह देखने लगी है कि यह संस्कृति केवल लुटेरों की संस्कृति थी जो, राजा बनकर, विद्वान बनकर, जगत सेठ बनकर जनता को लूटती थी। उसे आज अपने जीवन की रक्षा की ज़्यादा चिन्ता है, जो संस्कृति की रक्षा से कहीं आवश्यक है। उस पुरान संस्कृति में उसके लिए मोह का कोई कारण नहीं है। और साम्प्रदायिकता उसकी आर्थिक समस्याओं की तरफ से आँखें बन्द किये हुए ऐसे कार्यक्रम पर चल रही है, जिससे उसकी पराधीनता चिरस्थायी बनी रहेगी।

तर्कशील बनो, तर्कशील पढ़ो

पंचानन बाबा पुलिस हिरासत में

संतोष

आजादी के करीब सात दशक बाद तथा विज्ञान-तकनीक के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद समाज में अंधविश्वास चरम पर है। 21वीं सदी के वर्तमान दौर में भी, झारखंड समेत देश के कई राज्यों में मौजूद डायन-बिसाही प्रथा एवं डायन हत्या की घटनाएं चिंता पैदा करने वाली हैं। इसकी जड़ें एक ओर ओझा-गुणी, तांत्रिक आदि एवं इसकी आड़ में लाभ उठाने वाले तत्वों तक जाती है, वहीं समाज में मौजूद पुरुष वर्चस्व वाली मानसिकता एवं महिलाओं का संपत्ति में अधिकार का मामला भी इससे जुड़ा है। सत्ता व्यवस्था के साथ ही समाज के ताकतवर, वर्चस्ववादी समूहों का समर्थन व संरक्षण भी वैसे तत्वों को भरपूर प्राप्त होता रहता है। इसके कारण समाज में अंधविश्वास, कुरीति, लूट एवं पाखंड फैलाने, उसे बढ़ावा देने वाले लोग अक्सर कानून के शिकंजे में फंसने से बच जाते हैं या पकड़ में आने के बाद भी आसानी से छूट जाते हैं। संविधान ने वैज्ञानिक मानसिकता के विकास को नागरिकों का मौलिक कर्तव्य निरूपित किया था पर देश की आजादी के सात दशकों बाद भी परिणाम हम सबके सामने है। प्रस्तुत है इसी तथ्य को रेखांकित करता कोलकाता के पत्रकार एवं विज्ञान संचारक संतोष का यह आलेख-

संपादक।

भारत आज शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान आदि क्षेत्रों में क्रमशः तरक्की कर रहा है। विज्ञान व स्वास्थ्य क्षेत्र में आये दिन नए-नए खोज हो रहे हैं । लोगों में जहाँ विज्ञान के प्रति उत्साह बड़ रहा है वहीं अनेक अंधविश्वास जनता के मन- मस्तिष्क से धीरे धीरे कम होता जा रहा है। यह तो सिर्फ देश के एक हिस्से की छवि है। दूसरे हिस्से की छवि में आज भी अनेक लोग झाड़-फूंक, तंत्रमंत्र, भूत-प्रेत, ओझा-तांत्रिक, अलौकिक घटना, काल्पनिक कहानियों आदि में विश्वास करते हैं और इन सब का फायदा उठाते हुए झाड़फूंक, तंत्रमंत्र, ओझा- तांत्रिकों, ज्योतिषियों का ठगी का धंधा फलफूल रहा है। आज भी ओझा, तांत्रिक, बाबा-माताजी झाड़फूंक, व तंत्रमंत्र की मदद से किसी भी बीमारी या मानवीय समस्या का समाधान करने का दावा करते रहते हैं। जबकि तंत्रमंत्र, झाड़फूंक, चमत्कारी शक्ति से किसी भी बीमारी से छुटकारा दिलवाने का दावा करना कानूनन जुर्म है। लेकिन मौजूदा कानूनों को ठेंगा दिखाते हुए औलोकिक शक्ति, तंत्रमंत्र या झाड़फूंक से किसी भी बीमारी का इलाज या समस्या का समाधान करने के नाम पर, लूट पाखंडी धंधा चल रहा है।

चमत्कारी चिकित्सा शिविर :

तथाकथित अलौकिक शक्तिधारी एक बाबा तो सिर्फ झाड़फूंक, से अंधे को रौशनी, गूंगे को बोली और बहरे को श्रवण शक्ति प्रदान करने का दावा तक करता है। सिर्फ दावा ही नहीं बल्कि बाबा के चमत्कारी चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया जाता है। ऐसी ही एक घटना पशचिम बंगाल के पशचिम मिदनापुर के दासपुर थानातंर्गत जानापाड़ा की है, जहाँ बाबा पंचानन माइती अपनी अलौकिक शक्ति द्वारा अंधे, गूंगे और बहरे सहित किसी भी तरह के शारीरिक तथा मानसिक बीमारी से छूटकारा दिला रहे थे। इस धंधे में बाबा को दो चेले अरूण गोस्वामी और सुकुमार सामंत मदद करते थे। इस चिकित्सा शिविर में इलाज करवाने के लिए आने वाले हर एक मरीज को 10 रूपये में एक कॉपी दी जाती थी जबकि इस कॉपी का दाम केवल एक रूपये था। उस कॉपी में कलम से कई श्लोक लिखीं रहती थीं। खुले मैदान में आयोजित चमत्कारी शिविर में इलाज के लिए आये अंधे, गूंगे, बहरे या अपंग जैसे विकलांगों और मरीजों को उस कॉपी में लिखी ईश्वर भक्ति का पाठ करवाया जाता था।

बाबा पंचानन किसी अंधे की आँखों पर हाथ फेरते हुए मंत्र पड़कर उस पर फूंक मारते थे। इसके साथ ही बाबा उस मरीज से कहते है, देखो तो तुम्हे कुछ दिखाई दे रह है या नहीं। यदि अंधे ने ना में जवाब दिया तो उस पर बाबा फिर पहले जैसा कारनामा दोहराते । इसके साथ ही बाबा यह तसल्ली देते –''मेरे पास और दो–चार बार आओ, तुम्हें हर चीज साफ दिखाई देगी। तू देख सकेगा।'' अब एक गूंगे की बारी। किसी गूंगे से बुलबाने के लिए बाबा ने उस गूंगे की जीभ को हाथ से जबरन खींचकर बाहर की ओर निकाला एवं उस जीभ को अपने जीभ से स्पर्ष करा कर गूंगे के मुंह से कुछ बुदबुदाया। और फिर बाबा ने चीख कर गूंगे से कहा ''बोलो माँ, बोलो बाबा।'' बाबा के इस कारनामे के बाद भी गूंगा पहले जैसा बेजबान बना इधर–उधर देखता रहा।

बहरे के इलाज में बाबा पंचानन ने किसी बहरे के कानों में मंत्र पड़कर उसमें फूंक मारा। बाबा के शिविर में आये अन्य मरीजों का भी पंचानन इसी तरह से चमत्कारी इलाज कर रहे थे। चमत्कारी इलाज के बाद मरीजों से कहा गया कि ''बाबा के शिविर में आये लोग और मरीज दानपेटी में 5 से 100 रूपये का अवश्य दान करें।'' कुल मिलाकर चमत्कारी इलाज और दान–पुण्य के नाम पर गरीब, लाचार लोगों और मरीजों से मनमर्जी रुपये की वसूली की जाती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की धज्जियाँ उड़ाते हुए सिर्फ तंत्रमंत्र, झाड़फूंक और चमत्कार द्वारा अंधे को रौशनी, गूंगे को बोली और बहरे को सुनने की शक्ति प्रदान करने के नाम पर विकलांग लोगों के साथ गंदा मजाक किया जा रहा है। रोग से छुटकारा दिलाने के नाम पर पंचानन बाबा का पाखंडी चिकित्सा शिविर चल रहा था, वहीं अश्चर्य की बात थी कि इस पाखंडी शिविर को बंद करने में आरंभ में पुलिस व प्रशासन ने चुप्पी साध रखी थी।

अंतत: 'भारतीय विज्ञान व युक्तिवादी समिति (साइंस एंड रेशनालिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया) की ओर से पंचानन बाबा के इस चमत्कारी चिकित्सा शिविर के खिलाफ दासपुर थाने में लिखित शिकायत कर्ज करायी गयी। जिसके आधार पर पुलिस ने गुमखपोता के निवासी बाबा पंचानन माइती और उनके 2 चेले रामदेव के निवासी अरूण गोस्वामी एवं राजनगर के निवासी सुकुमार सामंत को पहले अपने हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की। पूछताछ में ठीकठाक जवाब नहीं मिलने पर पुलिस ने इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया। बाबा पंचानन सहित तीनों अभियुक्तों को पुलिस ने घाटाल अदालत में पेश किया, जहाँ से उन्हें हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार पंचानन बाबा समेत उनके दोनों चेलों पर औषधि एवं चमत्कारी उपचार आक्षेपाई विज्ञापन अधिनियम, 1954 एवं धारा 417 के तहत मामला शुरू किया गया। अब प्रश्न है, क्या शिकायत मिलने के बाद ही पुलिस व प्रशासन पाखंडी धंधे को कानूनन बंद करने के लिए कदम उठाएगी? यह घटना सिर्फ एक उदाहरण मात्र है लेकिन आज भी पाखंडी बाबा, ओझा, तांत्रिक, ज्योतिषी के चंगुल में फंसकर अनेक अंधविश्वासी लोग रुपये आदि गंवाने में लगे हुए हैं।

चमत्कार से इलाज करना कानूनन अपराध

भारतीय कानून में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ताबीज, कबच, ग्रहरत्न, तंत्रमंत्र, झाड़फूंक, चमत्कार, दैवी औषधी आदि द्वारा किसी भी समस्या या बीमारी से छुटकारा दिलवाने का दावा तक करना जुर्म है। तंत्रमंत्र, चमत्कार के नाम पर आम जनता को लूटने वाले ज्योतिषी, ओझा, तांत्रिक जैसे पाखंडियों को कानून की मदद से जेल की हवा तक खिलाई जा सकती है। विडंबना यह है कि आज भी अनेक लोगों को कानून के बारे में सही सटीक जानकारी नहीं है लेकिन एक आम आदमी भी कानून की मदद से धोखेबाज ओझा, तांत्रिक, बाबाजी, ज्योतिषी को जेल की हवा खिला सकता है। यहाँ कुछ जरूरी कानूनों की जानकारियाँ पेश कर रहा हूँ।

औषध एवं प्रसाधन अधिनियम, 1940

औषध एवं प्रसाधन अधिनियम, 1940 (ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट, 1940) औषधियों तथा प्रसाधनों के निर्माण, बिक्री तथा समवितरण को विनियमित करता है। इसके अनुसार कोई भी व्यक्ति या फर्म राज्य सरकार द्वारा जारी उपयुक्त लाइसेंस के बिना औषधियों का स्टाक, बिक्री या वितरण नहीं कर सकता। इस कानून के तहत किसी भी रोग से मुक्ति दिलवाने के दान पर दिये जाने वाले ताबीज, कबच, मंत्र युक्त जल आदि को औषध के रूप में स्वीकार्य होगा। बिना लाइसेंस के औषध के निर्माण बिक्री तथा समविरतण को जुर्म माना जाएगा। इसके अलावा, ताबीज, कबच इत्यादि द्वारा रोग मुक्ति नहीं होने पर या मरीज की मृत्यु होने पर भारतीय दंड संहिता की धारा एस-320 के तहत दोषी को सजा होगी। ध्यान दें- वर्ष 2008 में इस कानून में संशोधन किया गया। अब से इस कानून का उल्लंघन करने वाले को 10 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। साथ ही 10 लाख रुपये तक का जुर्माना भी होगा।

कहां दर्ज करें शिकायत ?

केंद्र या राज्य सरकार के औषध नियंत्रण कार्यालय में औषध से संबंधित शिकायत दर्ज की जा सकती है। यदि किसी ज्योतिषी, तांत्रिक ने किसी समस्या से छुटकारा दिलवाने के नाम पर ताबीज, कबच, ग्रहरत्न आदि दिया हो तो उसे लेकर औषध नियंत्रण कार्यालय में उस ज्योतिष या तांत्रिक के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी जा सकती है।

औषधी एवं चमत्कारी (आक्षेपाई विज्ञापन) अधिनियम , 1954

औषधि और चमत्कारिक उपचार (आक्षेपणीय विज्ञापन) अधिनियम, 1954 (Drugs and Magic Remedies) (Objectionable Advertisement Act) 1954 आज भी जहां-तहां नीम-हकीमों, तांत्रिकों, रहस्यमय तरीकों से इलाज करने तथा जिन रोगों का कोई इलाज न भी हो उन्हें चमत्कारिक तरीके से ठीक कर देने वाले लोगों व इन पर विश्वास करने वालों की भारी तादाद है। अधिनियम के तहत तंत्र-मंत्र, गंडे, ताबीज आदि तरीकों के उपयोग, चमत्कारिक रूप से रोगों के उपचार या निदान आदि का दावा करने वाले विज्ञापन निषेधित हैं। इसके अनुसार ऐसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भ्रमित करने वाले विज्ञापन दण्डनीय अपराध हैं जिनके प्रकाशन के लिये विज्ञापन प्रकाशित व प्रसारित करने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त समाचार पत्र या पत्रिका आदि का प्रकाशक व मुद्रक भी दोषी माना जाता है।

इस अधिनियम के अनुसार पहली बार ऐसा अपराध किये जाने पर 6 माह के कारावास अथवा जुर्माने या दोनों प्रकार से दंडित किये जाने का प्रावधान है जबकि इसकी पुनरावृत्ति करने पर 1 वर्ष के कारावास अथवा जुर्माने या दोनों से दंडित किये जाने की व्यवस्था है। यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है। ध्यान दें, वर्ष 1963 में इस कानून में संशोधन कर धारा (9ए) जों गयी। अब से इस कानून का उल्लंघन करना गैर-जमानती अपराध माना जाएगा।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत कोई व्यक्ति जो अपने उपयोग के लिये कोई भी सामान अथवा सेवाएँ खरीदता है वह उपभोक्ता यानी क्रेता है। जब आप किसी ज्योतिषी, तांत्रिक या बाबा से कोई ताबीज, कबज, ग्रहरत्न खरीदते हैं तो और इससे यदि आपको कोई लाभ नहीं मिलता है तो आप एक उपभोक्ता के रूप में विक्रेता ज्योतिषी, तांत्रिक या बाबा के खिलाफ उपभोक्ता अदालत में मामला दायर कर सकते हैं। इसके अलावा यदि किसी कानून का उल्लंघन करते हुये जीवन तथा सुरक्षा के लिये जोखिम पैदा करने वाला सामान जनता को बेचा जा रहा है तो आप शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

भारतीय दंड संहिता की धारा 420

भारतीय दंड संहिता की धारा 420 के तहत किसी भी व्यक्ति को कपट पूर्वक या बेईमानी से उत्प्रेरित कर आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, संपत्ति या ख्याति संबंधी क्षति पहुंचाना शामिल है। यह एक दंडनीय अपराध है।

इसके तहत 7 साल तक के कारावास की सजा का प्रावधान है। धर्म, आस्था, ईश्वर के नाम पर ज्योतिषी, तांत्रिक जैसे पाखंडों का सिर्फ और सिर्फ एक ही काम है, अंधविश्वास के दलदल में डूबे लोगों को तन, मन और धन से लूटना। बाबा, ओझा, तांत्रिक सिर्फ और सिर्फ जालसाज हैं। ऐसे जालसाज से ठगी का शिकार बने लोग धारा 420 के तहत शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

चमत्कार को 25 लाख रुपये की चुनौती

युक्तिवादी समिति के अध्यक्ष प्रबीर घोष ने कहा – अंधविश्वास के जाल में अनपढ़ ही नहीं बल्कि पढ़े लिखे लोग भी फंसे हुए हैं। अंधविश्वास देश के विकास में भारी रूकावट है। इसके चक्कर में लोग आर्थिक एवं सामाजिक शोषण का शिकार हो रहे हैं। हम 21 वीं सदी में जी रहे हैं। यह युग विज्ञान का है, लेकिन विभिन्न टीवी चैनलों पर कवच, सिद्ध माला, सिद्ध अंगूठी, धन प्राप्ति यंत्रों का व्यापक अन्धविश्वास के नाम पर, पाखंडी ओझा, तांत्रिक, बाबाओं, ज्योतिषियों का धंधा चल रहा है। जिसका खतरनाक प्रभाव देश के भविष्य करोड़ों बच्चों पर पर रहा है।

टोटका, तंत्रमंत्र आदि कमजोर दिमाग की उपज है। कोई व्यक्ति जब विभिन्न रोग से बीमार होता है, तब उनके परिवार के लोगों की मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती है क्योंकि वे अपने परिजनों को स्वस्थ करने के लिए एक जगह से दूसरी जगह ले ले जाकर परेशान हो जाते हैं। वे चाहते हैं कि किसी भी कीमत पर उनका परिजन स्वस्थ्य हो जाए। इसलिए वे इसी तरह के धोखेबाज बाबाओं के चंगुल में आसानी से फंस जाते हैं। घोष ने कहा, ''मैं ने और मेरी समिति ने कई सौ बाबाओं, ओझाओं, ज्योतिषियों की पोल खोली है, जबकि कई बाबाओं को जेल की हवा तक खिलाई है। चमत्कारी शक्ति का दावा करने वालों को 25 लाख रुपये की चुनौती देते हुए प्रबीर घोष ने कहा कि यदि कोई भी ओझा, तांत्रिक, बाबा, ज्योतिषी यदि उनके सामने चमत्कारी शक्ति का प्रमाण पेश करने में सक्षम हो जाए, तो वे उन्हें 25 लाख रुपये देंगे और समिति का कामकाज बंद कर दिया जाएगा।''

उन्होंने कहा, ''मेरा आम लोगों के लिए यह संदेश है कि वे चमत्कार में विश्वास नहीं करें। चमत्कार के नाम पर किसी भी समस्या से मुक्ति दिलवाने का दावा करने वाले बाबा, ओझा, तांत्रिक सिर्फ और सिर्फ जालसाज हैं। ऐसे जालसाजों से दूर रहें। यदि आप को कहीं पर चमत्कार के नाम पर किसी बाबा का धंधा चलता हुआ दिख जाए तो उसके खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराएं। इस काम में युक्तिवादी समिति आपके साथ है।

(पत्रकार एवं विज्ञान संचारक तथा संप्रति भारतीय विज्ञान एवं युक्तिवादी समिति, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के उपाध्यक्ष हैं)

... पृष्ठ 30 का शेष साथ पचासों हजार बच्चे जन्मे, जिनमें बहुतेरे अपाहिज थे। बहुतेरों की नाबालिक मांओं ने उन यादों से नफरत के चलते जन्म देते ही शिशुओं को सड़क पर फेंक दिया। इन बच्चों को वियतनामी में बुई दोई यानी Dirt of life कहा गया। ये वो बच्चे थे, जिन्हें उनकी मांएं कलेजे से लगाते हुए डरती थीं।

साल 2018 में कांगो के पुरुष गायनेकोलॉजिस्ट डेनिस मुकवेज को नोबेल पुरस्कार मिला– उन औरतों का वजाइना रिपेयर करने के लिए, जो युद्ध में सेक्स स्लेव की तरह इस्तेमाल हुई थीं। एक सवाल ये भी उठता है कि सर्जरी करने वाले को नोबेल जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार देने की बजाय क्या उन स्त्रियों को दुलराया नहीं जाना चाहिए, जो युद्ध के बाद की तकलीफ से जूझ रही थीं। क्या वजाइना रिपेयरिंग की बजाय कोई ऐसी चीज नहीं होनी चाहिए थी, जो औरतों की चिथड़ा–चिथड़ा जमीर को सिल सके? कल रात यूक्रेन के कीव से एक वॉट्सएप कॉल आया। लड़की रुआंसी थी कि उसके आसपास की तमाम दुकानों में सैनिटरी पैड्स का स्टॉक खत्म हो चुका। 23 साल की लड़की को 30 साल पीछे जाकर कपड़े का इस्तेमाल करना पड़ रहा है। बात सुनने में मामूली है, लेकिन ये युद्ध की शुरुआत है, वो युद्ध जो सीमाओं के साथ–साथ औरतों की शरीरों पर लड़ा जाएगा। सीमा पर युद्ध रुक जाएंगे। मुल्क आपस में हाथ मिलाएंगे। तेल–कोयला–मोबाइल–मसाला के व्यापार चल पड़ेंगे। रुकी रहेंगी तो औरतें। वे औरतें, जो युद्ध में शामिल हुए बिना मारी गईं।

जंग सीमाओं पर नहीं, औरतों के शरीरों पर

- मृदुलिका झा

13 साल की थी, जब खेत पर जाते हुए जापानी सैनिकों ने मुझे उठा लिया और लॉरी में डालकर मुंह में मोजे ठूंस दिए, बदबूदार- ग्रीस और कीचड़ से सने हुए। फिर बारी-बारी से सबने मेरा रेप किया। कितनों ने, नहीं पता। मैं बेहोश हो चुकी थी। होश आया तो जापान के किसी हिस्से में थी। एक लंबे कमरे में तीन संकरे रोशनदान थे, जहां लगभग 400 कोरियन लड़कियां थीं।

उसी रात पता लगा कि हमें 5 हजार से ज्यादा जापानी सैनिकों को 'खुश करना' है। यानी एक कोरियन लड़की को रोज 40 से ज्यादा मर्दों का रेप सहना है।

चोंग ओके सन (Chong Ok-sun) का ये बयान साल 1996 में यूनाइटेड नेशन्स की रिपोर्ट में छपा था। इस रिपोर्ट पर कभी खुलकर बात नहीं हुई। ये दरअसल शरीर का वो खुला हिस्सा था, जिसे छिपाए रखने में ही बेहतरी थी, वरना इंसानियत नंगी हो जाती।

जंग सीमाओं पर नहीं, औरतों के शरीरों पर भी लड़ी जाती है तांकि मर्द अपनी हार का गुस्सा या जीत का जश्न मना सकें!

बात दूसरे विश्व युद्ध की है। जापान ताकतवर था। उसके लाखों सैनिक जंग लड़ रहे थे। राशन और गोला-बारूद तो उनके पास थे, लेकिन शरीर की जरूरत के लिए लड़कियां नहीं थीं। तो बेहद ऑर्गेनाइज्ड जापान ने इसके लिए एक तरीका निकाला। वो 'कुंवारी' कोरियन, चीनी, फिलीपीनी लड़कियों को पकड़ता और अपने कंफर्ट स्टेशन्स में कैद कर लेता। कंफर्ट स्टेशन उस जगह का नाम है, जहां लड़कियां सेक्स स्लेव की तरह रखी जातीं।

1944 की यह तस्वीर अमेरिका के नेशनल आर्काइव्स में रखी है। ये महिलाएं सेक्स स्लेव्स (Sex Slaves) हैं, जिन्हें दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जापानी सैनिकों की शारीरिक भूख मिटाने के लिए चीन में बंधक बनाया गया था। तब इन्हें कम्फर्ट वुमन (Comfort Women) कहा जाता था। माना जाता है कि जापानी सेना ने चीन-कोरिया समेत कब्जाए गए इलाकों में 2 लाख से ज्यादा महिलाओं को सैनिकों की हवस मिटाने के लिए गुलाम बनाया था।

कच्ची उम्र की एक-एक बच्ची रोज 40 से 50 पके हुए सैनिकों को सर्व करती। जो विरोध करती, उसका गैंगरेप सबक की तरह सारी लड़कियों के सामने होता और फिर बंदूक की नोंक मार-मारकर ही उसकी जान ले ली जाती। गोली से नहीं- क्योंकि सैनिक गुलाम लड़कियों पर गोली भी खर्च नहीं करना चाहते थे।

लड़कियां प्रेगनेंट (गर्भवती) न हों, इसके लिए भी तगड़ा बंदोबस्त था। हर हफ्ते उन्हें एक इंजेक्शन दिया जाता। 'नंबर 606' नाम के इस इंजेक्शन में ऐसा केमिकल होता, जो नसों में घुलकर प्रेगनेंसी को रोकता, या अबॉर्शन हो जाता। दवा के ढेरों साइड-इफेक्ट थे। लड़कियों की भूख मर जाती, चौबीसों घंटे सिरदर्द रहता। पेट में ऐंठन होती और अंदरुनी अंगों से खून रिसता रहता, लेकिन ये कोई समस्या नहीं थी। जरूरी ये था कि वे प्रेग्नेंट हुए बगैर सैनिकों की भूख मिटाती रहें।

पहले ऊंची रैंक के अफसर रेप किया करते, फिर पुरानी होने के बाद लड़कियों को नीचे की रैंक के सैनिकों के पास छोड़ा जाने लगा, लेकिन एक बात कॉमन थी कि रोज पचासों मर्दों की भूख मिटाने वाली किसी लड़की को यौन बीमारी हो जाए वो रातोंरात गायब हो जाती। जापानी सैनिक अपनी साफ-सफाई और हेल्थ को लेकर काफी पाबंद थे!

ये औरतें युद्ध की वो कहानी हैं, जो कभी नहीं कही जाएंगी। या कही भी जाएंगी तो खुसफुसाकर, जैसे किसी शर्म को ढंका जा रहा हो।

जंग में मिट्टी के बाद जिसे सबसे ज्यादा रौंदा-कुचला गया, वो है औरत! विश्व युद्धों के अलावा छिटपुट लड़ाइयों में भी औरतें यौन गुलाम बनती रहीं। अमेरिकी जर्नल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन ड्रग एब्यूज में जिक्र है कि कैसे छोटी-छोटी लड़कियों का यौन शोषण हुआ। सात-आठ साल की बच्चियां जिनके गुदगुदे गाल देखकर प्यार करने को दिल चाहते है, उन बच्चियों को ड्रग्स दिए गए ताकि उनकी देह भर जाए और वे सैनिकों को औरत की तरह सुख दे सकें।

वियतनाम युद्ध में ताकतवर अमेरिकी आर्मी के जाने के बाद देश में बेबी बूम हुआ। एक **... शेष पृष्ठ 29 पर**

अगर परमाणु युद्ध हुआ तो क्या होगा?

परवेज खान

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने एक बार कहा था कि मैं नहीं जानता कि तीसरा विश्वयुद्ध किन हथियारों के दम पर लड़ा जाएगा, लेकिन अगर तीसरा विश्वयुद्ध होता है तो चौथा विश्वयुद्ध कुल्हाड़ी और डण्डों की मदद से लड़ा जाएगा। आइंस्टीन का आशय यह था कि अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो विकसित सभ्यता का अन्त हो जाएगा और दुनिया कबीलाई युग में लौट आएगी।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जब आइंस्टीन सापेक्षतावाद अर्थात General Theory of Relativity का पेपर लिख रहे थे तो वह नहीं जानते थे कि इस पेपर के शब्दों से निकला आधे इंच का जादुई समीकरण $E=mc^2$ मानवता को महाविनाश के ऐसे हथियार थमा देगा, जिनके दम पर इंसान अपना और पृथ्वी का अस्तित्व नेस्तोनाबूद करने के कगार पर पहुँच जाएगा।

प्राचीन काल से मानव की जिज्ञासा का चरमस्रोत यह रहा है कि हम आखिर बने किस चीज़ से हैं?

पच्चतत्वों से प्रोटॉन तक

प्राचीनकाल में माना जाता था कि हम पच्चतत्वों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश) से मिलकर बने हैं। देखा जाए तो वायु अलग-अलग गैसों के अणुओं का मिश्रण, जल, हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन के अणुओं का मिश्रण, पृथ्वी विभिन्न खनिजों, लावा, सिलिकेट आदि का मिश्रण तथा अग्नि मूलभूत कणों का एक अत्यन्त गर्म प्लाज्मा सरीखा मिश्रण मात्र है, इसलिए इन चीज़ों को पदार्थ की मूल इकाई नहीं माना जा सकता। 1803 ईस्वी में जॉन डाल्टन द्वारा परमाणु सिद्धान्त (Atomic Theory) प्रस्तावित किये जाने के बाद 1897 में जे.जे. थॉमसन द्वारा इलेक्ट्रॉन की खोज, 1911 में अर्नेस्ट रदरफोर्ड द्वारा प्रोटॉन की खोज तथा 1932 में चैडविक द्वारा न्यूट्रॉन की खोज के साथ परमाणु के मॉडल की स्थापना हो चुकी थी। तब नई स्थापना यह थी कि पदार्थ परमाणु नामक कणों से मिलकर बना होता है, जिसमें प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन केन्द्र में होते हैं तथा इलेक्ट्रॉन केन्द्र के चक्कर लगाते हैं। देखा जाए तो रसायन विज्ञान (Chemistry) मूलभूत रूप में एक नम्बर गेम मात्र है। अगर आप एक प्रोटॉन हैं तो आपका नाम हाइड्रोजन है। अगर आप दो प्रोटॉन हैं तो हीलियम, तीन प्रोटॉन हैं तो लीथियम, आठ प्रोटॉन हैं तो ऑक्सीजन और 92 प्रोटॉन हैं तो आपका नाम यूरेनियम है। इलेक्ट्रान नेगेटिव चार्ज वाला होता है तो प्रोटॉन पॉज़िटिव चार्ज वाला होता है, लेकिन न्यूट्रॉन के इलेक्ट्रिकली न्यूट्रल होने के कारण न्यूट्रॉन की खोज एटॉमिक बम के निर्माण की पहली कुंजी थी।

नाभिकीय विखण्डन (Nuclear Fission) का जादुई फॉर्मूला

12 सितम्बर 1932 को न्यूट्रॉन की खोज के सिर्फ 7 महीने बाद हंगरी में जन्में वैज्ञानिक लियो जिलार्ड ने प्रस्तावित किया कि अत्यधिक तेज़ गति के साथ अगर परमाणुओं पर इस नए खोज किये गए कण की बमबारी की जाए तो चार्ज रहित होने के कारण प्रोटॉन इस कण को विकर्षित नहीं करेंगे। इस प्रकार न्यूट्रॉन परमाणु के केन्द्र से टकराकर, उसे तोड़कर, परमाणु को दो अन्य तत्वों के परमाणुओं में बदल देगा और प्रक्रिया में पैदा हुए दोनों परमाणुओं का द्रव्यमान मूल परमाणु के द्रव्यमान से कम होगा। चूँकि आइंस्टीन की समीकरण के अनुसार द्रव्यमान को विशुद्ध ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है, इस कारण इस प्रक्रिया में प्रचण्ड ऊर्जा उत्पन्न होगी जिसका उपयोग मानवता के हित और विनाश दोनों के लिए किया जा सकेगा। आसान भाषा में, जब यूरेनियम 235 के केन्द्र पर एक न्यूट्रॉन का प्रहार किया जाता है तो न्यूट्रॉन के टकराने से यूरेनियम क्रमश: रूबिडियम तथा सीजियम नामक तत्वों में विखण्डित हो जाता है और इस प्रक्रिया में यूरेनियम परमाणु से तीन न्यूट्रॉन भी मुक्त होते हैं, जो अन्य परमाणुओं के केन्द्र पर प्रहार करते हैं और प्रक्रिया दोहराई जाती है। इस प्रक्रिया में केन्द्र के विखण्डित होने से केन्द्र को बाँधे रखने वाली स्ट्रॉन्ग फोर्स का निरन्तर क्षय होता है और सेकण्ड के खरबवे हिस्से में इस चेन रिएक्शन के फलस्वरूप प्रचण्ड ऊर्जा उत्पन्न होती है।

हिरोशिमा का 'लिटिल बॉय'

6 अगस्त, 1945 को जापान के हिरोशिमा शहर पर अमरीका ने 'लिटिल बॉय' नाम का परमाणु बम गिराया। इस बम में मौजूद 64 किलोग्राम यूरेनियम का सिर्फ 2 प्रतिशत हिस्सा ही धमाके में इस्तेमाल हो पाया था और इस 2% बचे यूरेनियम के सिर्फ

0.7 ग्राम भाग में ही नाभिकीय विखण्डन की प्रक्रिया शुरू हो पाई थी। फिर भी, सिर्फ 0.7 ग्राम वज़नी यूरेनियम यानी सौ रुपये के नोट से भी हल्की सामग्री से उत्पन्न हुआ विध्वंस अगले ही क्षण हिरोशिमा में 90 हज़ार लाशें बिछाने के लिए काफी था।

नागासाकी पर 'फैटमैन' का निशाना

हिरोशिमा में पहला परमाणु बम गिरने के तीन दिन बाद, 9 अगस्त 1945 को अमरीका ने कैप्टन चार्ल्स स्वीनी को जापान के कोकुरा शहर में दूसरा परमाणु बम फैटमैन गिराने का आदेश दिया। सुबह अपने साथी विमान के रास्ता भटक जाने के कारण हवा में कई घण्टे से उड़ रहे चार्ल्स को अहसास हुआ कि अब उसके विमानों में कोकुरा जाकर वापस आर्मी बेस तक पहुँचने लायक ईंधन नहीं है। इसलिए उसने बम को वैकल्पिक लक्ष्य नागासाकी पर गिराने का आदेश दिया और कुछ ही घण्टों में नागासाकी में 80 हजार ज़िन्दगियाँ मौत के दामन में समा गयीं। वर्ष के आखिर तक हिरोशिमा और नागासाकी में मरने वालों का सम्मिलित आँकड़ा 3 लाख 40 हज़ार को पार कर चुका था। जो बच गए थे उनकी पीढ़ियाँ अब तक रेडिएशन जनित असाध्य रोगों से पीड़ित हैं। ज़मीनें बंजर हो चुकी हैं।

रेडियोएक्टिव फॉलआउट (Radioactive Fallout) के व्यापक खतरे

एक परमाणु बम कितना विध्वंस (destruction) करेगा, यह कई चीज़ों पर निर्भर करता है। जैसे कि बम गिराते समय मौसम, बम गिराने की जगह और बम ज़मीन में फटेगा या आसमान में। एक परमाणु बम की 35% ऊर्जा ऊष्मा के रूप में होती है। उदाहरण के लिए एक मेगाटन क्षमता वाले यानी हिरोशिमा में गिराए गए बम से 80 गुना शक्तिशाली परमाणु बम की बात की जाये तो इस बम के विस्फोट से पैदा हुई चमक दिन में 21 किलोमीटर तथा रात में 85 किलोमीटर दूर तक मौजूद किसी भी व्यक्ति को अन्धा कर देने के लिए पर्याप्त होगी। बम विस्फोट के स्थान से लगभग 10 किलोमीटर व्यास वाले क्षेत्र का तापमान लगभग 3 लाख डिग्री हो जाएगा, जो उस क्षेत्र में मौजूद किसी भी जीवित इंसान के शरीर को मूलभूत कणों में विखण्डित कर देने के लिए पर्याप्त है। बम विस्फोट से पैदा शक्तिशाली आघात तरंगें सभी दिशाओं में दौड़कर उस इलाके में मौजूद सभी इमारतों को ज़मीदोज़ कर देंगी। आँकलन है कि एक मेगाटन क्षमता के बम विस्फोट में 6 किलोमीटर की परिधि में मौजूद सभी चीज़ें विस्फोट से उत्पन्न आघात तरंगों के कारण लगभग 1,80,000 किलोग्राम वज़न के नीचे पिस जाने का अनुभव करेंगी। विस्फोट से उत्पन्न शक्तिशाली गामा–अल्ट्रा वायलेट किरणें इंसानों के शरीर में मौजूद डी.एन.ए. को सीधे नुकसान पहुँचाकर भावी पीढ़ियों के असाध्य रोगों से पीड़ित होने का कारण बनती है। जो इंसान इस विस्फोट में किसी प्रकार ज़िन्दा बच जाएंगे, उनकी चिन्ता का अगला कारण रेडियोएक्टिव फॉल–आउट होगा। एक मेगाटन बम विस्फोट से पैदा हुआ रेडियोएक्टिव फॉल–आउट लगभग 2 हफ़्ते तक अस्तित्व में रहेगा। यह बात सिर्फ एक मेगाटन क्षमता वाले परमाणु बम की हो रही है। आज दुनिया में इससे भी लाखों गुना अधिक क्षमता के परमाणु बम विकसित किये जा चुके हैं। सिर्फ अमरीका और रूस के पास सम्मिलित रूप से 15,000 से ज्यादा परमाणु बम हैं। आज दुनिया की आधी से ज्यादा जनसंख्या लगभग 4400 शहरों में रहती है। अमरीका और रूस चाहें तो दुनिया के हर प्रमुख शहर को नष्ट कर सकते हैं, इसके बावजूद उनके पास 10,000 से ज्यादा बमों का जखीरा शेष रहेगा।

वह हादसा टल गया

दुनिया आज परमाणु हथियारों के ढेर पर बैठी है। एक हल्की सी चिंगारी इस ढेर में आग लगाकर इंसानियत के विनाश की दास्तान लिखने के लिए काफी है। दंभ, लोभ, अहंकार में चूर दुनिया के हुक्मरानों के इस नशे की कीमत आख़िरकार किसे चुकानी होगी? 23 जनवरी, 1961 को 4 मेगाटन क्षमता के एक परमाणु बम को ले जाता एक अमरीकी विमान USB 62 अपना नियन्त्रण खोकर उत्तरी कैरोलाइना प्रान्त में हादसे का शिकार हो गया था और बम विस्फोट की प्रक्रिया अनियंत्रित होकर शुरू हो गयी थी। संयोग से सिर्फ एक सेफ़टी स्विच ऐसा था जो ऑन होने से बच गया था। यह हादसा टल तो गया था लेकिन कहीं अगर यह विस्फोट हो गया होता तो यह तय है कि इससे उस दिन कैरोलाइना का इतिहास और भूगोल हमेशा के लिए बदल गया होता क्योंकि ये बम हिरोशिमा में गिराए गए बम से 260 गुना शक्तिशाली था।

इंसानियत का शीतकाल

अस्सी के दशक में अमरीका और रूस के बीच शीतयुद्ध की तनातनी के दौरान वैज्ञानिक कार्ल सैगन की अगुआई में वैज्ञानिकों के एक दल ने परमाणु युद्ध होने पर होने वाले नुकसानों के आँकलन के लिए एक शोध किया था। उनके

अनुसार असली खतरा परमाणु युद्ध नहीं बल्कि युद्ध के बाद की दीर्घकालीन सर्दियाँ होंगी।

न्यूक्लियर विंटर (Nuclear Winter) !

उदाहरण के लिए, अगर आज भारत और पाकिस्तान जैसे देशों के बीच परमाणु युद्ध होता है और हिरोशिमा जैसे 100 परमाणु बम विभिन्न शहरों पर गिराए जाते हैं, तो दिन ढलने तक लगभग 2 करोड़ मौतों की संभावना है। 2 करोड़ हमारी पृथ्वी की जनसँख्या की तुलना में 1 प्रतिशत भी नहीं हैं, लेकिन बचे हुए 99 प्रतिशत इंसानों की ज़िन्दगी कुछ खास बेहतर नहीं होगी। परमाणु युद्ध का सबसे गम्भीर परिणाम पृथ्वी के मौसम में बदलाव होगा। 100 छोटे परमाणु बमों के इस्तेमाल से लगभग 11 अरब पाउण्ड राख और धूल वातावरण में फैल जाएगी और यह राख सूरज की किरणों से गर्म होकर ऊपर उठती जाएगी और पृथ्वी के घूर्णन के कारण वातावरण में महीन चादर के रूप में फैलकर सूर्य की किरणों के पृथ्वी पर पहुँचने के मार्ग को अवरुद्ध करेगी जिससे पृथ्वी के औसत तापमान में 1 से 2 डिग्री की गिरावट आ सकती है। एक डिग्री शायद सुनने में ज्यादा न लगे लेकिन पृथ्वी के पर्यावरण तन्त्र में जरा-सा बदलाव किस तरह की तबाही का कारण बन सकता है इसके प्रत्यक्ष उदाहरण इसी पृथ्वी पर ढूँढे जा सकते हैं। मिसाल के तैर पर, 1815 में इण्डोनेशिया में बिना किसी पूर्व चेतावनी के तम्बूरा नाम के ज्वालामुखी (Volcano) ने लावा उगलना शुरू कर दिया था। एक लाख लोगों की ज़िन्दगी को तत्काल समाप्त करने के बाद ज्वालामुखी से लगभग 36 घन-मील राख और धूल के बादल पृथ्वी पर छा गए थे जिससे पृथ्वी का तापमान आधा डिग्री काम हो गया था। इस घटना का अगला साल यानी 1816 दुनिया के इतिहास में ग्रीष्महीन वर्ष के रूप में दर्ज है। तब आयरलैण्ड में महामारियों से 65 हज़ार लोग मारे गए थे। इंग्लैण्ड और दूसरे देशों में उस साल गर्मियाँ आयी ही नहीं। गर्मियों में भी लोगों की सुबह बर्फबारी से होती थी। फसलों का चक्र नष्ट होने से दुनिया में हा-हा-कार मच गया था। दुनिया भर में लाखों लोग मारे गए थे और यह सब तब हुआ जब पृथ्वी के तापमान में सिर्फ आधा डिग्री की गिरावट दर्ज की गई थी।

ज़रा सोचिए

युद्ध में इस्तेमाल परमाणु बमों से उत्पन्न आघात तरंगों (Shock Waves) और ऊष्मा के कारण वातावरण में मौजूद नाइट्रोजन, ऑक्साइड का निर्माण करेगी जो हमारी ओजोन परत को गम्भीर नुकसान पहुँचाती है। ओजोन परत के नुकसान के कारण अल्ट्रावायलेट किरणों और रेडियोएक्टिव फॉल-आउट से बचने के लिए पृथ्वी पर बचे इंसानों को कुछ साल ज़मीन के नीचे बंकरों में रहकर एक अवसादपूर्ण ज़िन्दगी बितानी होगी। दस साल में वातावरण में फैली राख और धूल के बादल साफ होने की उम्मीद है। तब इंसान एक बार फिर ज़मीन के ऊपर अपने आशियानों में वापस आ पाएंगे लेकिन तब तक दो अरब लोगों की भुखमरी और महामारियों के कारण मौत हो चुकी होगी, दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं ठप हो चुकी होंगी और शासन प्रणालियां ध्वस्त हो चुकी होंगी, हर तरफ लूट और अराजकता का देर होगा। टूटी इमारतों के खण्डहर और हर तरफ इंसानी गोश्त के बिखरे लोथड़े हमें मुँह चिड़ा रहे होंगे।

गलत हाथों में विज्ञान की चाबी

परमाणु बम की यह दास्तान लिखने के पीछे मेरा मुख्य उद्देश्य यही है कि आमजन यानी हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न कर पाएं। हमें समझना होगा कि जिस विज्ञान ने हमारे घरों को बिजली के आविष्कार से रोशन किया है, मोबाइल, फ्रिज, सैटेलाइट आदि से जीवन को आसान बनाया है, वही हमारे अन्त की इबारत लिखने में भी सक्षम है। तथाकथित लोकतंत्र में हमारे हुक्मरान अगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण नहीं हैं और अपने क्रियाकलापों के परिणाम नहीं समझेंगे तो विनाश को कोई नहीं रोक सकता।

अज्ञानता और सत्ता का मेल महाविनाश की निर्माण-सामग्री होता है।

जैसे-जैसे एक सभ्यता उन्नति के पायदान पर कदम बड़ाती है, वैसे-वैसे वह परमाणु हथियारों के रूप में अपनी आत्महत्या का सामान भी तैयार करती है। विज्ञान ज़िन्दगी संवारता है और यही जिन्दगी का खात्मा भी कर सकता है। एक माचिस की तीली अगर किसी घर का चूल्हा जलाती है तो उसी तीली के इस्तेमाल से किसी का घर भी जलाया जा सकता है।

- मेरठ

उठ जाग ओ भूखे बन्दी
अब खीचों लाल तलवार।

- यूजीन पोतिए

ईश्वर का उन्मूलन

पेरियार ई.वी. रामासामी

किसी भी देशभक्त अथवा मानवतावादी सरकार, लोक सेवा संस्थान अथवा सामाजिक चेतना सम्पन्न व्यक्ति का सबसे अहम दायित्व है-देश के लोगों को बुद्धिमान बनाना और उनमें तार्किक विचार को जन्म देना। निश्चित रूप से ऐसे प्रयास किए जाने चाहिए; ताकि लोगों का जीवन स्तर सुधर सके। उनको चिंताओं और दिक्कतें से मुक्ति मिल सके और आर्थिक और सामाजिक समता कायम हो सके। इन गुणों से युक्त राज्य को ही सही मायनों में एक मुक्त राज्य कहा जा सकता है। अगर यह बातें उसमें मौजूद नहीं हैं, तो राज्य बस एक जेल बनकर रह जाएगा। ऐसा समाज दासों का समाज होगा।

आम तौर पर राजाओं द्वारा शासित राज्य और समाज अपनी अलग तरह की दिशा तय करते हैं। ऐसे शासक धर्म और धार्मिक सिद्धांतों को शासन का आधार बनाते हैं। बहरहाल, एक लोकतांत्रिक राज्य का आधार बुद्धिमत्ता और स्वतंत्रता को होना चाहिए। धर्म और धर्म-शास्त्र के निर्माण का एकमात्र उद्देश्य बौद्धिकता और आजादी को नष्ट करना और लोगों को मूर्ख और दास बनाना है। यह उस समय चलन में आया, जब मनुष्य आदिम अवस्था में रहा करता था; कमोबेश जानवरों की तरह। जिस प्रकार लोग भूत-प्रेत और आत्माओं से भयभीत रहते थे, ठीक वही डर धर्म और धार्मिक शास्त्र भी पैदा करते थे।

हालांकि, धर्म और धर्म-सिद्धांतों में ईश्वर ही प्राथमिक शक्ति था; लेकिन हमें यह कहना होगा कि ईश्वर और धार्मिक लेखन और शास्त्र की अवधारणा प्राय: विपरीत थी। ऐसा इसलिए, क्योंकि ईश्वर की अवधारणा की शुरुआत अज्ञानता से हुई। धर्म और धर्म लेखों का उद्‌भव बेईमानी से हुआ। यानी लोगों को बेवकूफ बनाने और उनको दास बनाने के इरादे से इनकी शुरुआत हुई। दुनिया भर के बुद्धिमान लोगों ने इसका समर्थन किया; खासतौर पर पश्चिम के जाने -माने विद्वानों ने।

उन्होंने कहा-'आप ईश्वर की अवधारणा रचने वाले व्यक्ति को माफ कर सकते हैं; वह अज्ञानी था। वह अपनी बौद्धिक अक्षमता की वजह से ऐसा विचार तैयार करने पर मजबूर हुआ। लेकिन, धर्म और धर्म शास्त्र (आत्मा, स्वर्ग, नर्क) आदि का निर्माण करने वाला व्यक्ति ईमानदार नहीं रहा होगा। उसने ऐसा केवल लोगों को भयभीत करने के लिए किया।' ईश्वर का निर्माण करने वाले व्यक्ति का इस बात पर जोर था कि कोई-न कोई ऐसी शक्ति है, जिसने यह विश्व और इसकी व्यवस्था निर्मित की होगी। उसने ईश्वर के अस्तित्व को संदेह का लाभ दिया।

लेकिन, धर्म और धर्म-शास्त्र के साथ यह बात नहीं है। यह एक पूर्ण झूठ है; जिसका निर्माण लोगों को धोखा देने और उनका शोषण करने के लिए, उनके बीच भेद उत्पन्न करने के लिए किया गया। धर्म और धर्म-सिद्धांतों की रचना इसी उद्देश्य से की गई। इसका सबसे बड़ा सबूत यही है कि दुनिया में अलग-अलग तरह के धर्म और धर्म-शास्त्र हैं और वे सभी एक-दूसरे से विरोधाभासी हैं। दूसरा सबूत यह है कि इसके रचयिता मानवीय प्रकृति से ऊपर प्रतीत होते हैं और हिन्दू-धर्म के शास्त्र प्राकृतिक कानूनों से विरोधाभासी हैं।

ये न केवल हमारी बौद्धिकता को नष्ट करते हैं, बल्कि हमारे चरित्र को भी क्षति पहुंचाते हैं। इनकी वजह से हमारी ईमानदारी, प्रेम, एकता, समता आदि सभी प्रभावित होते हैं। हमारे विकास पर असर पड़ता है; विज्ञान को नुकसान पहुंचता है और अज्ञानता को बढ़ावा मिलता है। हम इस सब बातों के खिलाफ हैं। आपको यहे सारी बातें समझने के लिए बहुत दूर जाने की आवश्कयता है। इनका उत्तर तो अपने धर्म और उसके सिद्धांतों का विश्लेषण करके ही मिल जाएगा।

यह विचार दीगर है कि हम तमिलों (द्रविडों) का कोई देवता है भी या नहीं। लेकिन, हम हिन्दू- धर्म को अपना धर्म मानते रहे हैं। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी चूक है। ऐसा क्यों?

आखिर हिन्दू-धर्म है क्या? इसका अर्थ क्या है? धर्म शब्द की बात करें, तो इस्लाम अथवा ईसाइयत के गुणों के आधार पर पहचान करें, तो क्या इसका कोई आदर्श, कोई प्राधिकार या कोई इतिहास है? क्या हिन्दुत्व का कोई उल्लिखित सिद्धांत है या इसे लेकर कोई लेखन **... शेष पृष्ठ 19 पर**

तांत्रिक की दहशत के चलते

बलवन्त सिंह लेकचरार

दर्शन सिंह एवं नरेन्द्र सिंह दोनों भाई खेती बाड़ी के कार्य से जुडे हुए थे। दोनों की 15-16 एकड़ कृषि योग्य जमीन थी, अतः उनका गुज़ारा बहुत अच्छे से चल रहा था। दर्शन सिंह की दो बेटिया एवं एक बेटा था। उसकी बड़ी बेटी कनाडा में पढ़ाई कर रही थी तथा छोटी बेटी एवं बेटा यहां पर एक पब्लिक स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। दर्शन सिंह के छोटे भाई नरेन्द्र सिंह की शादी को 7-8 साल बीत चुके थे परंतु अभी तक उनके घर में कोई संतान पैदा नहीं हुई थी। नरेन्द्र सिंह ने अपनी पत्नी मनजीत कौर का डॉक्टरी चैक अप करवाया। डाक्टरी मुआयने में मनजीत कौर के गर्भाशय में सूजन की रिपोर्ट आई। लेडी डाक्टर ने मनजीत कौर को कुछ महीनों के लिए नियमित तौर पर दवाई खाने का निर्देश दे दिया। मनजीत कौर कुछ दिनों तक तो दवाई लेती रही, इसी दौरान किसी जरूरी कार्य के कारण उसे अपने मायके में जाना पड़ गया।

मनजीत कौर का मायका परिवार काफी निर्धन परिवार था उनके पास नाममात्र की जमीन थी। उसकी पिता बंटाई अथवा ठेके पर ज़मीन लेकर अपने परिवार का गुज़ारा जैसे-कैसे करते चले आ रहे थे। मनजीत उनकी बड़ी लड़की थी और उससे छोटे उसके दो भाई थे। मनजीत कौर का परिवार किसी बाबा का पक्का श्रद्धालू था। उनके लिए किसी भी शुभकार्य को शुरू करने से पूर्व उस बाबा की सहमति आत्यावश्यक थी। मनजीत ने अपने मायके में आकर डाक्टरी जांच करवाने की रिपोर्ट की बात अपनी मां को बता दी। उसकी मां उसे लेकर अगले ही दिन उसी बाबा की शरण में पहुंच गई। उनकी सारी बात सुन कर वह बाबा अपनी आंखें बंद कर के अंतर्ध्यान की मुद्रा में कुछ समय के लिए बैठ गया। फिर कुछ समय के पश्चात् अपनी अंखें खोल कर उसने भयभीत करने वाले अंदाज में घोषित कर दिया कि 'इस लड़की पर तो ससुराल में जाकर वहां के भूत-प्रेत एवं पित्तरों की पकड़ हो गई है। अब जब तक इसे इन भूत-प्रेतों से छुटकारा नहीं मिल जाता, तब तक इसे चाहे लाखों रुपयों की दवाई खिला दो फिर भी इसकी गोद हरी नहीं हो सकेगी।'

उस बाबा का मनजीत के मायका परिवार पर बहुत बड़ा प्रभाव था। दरअसल उस बाबा के श्रद्धालु तो वे पहले से ही थे और समय-समय पर बाबा की शरण में जाते ही रहते थे। जब मनजीत की आयु शादी के लायक हुई तो मनजीत की मां उस बाबा के सामने मनजीत के लिए किसी अच्छे वर के लिए वरदान मांगा करती थी। उस बाबा ने मनजीत की मां को 'वरदान' दे दिया था कि मनजीत का रिश्ता किसी अच्छे और संपन्न परिवार में ही होगा। मनजीत पढ़ाई-लिखाई में काफी होशियार थी। इसके साथ ही वह स्कूल स्तर के खेलों में हमेशा प्रथम स्थान पर आया करती थी, जिला स्तर की खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए उसका चयन हो चुका था। रंग रूप में भी वह बेहद सुंदर थी । उधर नरेन्द्र साधारण से व्यक्तित्व का मालिक था। वह आमतौर पर सीधी-साधी वेशभूषा में ही रहता था। उसमें आम नौजवानों जैसी तेज-तर्रारी नहीं थी इसके साथ-साथ वह दब्बू किस्म के स्वभाव वाला व्यक्ति भी था। उसके इस सीधेपन एवं दब्बू स्वभाव के कारण उसका पहले ही दो बार रिश्ता टूट चुका था। उसका रिश्ता सिरे न चढ़ने के कारण उसके घरवाले अत्यंत परेशान थे। इसी कारण अब वे किसी गरीब घर की गुणवान लड़की के साथ नरेन्द्र का रिश्ता तय करने के चाहवान थे।

इस दौरान उनके एक रिश्तेदार उनकी भावनाओं को समझते हुए नरेन्द्र के लिए मनजीत का रिश्ता लेकर आ गया। नरेन्द्र के घर वालों ने जब लड़की को देखा तो वे रिश्ते के लिए एकदम सहमत हो गये। इस प्रकार से उनका रिश्ता तय हो गया और समय आने पर उन दोनों की शादी हो गई। अब एक अच्छे संपन्न घर में अपनी बेटी का रिश्ता तय हो जाने पर मनजीत की मां उसे उस बाबा का वरदान ही मान रही थी। अतः वह बाबा की किसी भी बात की अवज्ञा कर ही नहीं सकती थी। अब जब मनजीत ने अपनी मां को लेडी डॉक्टर के ईलाज की बात बताई और मां ने यह बात उस बाबा के साथ साझा की तो उस बाबा को अपना शिकार हाथों से खिसकता हुआ महसूस होने लगा। अतः इस बाबा ने उनकी मानसिक कमजोरी का फायदा उठाते हुए उन्हें उन की बेटी पर भूत-प्रेतों का छाया होने की बात कह कर पूरी तरह से भयभीत कर दिया। अब उस बाबा ने मनजीत के गले में अपने हाथों से एक ताबीज बांध दिया तथा राख का एक लिफाफा 'पवित्र भभूति' कह कर खाने के लिए

उन्हें पकड़ा दिया। उसके बाद उस बाबा ने उन्हें डॉक्टरी ईलाज करवाने के लिए भी कह दिया।

गले में बाबा द्वारा दिया गया ताबीज पहन कर तथा साथ में 'पवित्र भभूति' का लिफाफा ले कर मनजीत अपने ससुराल में आ गई। ससुराल में उनका सारा परिवार अमृतधारी परिवार था। उनको मनजीत द्वारा किसी बाबा का दिया हुआ ताबीज गले में पहनना और राख को पवित्र भभूत कह कर खाना बुरा लग रहा था। परिवार वालों ने जब मनजीत से इस बाबत आपत्ति जताई तो मनजीत उनकी बात का बुरा मन गई और उन्हें ताना देने लगी कि वे लोग उसकी गोद में बच्चा होते देखनां नहीं चाह रहे हैं। अतः परिवार वाले सभी चुप हो गये। अब मनजीत ने बाबा की भभूति खाने के साथ डाक्टरी इलाज करवाना भी शुरू कर दिया था।

इसी दौरान दर्शन सिंह की पत्नी सुखविन्द्र कौर को अधरंग का अटैक आ गया। वे उसका डाक्टरी ईलाज करवाते रहे परंतु उनके कथनानुसार उसके स्वास्थ्य में पूरा सुधार नहीं हो रहा था। अंत में किसी रिश्तेदार की सलाह पर वे उसे मार्कण्डा नदी के किनारे अपना आश्रम बना कर बैठे एक तांत्रिक के पास ईलाज के लिए चले गये। उस तांत्रिक के पास उन्होंने पांच चौकियां भरीं। वह तांत्रिक उन्हें 'पवित्र जल' बना कर देता रहा। तांत्रिक ने उनके मन में पक्का विश्वास बिठा दिया था कि उनके किसी 'नजदीकी रिश्तेदार' ने ही उस पर प्रेतात्माओं का चक्कर चलाया हुआ है तथा इस 'पवित्र जल' से उन सभी बुरी आत्माओं का चक्कर खत्म हो जाएगा। और वह बिल्कुल तंदरुस्त हो जाएगी। उसकी इन बातें को पूर्णतः सत्य मानने लगे और इस मानसिक प्रभाव से सुखविन्द्र को थोड़ा-थोड़ा आराम का भान होने लगा। अपनी बातों का प्रभाव जमा कर उसने बीस हज़ार रूपये वसूल कर लिये। सुखविन्द्र अपना डाक्टरी ईलाज भी करवाती रही तथा तांत्रिक द्वारा दिया गया 'पवित्र जल' भी ग्रहण करती रही। इस प्रक्रिया में लगभग तीन-चार महीने बीत गये। सुखविन्द्र को काफी आराम आ चुका था। एक दिन उस तांत्रिक का उन्हें फोन आ गया और हाल-चाल पूछने के पश्चात् उसने किसी विशेष अनुष्ठान को सम्पन्न करवाने के नाम पर उनसे और 15000 रुपये की मांग कर दी। जब उन्होंने आगे से कहा कि 20 हज़ार तो वे उसे पहले ही दे चुके हैं तो उसने आगे से उन्हें धमका दिया कि सुखविन्द्र के स्वास्थ्य को हमेशा के लिए ठीक रखने के लिए इस अनुष्ठान का आयोजन करना बहुत जरूरी है। उसने आगे से यह भी धमकी दे डाली कि यदि उन्होंने इस अनुष्ठान के लिए उसे 15 हज़ार रुपये नहीं दिये तो सुखविन्द्र की हालत फिर से पहले जैसी ही हो जाएगी। उसकी इन बातों को सुन कर सुखविन्द्र फिर से लंगड़ा कर चलने लग गई। फिर कुछ ही दिनों से उस की हालत बहुत ज्यादा बिगड़ गई और उसका बिस्तर से उठ पानाबहुत मुश्किल हो गया। परेशान हो कर वे फिर से उसे लेकर उस तांत्रिक की शरण में पहुंच गये और 15 हज़ार रुपय उन्होंने तांत्रिक के चरणों में रख दिये। परंतु अब तांत्रिक का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच चुका था, उसने वह रुपये उठा कर वापिस उनके मुंह पर फैंक दिये। इतना अपमान देख कर दर्शन सिंह का स्वाभिमान जागृत हो उठा और वह अपनी पत्नी को गाड़ी में बिठा कर वापिस घर आ गया। अब वह रोजाना सुबह शाम गुरुद्वारे में जा कर अपना माथा रगड़ता और अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के लिए गुरुद्वारे में विशेष अरदास करवाने ले गया, परंतु सुखविन्द्र की हालत और अधिक खराब होती चली जा रही थी।

एक दिन उसकी हालत देख कर उनके एक परिचित ने उन्हें तर्कशील सोसायटी द्वारा किये जा रहे जनहित के कार्यो के बारे में बता कर उन्हें मेरा फोन नंबर देकर मेरे पास भेज दिया। वे सुखविन्द्र को ले कर रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केन्द्र में सितंबर 2020 के एक रविवार को मेरे पास पहुंच गये। मैंने उन दोनों पति-पत्नी को सामने बैठा कर उनसे सारे घटनाक्रम की विस्तार से जानकारी प्राप्त की । उनके साथ की गई बातचीत से सुखविन्द्र की कमजोर मानसिकता के कारण उसके अवचेतन मन में बैठी हुई ओपरी-पराई के मनोभ्रम एवं तांत्रिकों द्वारा किये जाने वाले 'काले इल्म' की दहशत स्पष्ट रूप में दिखाई दे रही थी। मैंने उसकी मनोदशा को समझ कर लंबी काऊंसलिंग द्वारा मानसिक तौर पर मजबूत रहने के बार बार सुझाव प्रदान किये। इस प्रकार से अपनी मानसिक मजबूती को पाकर उठने के पश्चात् वह अपने आप को बिल्कुल ठीक महसूस कर रही थी। उनके साथ बातचीत में मनजीत की अंधविश्वासी मनसिकता के बारे जानकारी मिलने पर मनजीत की मनोदशा का हल करना भी मैंने बहुत जरूरी समझा अब मैंने उन्हें अगले रविवार को मनजीत को भी अपने साथ ले कर आने का निर्देश दिया। अगले रविवार को मनजीत भी उनके साथ आ गई। उस दिन सुखविन्द्र बिल्कुल ठीक से चल-फिर रही थी। सुखविन्द्र को घर में बिल्कुल ठीक प्रकार से चलता-फिरता देख कर मनजीत भी उनके साथ मेरे पास आने के लिए तैयार

हो गई थी। काऊंसलिंग द्वारा सुखविन्द्र का मनोबल बढ़ाने के पश्चात मैंने मनजीत को अपने पास बुला लिया। पहले-पहल तो मनजीत बातचीत में कोई सहयोग नहीं दे रही थी, परंतु जब मैंने उससे उसके मां-बाप की गरीबी की मजबूरी के कारण होशियार होने के बावजूद भी अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने की बात करनी शुरू की तथा एक अच्छी खिलाड़ी होने के कारण उसका चमकता हुआ कैरियर बर्बाद हो जाने जैसे बातों के विषय में बातचीत आरम्भ कर दी तो वह धीरे-धीरे ध्यानपूर्वक मेरी बातें सुनने लग गई और अपना सहयोग देने लग गई। धीरे-धीरे उसने खुल कर अपने मायका परिवार का एक बाबा पर पूर्ण विश्वास तथा बाबा के वरदान से एक संपन्न परिवार में शादी हो जाने तथा अब बाबा के ताबीज एवं 'पवित्र भभूति' के सेवन से उसकी गोद हरी हो जाने के विश्वास के बारे में अपने मन की सारी बातें बता दीं। फिर जब मैंने सवाल किया कि जब उसे बाबा के ताबीज और राख पर ही भरोसा है तो वह लेडी डाक्टर के निर्देशानुसार अपना डॉक्टरी ईलाज क्यों करवा रही है? इस सवाल पर वह बगलें झांकने लग गई। साथ जब मैंने उसे सवाल किया कि यदि उस बाबा के आशीर्वाद से ही उसकी शादी इतने संपन्न परिवार में हो सकी है तो फिर उसे ससुराल में कोई दुख-तकलीफ भी नहीं होनी चाहिए। इस पर वह फफक-फफक कर रोने लग गई तथा कहने लगी कि उसकी सास तथा जेठानी उससे ईर्ष्या करती हैं तथा बात-बात पर उसे उसकी मां द्वारा बाबाओं की शरण में जाने के ताने देती रहती हैं जिससे उसका मन अत्यधिक दुखी हो जाता है, फिर उसका मन करता कि वह इस घर को छोड़ कर कहीं भाग जाए। मैंने जब सवाल किया कि 'फिर बाबा का वरदान कहां गया? तो वह निरुत्तर हो कर बैठ गई और मेरी बातों से पूरी तरह से सहमति प्रदान करने लग गई। फिर मैंने उसे वैज्ञानिक चिंतन वाला रास्ता अपनाने की सलाह दी और ताबीज एवं भभूति आदि को छोड़ कर डॉक्टरी निर्देशों के अनुसार अपना सही ईलाज करवाने की सलाह दी। उसने मेरे समझाने पर मेरे सामने ही अपने गले में बांधा हुआ ताबीज उतार कर फैंक दिया तथा उचित डाक्टरी ईलाज करवाने का संकल्प लिया।

डाक्टरी ईलाज से संतुष्ट मनजीत अब एक बच्चे की मां है और परिवार में पूर्णतः प्रसन्नता के साथ रह रही है। काऊंसलिंग द्वारा सुखविन्द्र के मन से भी तांत्रिकों की दहशत को पूरी तरह से दूर कर दिया गया और अब वह बिल्कुल स्वस्थ जीवन व्यतीत रही है।

कारणः

यद्यपि उनका परिवार अमृतधारी गुरसिख परिवार था परंतु अंधविश्वास उनके रोम-रोम में समाया हुआ था। कहने को तो वे अंधविश्वासों के विरोध की बात करते थे परतु हकीकत में वे अंधविश्वासों में आकण्ठ डूबे हुए थे। सुखविन्द्र की आयु उस समय 45-46 वर्ष की थी जब उसे अध ारंग का दौरा पड़ा था। यदि न्यूरो सर्जन द्वारा उसक ठीक ढंग से ईलाज करवाया जाता तो वह कुछ ही दिनों में पूर्णतः स्वस्थ्य हो जाती। परंतु वे न्यूरो सर्जन से उसका ईलाज करवाने के बजाए साधारण से डाक्टरों उसका ईलाज करवाते रहे, जिस के कारण उसके स्वास्थ्य में शीघ्रता से सुधार नहीं हो रहा था। उसके मन में अपनी देवरानी मनजीत की मां द्वारा बाबाओं के द्वारा करवाये गये जादू-टोनों की दहशत भी भरी पड़ी थी। इसी कारण डॉक्टरी ईलाज के साथ-साथ वे मारकण्डा नदी किनारे आश्रम में बैठे एक तांत्रिक की शरण में भी पहुंच गये। तांत्रिक की बातों का प्रभाव उसके अवचेतन मन पर पड़ा और उसके स्वास्थ्य में थोड़ा बहुत सुधार होने लग गया। धीरे- धीरे चौकियां भरने समय बीतने पर उसकी सेहत में सुधार भी बढ़ता चला गया। इस दौरान तांत्रिक ने अपने इल्म के नाम पर 20 हज़ार रुपये ठग लिये। जब कुछ और समय बीत गया और सुखविन्द्र का स्वास्थ्य भी लगभग ठीक हो गया तो उस तांत्रिक ने एक विशेष अनुष्ठान करने के नाम पर उनसे 15 हज़ार रुपये फिर से ठगने की चाल चल दी। उस तांत्रिक की बातों को सुनकर सुखविन्द्र कौर के मन में फिर से दहशत फैल गई। अब अवचेतन मन में बैठी इसी दहशत के चलते उसके शरीर के अंगों में अधरंग जैसी समस्या पैदा होने लग गई। डर कर जब वे उसकी शरण में फिर से गये तो अपनी अकड़ और अपना रौब दिखाते हुए उसने वे पैसे उनके मुंह पर फैंक दिये। वे निराश हो कर घर आ गये। परंतु अवचेतन मन में बैठी दहशत के कारण सुखविन्द्र की हालत पहले से भी खराब होती चली गई।

हमने वैज्ञानिक ढंग से हालात का विश्लेषण किया और मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग द्वारा उसके अवचेतन मन में से तांत्रिकों की दहशत को पूरी तरह से निकाल दिया और वह बिल्कुल तंदरुस्त हो गई।

नोटः यह एक सत्य घटना है, परिस्थितवश सभी पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं।

मधुमक्खी

- कबीर संजय

मधुमक्खी अपनी जिंदगी में कभी नही सोती। ये इतनी मेहनती होती है कि पूछो मत! एक बूंद शहद के लिए दूर-दूर तक उड़ती है। आजकल तो फिर भी कम हो गए लेकिन पहले मधुमक्खियों के छत्ते जगह-जगह पेड़ो पर, दीवारों पर लटके मिल जाते थे। आपके मन में उस समय कुछ सवाल आए होगे, चलिए आज रोचक तथ्यों के माध्यम से Honey Bee से जुड़ी हर जानकारी से आपको रूबरू करवाते है:

- मधुमक्खियों की 20,000 से ज्यादा प्रजातियाँ है लेकिन इनमें से सिर्फ 5 ही शहद बना सकती है।
- एक छत्ते में 20 से 60 हजार मादा मधुमक्खियाँ, कुछ सौ नर मधुमक्खियाँ और 1 रानी मधुमक्खी होती है। इनका छत्ता मोम से बना होता है जो इनके पेट की ग्रंथियों से निकलता है।
- मधुमक्खी धरती पर अकेली ऐसी कीट (insects) है जिसके द्वारा बनाया गया भोजन मनुष्य द्वारा खाया जाता है।
- केवल मादा (यानि वर्कर मधुमक्खियां) मधुमक्खी ही शहद बना सकती है और डंक मार सकती है। नर मधुमक्खी (drones) तो केवल रानी के साथ सेक्स करने के लिए पैदा होते है।
- किसी आदमी को मारने के लिए मधुमक्खी के 100 डंक काफी है।
- मधुमक्खी, शहद को पहले ही पचा देती है इसलिए इसे हमारे खून तक पहुंचने में केवल 20 मिनट लगते है।
- मधुमक्खी 24 KM/H की रफ्तार से उड़ती है और एक सेकंड में 200 बार पंख हिलाती है। मतलब, हर मिनट 12,000 बार।
- कुत्तों की तरह मधुमक्खियों को भी बम ढूंढना सिखाया जा सकता है। इनमें 170 तरह के सूंघने वाले रिसेप्टर्स होते है जबकि मच्छरों में सिर्फ 79।
- मधुमक्खी फूलों की तलाश में छत्ते से 10 किलोमीटर दूर तक चली जाती है। यह एक बार में 50 से 100 फूलों का रस अपने अंदर इकट्ठा कर सकती है। इनके पास एक एंटिना टाइप छड़ी होती है जिसके जरिए ये फूलों से 'nectar' चूस लेती है। इनके पास दो पेट होते है कुछ nectar तो एनर्जी देने के लिए इनके मेन पेट में चला जाता है और बाकी इनके दूसरे पेट में स्टोर हो जाता है। फिर आधे घंटे बाद ये इसका शहद बनाकर मुंह के रास्ते बाहर निकाल देती है। जिसे कुछ लोग उल्टी भी कहते है। (नोट: nectar में 80% पानी होता है मगर शहद में केवल 18-20% पानी होता है।)
- 1 किलो शहद बनाने के लिए पूरी मधुमक्खियों को लगभग 40 लाख फूलों का रस चूसना पड़ता है और 90,000 मील उड़ना पड़ता है, यह धरती के तीन चक्कर लगाने के बराबर है।
- पूरे साल मधुमक्खियों के छत्ते के आसपास का तापमान 33°C रहता है। सर्दियों में जब तापमान गिरने लगता है तो ये सभी आपस में बहुत नजदीक हो जाती है ताकि गर्मी बनाई जा सके। गर्मियों में ये अपने पंखों से छत्ते को हवा देती है। आप कुछ दूरी पर खड़े होकर इनके पंखो की 'हम्म' जैसी आवाज सुन सकते है।
- एक मधुमक्खी अपनी पूरी जिंदगी में चम्मच के 12वें हिस्से जितना ही शहद बना पाती है। इनकी जिंदगी 45-120 दिन की होती है।
- नर मधुमक्खी, सेक्स करने के बाद मर जाती है, क्योंकि सेक्स के आखिर में इनके अंडकोष फट जाते है।
- नर मधुमक्खी यानि Drones का कोई पिता नही होता, बल्कि सीधी माता होती है क्योंकि ये unfertilized eggs से पैदा होते है। ये वो अंडे होते है जो रानी मधुमक्खी बिना किसी नर की सहायता के स्वयं अकेले पैदा करती है। इसलिए इनका पिता नही होता केवल माता होती है।
- शहद में 'Fructose' की मात्रा ज्यादा होने की वजह से यह चीनी से भी 25% ज्यादा मीठा होता है।
- शहद, हजारों साल तक भी खराब नही होता। यह एकमात्र ऐसा फूड है जिसके अंदर जिंदगी जीने के लिए आवश्यक सभी चीजें पाई जाती है। हमें जीने के लिए 84 पोषक तत्वों की जरूरत होती है, जबकि शहद में 83 तत्व पायें जाते हैं। बस एक तत्व नही मिलता और वो है वसा। Enzymes: इसके बिना हम सांस ली गई ऑक्सीजन का भी प्रयोग नही कर सकते, Vitamins: पोषक तत्व, Minerals: खनिज पदार्थ, Water: पानी etc. यह अकेला ऐसा भोजन भी है जिसके

अंदर 'pinocembrin' नाम का एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है जो दिमाग की गतिविधियाँ बढ़ाने में सहायक है।

– रानी मधुमक्खी पैदा नही होती बल्कि यह बनाई जाती है। यह 3–4 दिन की होते ही सेक्स करने के लायक हो जाती है। ये नर मधुमक्खी को आकर्षित करने के लिए हवा में 'pheromone' नाम का केमिकल छोड़ती है। जिससे नर भागा चला आता है फिर ये दोनों हवा में सेक्स करते है।

– रानी मधुमक्खी की उम्र 3 साल तक हो सकती है। यह छत्ते की अकेली ऐसी मेम्बर है जो अंडे पैदा करती है। यह सर्दियों में बहुत व्यस्त हो जाती है क्योंकि इस समय छत्ते में मधुमक्खियों की जनसंख्या अधिक हो जाती है। ये जिंदगी में एक ही बार सेक्स करती है और अपने अंदर इतने स्पर्म इकट्ठा कर लेती है कि फिर उसी से पूरी जिंदगी अंडे देती है। यह एक दिन में 2000 अंडे दे सकती है। मतलब, हर 45 सेकंड में एक।

– 28 ग्राम शहद से मधुमक्खी को इतनी शक्ति मिल जाती है कि वो पूरी धरती का चक्कर लगा देगी।

– धरती पर मौजूद सभी जीव–जंतुओं में से, मधुमक्खियों की भाषा सबसे कठिन है। 1973 में 'Karl von Frisch' को इनकी भाषा "The Waggle Dance" को समझने के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था।

– एक छत्ते में 2 रानी मधुमक्खी नही रह सकती, अगर रहेगी भी तो केवल थोड़े समय के लिए, क्योंकि जब दो Queen Bee आपस में मिलती है तो वे दोस्ती करने की बजाय एक दूसरे पर हमला करना पसंद करती है और ये तब तक जारी रहता है जब तक एक की मौत न हो जाए।

– रानी मधुमक्खी (Queen Bee) पैदा क्यों नही होती, ये बनाई क्यों जाती है ?

Ans. वर्कर मधुमक्खियाँ मौजूदा क्वीन के अंडे को फर्टीलाइज़ करके मोम की 20 कोशिकाएँ तैयार करती है। फिर युवा नर्स मधुमक्खियाँ, Queen के लार्वा से तैयार एक विशेष भोजन जिसे 'Royal Jelly' कहा जाता है, की मदद से मोम के अंदर कोशिकाएँ निर्मित करती है। ये प्रकिया तब तक जारी रहती है जब तक कोशिकाओं की लंबाई 25mm तक न हो जाए। निर्माण की प्रकिया के 9 दिन बाद ये कोशिकाएँ मोम की परत से पूरी तरह ढक दी जाती है। आगे चलकर इसी से रानी मधुमक्खी तैयार होती है।

– यदि छत्ते की रानी मधुमक्खी मर जाए तो क्या होगा?

Ans. रानी मधुमक्खी लगातार एक खास़ तरह का केमिकल 'फेरोमोन्स' निकालती रहती है। जब यह मर जाती है तो काम करने वाली मधुमक्खियों को इसकी महक मिलनी बंद हो जाती है। जिससे उन्हें पता चल जाता है कि रानी या तो मर गई या फिर छत्ता छोड़कर चली गई। रानी मधुमक्खी के मरने से पूरे छत्ते का विनाश हो सकता है क्योंकि यदि ये मर गई तो फिर नए अंडे कौन पैदा करेगा। इसकी मौत के बाद काम करने वाली मधुमक्खियों को सिर्फ 3 दिन के अंदर–अंदर कोशिका निर्माण कर नई Queen Bee बनानी पड़ती है।

–यदि धरती की सारी मधुमक्खी खत्म हो जाए तो क्या होगा ?

Ans. अगर ऐसा हुआ तो मानव जीवन भी धीरे–धीरे खत्म हो जाएगा। क्योंकि धरती पर मौजूद 90% खाद्य वस्तुओं का उत्पादन करने में मधुमक्खियों का बहुत बड़ा हाथ है। बादाम, काजू, संतरा, पपीता, कपास, सेब, कॉफी, खीरे, बैंगन, अंगूर, कीवी, आम, भिंडी, आड़ू, नाश्पाती, मिर्च, स्ट्राबेरी, किन्नू, अखरोट, तरबूज आदि का परागन मधुमक्खी द्वारा होता है। जबकि गैंहू, मक्कें और चावल का परागण हवा द्वारा होता है। इनके मरने से 100 में 70 फसल तो सीधे तौर पर नष्ट हो जाएगी, यहाँ तक कि घास भी नही उगेगा। महान वैज्ञानिक 'अल्बर्ट आइंस्टीन' ने भी कहा था कि अगर धरती से मधुमक्खियाँ खत्म हो गई तो मानव प्रजाति ज्यादा से ज्यादा 4 साल ही जीवित रहेगी।

कृषि जागरण/नई दिल्ली

तुम्हारे हाथ

तुम्हारे हाथ
पत्थरों की तरह संगीन है
जेल में गाये गये
गीतों की तरह उदास है
बोझ ढोने वाले
पशुओं की तरह सखत है
तुम्हारे हाथों पर नाचती रही है,
नाचती रही है ये दुनिया
अपने हाथों की तरह
युवा हो
ओ मेरे लोगों।

– नाजिम हिकमत

अमीर आसमान में, गरीब दलदल में

रोहित शाहनवाज

तकरीबन आधी सदी पहले वर्ष 1974 में कांग्रेस ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया था। इस नारे को आधार बना कर तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बहुमत से चुनाव में जीत हासिल की थी। उन दिनों देश की राजनीति अमीरी गरीबी के इर्दगिर्द ही बुनी जाती थी। हर पार्टी असमानता के खिलाफ मुखर रहती थी। उन के भाषणों व घोषणा पत्रों में, कहने को ही सही, अमीरी-गरीबी मुद्दा रहता था। सरकार की जनकल्याण की नीतियां चुनावों में हार जीत के नतीजे तय किया करती थीं। देश में गरीबी उन्मूलन चाहे दिखावा भर रहा हो लेकिन चुनावों में असमानता एक राजनीतिक मुद्दा रहता था।

आज देश में 5 राज्यों-उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर, पंजाब और गोवा में विधानसभा चुनाव हुए लेकिन इन चुनावों में चुनावी पार्टियों के लिए तेजी से बढ़ रही असमानता का मुद्दा दूर-दूर तक नहीं था। जिस विपक्ष को इस मुद्दे को जनता के बीच रख कर सरकार को घेरना था वह इसे राजनीतिक चर्चा बनाने में पूरी तरह विफल रहा। असमानता को मुद्दा बनाए जाने की जगह नित्य नए समाजीकरण समीकरण बनाए जा रहे थे। आज तमाम पार्टियों के जातीय व धार्मिक ध्रवीकरण के शोर में सभी जगह समाज में बढ़ती असमानता के मुद्दे दब से गए हैं। हमारे नेता कभी हमें मंदिर, मसजिद के नाम पर भरमाते हैं तो कभी राजपथों की लंबाई व मूर्तियों की ऊंचाई के नए प्रतिमानों से। आर्थिक असमानता और विषमता के प्रतिमान भी हम ने स्थापित कर रखे हैं, लेकिन इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा।

''या तो देश में लोकतंत्र हो सकता है या कुछ के हाथों में केंद्रित धनसंपदा हो सकती है, पर ये दोनों एक साथ बिलकुल नहीं हो सकते।''

यह कथन 1856 में अमेरिकी मूल के ज्यूइश परिवार में जन्मे लुईस डी ब्रैंडिश के हैं। लुईस अपने समय में अमेरिका के बड़े वकीलों में से एक थे और 1916 से 1939 के बीच उन्होंने यूएस सुप्रीम कोर्ट में एसोसिएट जस्टिस के तौर पर अपनी सेवाएं भी दी थीं पर ध्यान देने वाली बात यह कि वे अमेरिकी थे, जहां से आधुनिक समय के पूंजीवादी समाज ने अपनी जड़े मजबूत कीं और दुनियां को पूंजीवादी नेतृत्व प्रदान किया।

अब मसला यह कि इस समय लुईस के जिक्र का क्या मतलब? दरअसल, लुईस के जन्म से ठीक 8 साल पहले 1848 में पूरे विश्व में 2 दर्शनशास्त्री अपनी एक बुकलेट में खासा चर्चा में आ गए थे। उन में से एक का नाम कार्ल मार्क्स था और दूसरे का फेडरिक एंगल. बुकलेट का नाम था 'कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो' यह किताब वर्ग संघर्ष की बात कर रही थी। इस किताब के आने के बाद दुनिया में आर्थिक असमानता के खिलाफ संघर्ष को तार्किक बहस के साथ जगह मिलने लगी।

अब लुईस डी ब्रैंडिश का इन दोनों महानुभावों से सीधे तो कोई संबंध नहीं था पर मार्क्सवाद से मिलती जुलती बात वे यह समझते हुए कह गए थे कि किसी भी लोकतंत्र को तब तक हासिल नहीं किया जा सकता जब तक धनसंपदा कुछ मुट्ठीभर लोगों की मोनोपोली (Monopoly) से आजाद नहीं हो जाती। लुईस के ये वाक्य उस समय कितने प्रांसगिक रहे होंगे, कहा नहीं जा सकता, पर आज के समय में इन की प्रासंगिकता जरूर है।

अमीरों की एकछत्र अमीरी

पिछले दिनों आई हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2021 के आंकड़ों के मुताबिक, भारतीय अरबपति गौतम अडानी और उन के परिवार की संपत्ति पिछले एक साल में लगभग चौगुनी हो गई है। जो 1.40 लाख करोड़ रुपए से बढ़ कर 5.05 लाख करोड़ रुपए हो गई है। संपत्ति में इस भारी वृद्धि ने उन्हें मुकेश अंबानी के बाद एशिया का सब से अमीर आदमी बना दिया है। वहीं 7 लाख 18 करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ मुकेश अंबानी भारत के सबसे अमीर व्यक्ति गिने गए। यह हाल तब का है जब दुनिया के सभी देशों की अर्थव्यवस्था धड़ाम से गिरी है।

इस लिस्ट की मानें तो अडानी को अपने व्यापार से प्रतिदिन एक हजार करोड़ रुपए का लाभ होता है। यह अपने आप में बहुत हैरत वाली बात है। इस प्रकार साइरस पूनावाला,

जिन की बैक्सीन बनाने वाली कंपनी सीरम इंस्टिट्यूट औफ इंडिया ने भारत में कोविड–19 खुराक की लगभग 90 फीसदी मांग पूरी की है, ने भी पिछले एक वर्ष के दौरान संपत्ति में 74 फीसदी की वृद्धि दर्ज की। इस सूची के अनुसार, उन की सामूहिक संपत्ति 1.63 लाख करोड़ रुपए हो गई है।

इस लिस्ट में शीर्ष 10 में जगह बनाने वाले एच सी एल के शिव नादर, हिंदुजा समूह के एस. पी. हिंदुजा, आर्सेलर मित्तल के लक्ष्मी मित्तल, एवेन्यू सुपर मार्केट के राधाकिशन दमानी, आदित्य बिड़ला समूह के कुमार मंगलम बिड़ला और जस्केलर के जय चौधरी शामिल हैं। लेकिन इस पूरी लिस्ट में सब से हैरतअंगेज नाम के तौर पर अडानी, जो अहमदाबाद से हैं, ने सब से अधिक 261 फीसदी की वृद्धि के साथ कमाई करने में भारी छलांग लगाई है।

हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2021 में यह भी कहा गया है कि 119 शहरों में 1,007 व्यक्तियों की संपत्ति 1,000 करोड़ रुपए या इस से अधिक है, रिपोर्ट में कहा गया है कि संचित संपत्ति में 51 फीसदी की वृद्धि हुई, जबकि औसत संपत्ति में 25 फीसदी की। भारत में 237 से ऊपर खरबपति हैं, जो पिछले वर्ष की तुलना में 58 अधिक है।

ब्लूमबर्ग द्वारा जारी हालिया सूची के मुताबिक, विश्व के 25 सब से धनी परिवारों ने पिछले एक साल के दौरान कोरोना जैसी आपदा के समय में भी भर भर कर संपत्ति जुटाई। गौर करने वाली बात है कि यह वह समय रहा जब पूरी दुनिया में लोगों की हालत आर्थिक तौर पर बुरी तरह से चरमराई थी। एम. एस. एम. ई. वाले छोटे उद्योगों से रोजी रोटी कमाने वाले वर्ग तक सब बेपटरी हो गए।

रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के इन 25 अमीर परिवारों की संपत्ति में इस साल 22 फीसदी का भारी इजाफा हुआ है। अगर इन 25 परिवारों की कुल प्रौपर्टी को एक जगह मिला दिया जाए तो उस पैसे से कई देश खरीदे जा सकते हैं। पूरी दुनिया में सिर्फ इन 25 परिवारों की बातें करें तो इन की कुल संपत्ति 1.7 ट्रिलियन डौलर आंकी गई। रिपोर्ट के अनुसार, पिछले एक साल में वंशवादी संपत्ति में काफी तेजी आई है और इस साल इन की कुल संपत्ति में 22 फीसदी का भारी इजाफा हुआ है।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया की सब से बड़ी रिटेलर कंपनी वालमार्ट में आधार हिस्सेदारी रखने वाली वाल्टन परिवार की संपत्ति में सब से अधिक इजाफा हुआ है। इस परिवार की कुल संपत्ति 23 बिलियन डौलर से बढ़ कर 238.20 बिलियन डौलर तक पहुंच गई। इस फेहरिस्त में नई एंट्री फ्रांस की एविएशन कंपनी डसौल्ट के मालिक की है। इस के अतिरिक्त अमेरिकन मेकअप एण्ड कौस्मैटिक कंपनी इस फेहरिस्त में पहली बार शामिल हुई।

वहीं ब्लूमबर्ग की हालिया नई गणना के अनुसार क्रिप्टो एक्सचेंज कंपनी बाईनेन्स के मालिक चेंगपेंग जाऊ दुनिया के शीर्ष अरबपतियों की रैंक में शामिल हुए हैं। उन की अनमानित कुल संपत्ति 96.5 बिलियन डौलर है।

कंगली होती जनता

यह रिपोर्ट ऐसे समय में आई है जब भारत में आर्थिक गैरबराबरी की खाई पहले के मुकाबले और अधिक गहरी हुई है। अमीर अल्ट्रा अमीर बन चुके हैं। उन की मोनोपोली देश की धनसंपदा में स्थायी तौर पर जम चुकी हैं। वहीं, गरीब अत्यधिक गरीब होते जा रहे हैं, इतने कि बहुतों की भुखमरी जैसी हालत हो चुकी है।

7 दिसंबर 2021 को 'विश्व असमानता रिपोर्ट 2022' जारी हुई। दुनिया के 100 जाने माने अर्थशआस्त्रियों ने देशों की आर्थिक असमानता का अध्ययन कर यह रिपोर्ट तैयार की। इस रिपोर्ट में भी संकेत साफ थे कि साल दर साल देश में असमानता बढ़ती जा रही है। शीर्ष 10 प्रतिशत अमीरों की आय देश की कुल आय की 57 प्रतिशत है। वहीं अमीरों की एक प्रतिशत की हिस्सेदारी है। इस रिपोर्ट के मुताबिक जहां एक तरफ अमीरों की आय में इजाफा हुआ है, वहीं, निचले 50 प्रतिशत आबादी की कमाई 13 प्रतिशत घटी है। इसी प्रकार इस तबके के पास संपति के नाम पर कुछ भी नहीं है।

इस साल मार्च महीने में प्यु रिसर्च सैंटर ने दुनियाभर में फैल रही गैरबराबरी को ले कर अपने आंकड़े पेश किए थे। इस रिसर्च के अनुसार, भारत में मध्यवर्ग का एक बहुत बड़ा हिस्सा गरीबी रेखा में जा पहुंचा और गरीब लोगों का एक हिस्सा घनघोर गरीबी तक पहुंच गया। रिपोर्ट कहती है, भारत में पिछले एक साल में कुल 3.2 करोड़ मध्यवर्गी लोग गरीबी में जा घुसे।

रिपोर्ट में भारत के ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम और मनरेगा में भागीदारी में वृद्धि का उल्लेख किया गया था। मसलन, पिछले डेढ़ साल के कोरोना काल में जहां लोगों की नौकरियां बड़े स्तर पर गईं, स्वास्थ्य और महंगाई के चलते सेविंग्स तक खर्च हुईं, वहीं चंद लोग ऐसे भी रहे जिन्होंने इस

दौरान अपनी आमदनी को कई गुना बढ़ा लिया। भारत में तो यह बड़े स्तर पर हुआ ही, साथ ही विश्व में भी गैरबराबरी पहले से अधिक फैली।

इस वर्ष औक्सफेम की वार्षिक रिपोर्ट में यह बात भी सामने आई कि दुनिया के 1000 टौप बिसनैसमैनों ने 9 महीनों के भीतर ही कोरोना वायरस से हुए नुक्सान की भरपाई कर ली थी। औक्सफेम की रिपोर्ट में कहा गया कि जहां टौप अमीरों को अपनी स्थिति में पहुंचने में 9 महीने लगे, वहीं गरीबों को अपनी पुरानी स्थिति में पहुंचने में पूरा एक दशक यानी 10 साल लगेंगे।

विश्व आर्थिक मंच की राजनीतिक और वित्तीय नेताओं की बैठक से पहले जारी की गई यह रिपोर्ट आमतौर पर स्विट्जरलैंड के दावोस में जारी की गई। औकस्फैम ने पाया कि महामारी ने लगभग हर देश में एकसाथ आर्थिक असमानता को और भी बढ़ाया है और ऐसा पहली बार हुआ है। औक्सफैम के कार्यकारी निर्देशक गैब्रिएला बुचर ने कहा, ''कोरोना शुरू होने के बाद से हम असमानता की सब से बड़ी वृद्धि देखने के लिए खड़े हैं। अमीर और गरीब के बीच गहरा विभाजन घातक साबित हो रहा है।''

उन्होंने आगे कहा, ''सभी देशों की अर्थव्यवस्थाएं एक अमीर अभिजात्य वर्ग के लिए बड़ी फंडिंग कर रही हैं जो कोरोना में भी अपने लक्जरी जीवन का लुत्फ उठा रहे हैं। जबकि कोरोना की अग्रिम पंक्ति में खड़े दुकानदार, सहायक, स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता और बाजार विक्रेता इत्यादि बिलों का भुगतान करने व मेज पर रखे भोजन के लिए संघर्ष कर रहे हैं।''

पिछले साल अक्तबूर में विश्व बैंक के एक अलग अध्ययन में पाया गया था कि 2020-21 के साल में 6 करोड़ भारतीय अत्यधिक गरीबी में धकेले जा सकते हैं। अब जाहिर है यह स्थिति भारत देश के सामने गंभीर रूप में खड़ी है क्योंकि इस वर्ष सामने आए कई आंकड़ों में यह दिखने भी लगे हैं। आज अमीरों द्वारा अर्जित की गई धनसंपदा को देश का विकास कह दिया गया है। देश में चंद अमीरों को इस तरह से प्रेजैंट किया जा रहा है जैसे इन के अमीर होने से देश के नागरिक अमीर हो रहे हों।

हकीकत यह है कि देश में पिछले 45 वर्षों से सब से अधिक दर से बेरोज़गारी चल रही थी। कोरोना के बाद सीएमआईई के मुताबिक करोड़ों लोग अपनी नौकरी से हाथ गंवा बैठे हैं। ऊपर से जले पर नमक यह कि सरकार गिरी अर्थव्यवस्था को मानने की जगह आंकड़ों में झोलझाल कर यह साबित करने में लगी हैं कि सब ठीक चल रहा है।

इसी संस्था के ताजा आंकड़ों के अनुसार, सितंबर 2021 से दिसंबर 2021 के दौरान देश में बेरोजगारों की कुल संख्या 3.18 करोड़ रही। ध्यान देने वाली बात यह है कि इन में 3.03 करोड़ की उम्र 29 वर्ष तक की है। यह संख्या 2020 में लगे लौकडाउन के दौर से भी ज्यादा है जो 2.93 करोड़ थी।

हाल यह है कि भारत में अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में अरबपतियों की तीसरी सब से बड़ी संख्या है, फिर भी प्यू रिसर्च की 18 मार्च में प्रकाशित रिपोर्ट में भारत में गरीबों की संख्या में 7 करोड़ 50 लाख की वृद्धि होने का अनुमान है जो गरीबी में वैश्विक वृद्धि का लगभग 60 प्रतिशत है।

2017 के वर्ल्ड बैंक के आंकड़ों, जो 2020 में पब्लिश हुए, के अनुसार, दुनिया के 68 करोड़ 90 लाख अत्यधिक गरीब लोगों में से अकेले भारत में 13 करोड़ 90 लाख लोग अत्यधिक गरीबी की श्रेणी में आते हैं। जोकि कुल अत्यधिक गरीबों की संख्या का 20.17 फीसदी बनता है। वहीं देखें तो भारत की जनसंख्या पूरे विश्व की जनसंख्या का मात्र 17.8 फीसदी ही बनती है। इस का अर्थ यह हुआ कि दुनिया के अत्यधिक गरीबों के अनुपात में सब से बड़ी संख्या भारत में जीने को मजबूर है।

संपत्ति का असमान बंटवारा

1990 के बाद देश में 2 तरह के नैरेटिव चलने लगे, एक ग्रोथ बेस्ड नैरेटिव (विकास आधारित), जिस में जीडीपी, पर कैपिटा इनकम, डैवेलपमैंट इत्यादि की बात की जा रही थी, वहीं दूसरी तरफ, इनक्वलिटी बेस्ड नैरटिव (असमानता आधारित) की डिबेट शुरू हुई। विकास आधारित नैरिटव की समस्या यह रही कि जबकि गरीबी उन्मूलन जरूरी था, उस समय वह किया ही नहीं गया और सिर्फ एक तबके के विकास पर जोर दिया गया।

मशहूर अर्थशास्त्री थौमस पिकैटी, और उन के सहयोगियों द्वारा विकसित 'व्लर्ड इनइक्वलिटी डाटाबेस' के अनुसार, 1990 में नई आर्थिक नीतियों के बाद से भारत में आय असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। 1990 में जहां भारत के सब से अमीर 10 फीसदी लोगों की आय का औसत

34.4 प्रतिशत था और निचले 50 प्रतिशत लोगों की आय का औसत 20.3 प्रतिसत था, वह 2020 तक आते-आते फासला बढ़ कर उच्च 10 प्रतिशत का 57.1 प्रतिशत और निम्न 50 का 13.1 प्रतिशत हो गया है। डाटा का विश्लेषण भारत में धन, आय और संपत्ति की असमानता में खतरनाक वृद्धि को दिखाता है।

वहीं, 1961 में आय में शेष एक प्रतिशत की जो हिस्सेदारी 13 प्रतिशत थी, जो 1981 में घट कर 6.9 प्रतिशत हो गई थी, उस में 1990 के दशक से शीर्ष के प्रतिशत आय में लगातार इजाफा हुआ।

1991 में यह आय 10.4 प्रतिशत से बढ़ कर 2019 तक आते आते 21.7 प्रतिशत हो गई। वहीं दूसरी तरफ कुल आय में निचले 50 प्रतिशत की हिस्सेदारी 1961 और 1981 के बीच में 21 प्रतिशत और 23 प्रतिशत के बीच स्थिर रही लेकिन 1991 के बाद यह लगातार घटती गई। 2019 तक आते-आते निचले 50 की आय में हिस्सेदारी घट कर मात्र 14.7 प्रतिसत रह गई है।

इसी प्रकार जनसंख्या के शीर्ष एक प्रतिशत की कुल संपत्ति का हिस्सा जहां 1961 से 1981 तक 12 प्रतिशत के आस-पास काफी स्थिर रहता था, वह 1991 के से नई उदारीकरण नीतियों के बाद लगातार बढ़ा है और 2020 की औक्सफेम की रिपोर्ट कहती है कि उच्च अमीर एक प्रतिशत की संपत्ति का कुल हिस्सा 42.5 प्रतिशत तक पहुंच गया है। यानी और आसान भाषा में समझा जाए तो यदि देश के 70 फीसदी गरीबों की संपत्ति को 4 गुना कर दिया जाए तो भी इतनी संपत्ति न बने।

वहीं, नीचे के 50 प्रतिशत की कुल संपत्ति का हिस्सा 1961 से 1981 के बीच 12.3 प्रतिशत से मामूली रूप से गिर कर 10.9 प्रतिशत हो गया था, जो कि 1991 के बाद यह फिर तेजी से घटने लगा और 2020 की औक्सफेम की रिपोर्ट के अनुसार यह केवल 2.8 प्रतिशत ही रह गया है।

भारी असमानता की इस पराकाष्ठा को आसान गणित में गणना की जाए तो मात्र 140 अरबपतियों की कुल संपत्ति को अगर जोड़ दिया जाए और देश की अत्यधिक 13 करोड़ गरीब आबादी में बांट दी जाए तो 3 लाख 22 हजार के आसपास बैठती हैं, इसे और सिंपल तरीके से समझें तो एक गांव का गरीब अपने 18 साल में इतने पैसे जोड़ पाता है और एक शहर में रहने वाला गरीब तकरीबन 12 साल में इतने पैसे जोड़ पाता है।

अगर आय की असमानता में भारत की तुलना अन्य देशों से करें तो पता चलता है कि भारत में शीर्ष एक प्रतिशत लोगों की आय चीन, फ्रांस, कोरिया, रूस, इंग्लैंड, अमेरिका इन सब से ज्यादा (21.7) है। इन आंकड़ों से यह साफ पता चलता है कि 1990 की नई आर्थिक नीतियों के बाद असमानता आसमान छूने लगी और विश्व के अन्य देशों के अनुपात में भारत के पूंजीपतियों ने देश मे खासी संपत्ति बनाई।

तथ्य यह भी है कि सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में असमानता भयानक तरीके से बढ़ती जा रही है। डब्लयूआईडी 2019 के आंकड़ों, जो 2020 में प्रकाशित किए गए, के अनुसार, अफ्रीकी देशों में सब से अमीर 10 प्रतिशत लोगों की आय राष्ट्रीय आय के आधे के बराबर है, वहीं ईस्टर्न यूरोप में उच्च एक प्रतिशत लोगों के पास राष्ट्रीय आय का 20 प्रतिशत हिस्सा है जो कि वहां की कुल आबादी के आधे से ज्यादा लोगों की आय के बराबर है। वहीं लैटिन अमेरिका में शीर्ष 10 प्रतिशत अमीर लोगों की आय राष्ट्रीय आय का 54 प्रतिशत है। इसी प्रकार मध्यपूर्व देशों में शीर्ष 10 प्रतिशत लोगों की आय राष्ट्रीय आय पूंजीवादी का 56 प्रतिशत है।

पूंजीवादी चुनौतियां

बीते कुछ सालों में इस बढ़ती वैश्विक असमानता ने पूंजीवाद पर भी प्रश्नचिन्ह लगा दिए हैं। पूंजीवादी में बड़ी-बड़ी इमारतें, चमचमाती सड़कें, राज्यों को जोड़ने वाले यातायात के साधन, कनैक्टिविटी और एक सैक्शन की हाई प्रोफाइल चकाचौंध लाइफ तो दिखती है पर असंख्य लोग गरीबी में भी धकेलते हुए देखे जा सकते हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालिय के मिराडा कालेज में पौलिटिकल इकोनौमिक की स्पैशलाइज्ड प्रोफैसर नंदिनी दत्ता ने 'सरिता' पत्रिका से बात करते हुए कहा, "पूंजीवादी अंतर्विरोध जिस तरह से बढ़ता जा रहा है, वह खुद पूंजीवाद के लिए खतरनाक है। इसे समझने के लिए आप को मार्क्सवादी बनने की ज़रूरत नहीं है। मार्क्स ने जिस तरह के अंतर्विरोधों के बारे में बताया था, उस से कहीं ज्यादा अंतर्विरोध अब देखने में आ रहे हैं और पूंजीवाद को भी तुरतफुरत सामने आ रहे इन संकटों से समुन्मुखी होना पड़ रहा है जो खुद उस के लिए काफी खतरनाक है। पूंजीवाद भले ही इस से सतही तौर पर निबट रहा है, लेकिन इस तरह के अंतर्विरोध अगर लगातार सामने आएंगे तो एक समय बड़े बदलाव का भी सामना करना पड़

सकता है।''

प्रोफैसर नंदिनी दत्ता की बातें भले अतिशयोक्ति लग रही हों पर यह देखने में आ रहा है कि पूंजीवादी का सरगना कहे जाने वाला अमेरिका भी इस से आशंकित दिखाई दे रहा है। वहां अब खुद अमीर लोग अमीरों पर भारी टैक्स लगाए जाने की बातें कर रहे हैं। इसे बड़ा दिल रखने की दृष्टि से देखने की जगह, पूंजीवादी के पुनर्निर्माण के तौर पर समझा जाना चाहिए।

नंदिनी दत्ता आगे कहती हैं, ''टैक्स'' अमीरों पर लगना चाहिए, उन लोगों पर टैक्स लगना चाहिए जो बेशुमार कमा रहे हैं। अमेरिका इन चीजों पर सोच रहा है, अच्छी बात है पर हमारे देश में उलटा हो रहा है। यहां गरीबों को राहत दिए जाने की जरूरत है पर उन्हीं पर अधिक टैक्स लगाया जाता है। पैट्रोल, डीजल से लेकर तेल, नमक, गैस सब उसी तरह से खरीदना पड़ता है जिस तरह से एक अमीर आदमी खरीदता है।

''इनडायरैक्ट टैक्स सरकार का सब से बड़ा रैवेन्यू का स्रोत है, पर इस स्रोत को गरीबों पर थोप कर सरकार कमा रही है। यहां तर्क इस तरह के चलाए जा रहे हैं कि अगर अमीरों पर ज्यादा टैक्स लगाओगे तो वे निवेश नहीं करेंगे। इसी के मद्देनज़र एक झटके में उन का कार्पोरेट टैक्स कम कर दिया गया है। हालत यह है कि जिस हिस्से को सब्सिडाइज होना चाहिए था वही गरीब तबका आज से अधिक टैक्स दे रहा है।''

टैक्स का भ्रमजाल

यह एक प्रचलित भ्रांति है कि केवल अमीर लोग ही टैक्स का भुगतान करते हैं। यह जानना जरूरी है कि भारत में प्रत्यक्ष कर (व्यक्तिगत आय टैक्स और कार्पोरेट टैक्स) कुल राजस्व का लगभग आधा ही होता है। बाकी अप्रत्यक्ष टैक्स में जीएसटी, उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क इत्यादि शामिल होते हैं। कोरोना के बाद भारत के राजस्व में अप्रत्यक्ष करों की भूमिका को ज्यादा बढ़ा दिया गया। वित्त वर्ष 2021 में केंद्र सरकार ने पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 12 प्रतिशत की वृद्धि कर 10.71 फीसदी अप्रत्यक्ष कर वसूल किया। ध्यान देने वाली बात यह है कि इस में जीएसटी से वसूले गए कर में 8 प्रतिशत की गिरावट के बावजूद अप्रत्यक्ष कर में वृद्धि देखी गई।

इस के अतिरिक्त पिछले एक दशक में कुल राजस्व में कार्पोरेट टैक्स की हिस्सेदारी में कमी आई है और अप्रत्यक्ष करों व आय करों में वृद्धि हुई है। वित्त मंत्रालय की 20 सितंबर, 2019 की प्रैस रिलीज के अनुसार, सरकार ने घरेलू कंपनियों पर कार्पोरेट टैक्स घटा कर 22 प्रतिशत तक कर दिया है। जो कि साल 2018 में 35 प्रतिशत था।

इसी प्रकार यदि हम संपत्ति कर (वैल्थ टैक्स) की बात करें तो भारत में 1950 से शुरू किया गया संपत्ति कर, जो कि 30 लाख से ज्यादा की संपत्ति रखने वालों पर लगा करता था, साल 2015 में तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने हटा दिया था, जिस से सरकार को लगभग सालाना एक हज़ार करोड़ का रैवेन्यू जेनरेट होता था।

इस की जगह उस समय सरकार ने एक करोड़ से ज्यादा आय वाले अमीरों पर 2 प्रतिशत 'सुपर रिच सरचार्ज' लगाया था। लेकिन 2019 में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने निवेशकों को प्रोत्साहित करने के नाम पर इस सरचार्ज को भी हटा दिया, जिस से सरकार को 1,400 करोड़ रुपए का रैवेन्यू का सालाना नुकसान झेलना पड़ता है।

यहां यह भी देखा जाना चाहिए कि सरकार किस तबके पर अधिक मेहरबान होती है। मनमोहन सरकार की तुलना में मोदी सरकार ने पूंजीपतियों के 3.6 गुना कर्ज माफ किए हैं। सरकार की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2015 से 2019 के दौरान सरकार ने 7 लाख 94 हजार 354 करोड़ रुपए के कर्ज एनपीए में डाल दिए हैं, यानी सीधा कहा जाए तो कर्ज माफ किए गए हैं।

इस के अनुसार, यह साफ देखा जा सकता है कि एक तरफ जहां सुपर अमीरों को टैक्स में सरकार लगातार छूट दे रही है, वहीं दूसरी तरफ गरीबों पर भारी भरकम टैक्स लगा कर सरकार उन्हें और असमानता की तरफ धकेल रही है, जबकि इस समय होना इस के उलटा चाहिए था।

लोकतंत्र के लिए खतरा असमानता

इसे समझने के लिए हम ने दिल्ली विश्वविद्यालिय के दिल्ली स्कूल औफ इकोनौमिक्स में अर्थशास्त्र के प्रोफैसर मनीश कुमार से बात की, वे कहते हैं, ''पूंजीवादी व्यवस्था साफ-साफ शोषण पर आधारित होती है। कुछ लोगों को काम और कुछ लोगों को बेरोजगार रख कर यह पूरा सिस्टम सरवाइव करता है, यही इस की बुनियाद भी है पर यह समझना जरूरी हो जाता है कि शोषण से पनप रही असमानता

की भी अपनी एक लिमिट होती है।''

वे आगे कहते हैं, ''अर्थशास्त्र डिमांड और सप्लाई की सिंपल थ्योरी पर काम करता है। डिमांड है तो सप्लाई है, मान लीजिए अगर देश में नौकरियों का भारी अकाल है, जो काम कर रहे हैं वे भी ठीक से तनख्वाह नहीं पा रहे, लोग अतिशोषित हो रहे हैं, तो ऐसे में लोगों की अपने आप क्रयशक्ति (खर्च करने की ताकत) कम हो जाती है। जब अधिकतम लोगों की क्रयशक्ति कम होती है तो इस से महामंदी की स्थिति पैदा होती है। जो उत्पाद हुआ होता है, उसे कोई खरीदता नहीं, जिस कारण नई नौकरियां पैदा नही होती और यह चक्र चलता रहता है। इस तरह का उदाहरण हम ने 1929 में वैश्विक महामंदी के तौर पर देखा था।''

इसी तरह प्रोफैसर नंदिनी दत्ता कहती हैं, ''असमानता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, गरीब गरीब हो रहे हैं या महागरीब बन रहे हैं, तो इस से सोशल फैब्रिक टूटता है। मनुष्य अपने सरवाइवल के लिए कुछ भी करने को तैयार है और जहां एक तरह का तनाव होगा वहां लोगों की कमाई पर असर पड़ेगा।''

वे आगे कहती है, ''असमानता से लोकतंत्र पर बुरा असर पड़ता है, जैसे इकोनौमिक पावर जिन के हाथ में है, सारी नीतियां वही लोग डिक्टैट करते हैं, लोकतंत्र जो 'फौर द पीपल, वाइ दा पीपल है,' उस में 70-80 प्रतिशत लोग पूरे डैवलपमैंट प्रोजैक्ट से ही बाहर हो जाते हैं। ऐसे में कम्युनल टैंशन ज्यादा बढ़ती है, रिएक्शनरी पौलिटिक्स ज्यादा बढ़ती है, आइडैंटिटी पौलिटिक्स बढ़ती है, मिसलीडिंग पौलिटिक्स बढ़ती है, क्योंकि सब लोग अपने-अपने हिस्से को मानने लग जाते हैं।''

विकृति से कम नहीं

सरकार की नीतियों में भी चंद पूंजीपतियों का आर्थिक विकास ही देश का विकास हो चला है। सरकार की अधिकतर नीतियां बड़े पूंजीपतियों के हितों को ध्यान में रख कर बनाई जा रही हैं, फिर चाहे वह नोटबंदी हो, जीएसटी हो, कृषि कानून हों या कुछ और। कई सरकारी कंपनियां घाटा बता कर एमएनपी के नाम पर लीज पर दी जा रही हैं या निजी हाथों में बेच दी गई है।

सरकार इन सभी चीजों से आम लोगों का ध्यान हटाने के लिए अपनी छोटी उपलब्धियों को बड़ा कर के प्रचार कर रही हैं या जहां छोटी भी उपलब्धि नहीं उसे गैरजरूरी मुद्दों से भ्रमित कर रही हैं। सीधा देखा जा सकता है कि इस राक्षसी गैरबराबरी ने लोकतंत्र यानी लोगों की आवाज को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया है। आज आर्थिक भेदभाव जमीन आसमान जैसा हो चला है।

बचपन में सरकारी स्कूल की 10वीं कक्षा में इंग्लिश के एक अध्यापक हुआ करते थे, जिन के मुंह से एक कहावत अकसर सुनने को मिलती थी कि 'पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती।' इस कहावत का प्रयोग अक्सर वे कमजोर बच्चे और तेज बच्चे की तुलना करते हुए बोगस तर्क गढ़ते दिया करते थे। यह स्थिति तब थी जब वे खचाखच भरी क्लास में सिर्फ आगे वाली बैंच में बैठे 4-5 बच्चों पर विशेष ध्यान दिया करते थे।

किसी छात्र के प्रति परिस्थितियां जाने बगैर अध्यापक का पहले से ही पूर्वाग्रह बना लेना थोड़ा अटपटा तो लगता था पर चूंकि समाज में फैली असमानता को कुतार्किक तौर से प्रस्तुत करने के लिए इस कहावत की चलती आ रही सामाजिक स्वीकार्यता थी, तो हम भी इसे पचा लिया करते थे। किंतु उन दिनों भी एक बात दिमाग में चलती रहती थी कि कि कहावत के हिसाब से पांचों उंगलियां बेशक बराबर नहीं होती, पर इतनी भी तो गैर बराबरी नहीं होनी चाहिए कि एक उंगली टांग बराबर हो और एक नाखून बराबर, आज देश दुनिया में गैर बराबरी इसी अंदाज़ में बढ़ रही है, जो समाज में फैली किसी विकृति से कम नहीं।

अब सवाल यह उठता है कि बढ़ती असमानता राजनीति का व चुनावों का मुद्दा क्यों नहीं बनती? हैरानी की बात है कि चुनाव प्रचार में हमारे नेताओं को इस संदर्भ में कुछ कहने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। चुनाव का सारा गणित जातियों और धर्मों के आधार पर चल रहा है। जाति धर्म के आधार पर वोट मांगे जाते हैं और डाले भी जाते हैं। बढ़ती आर्थिक असमानता व सामाजिक अस्थिरता आखिर चुनावी राजनीति के केंद्र में क्यों नहीं है, यह बहुत ही अहम सवाल देश को झकझोर रहा है।

स्रोत : सरिता (फरवरी, प्रथम, २०२२)

जिस दिन औरतों अपने श्रम का हिसाब मांगेंगी, उस दिन मानव इतिहास की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी चोरी पकड़ी जाएगी।

- रोजा लग्ज़मबर्ग

तर्कशील गतिविधियां

अंध विश्वास मिटाओ, वैज्ञनिक चेतना जगाओ

लाडवा (कुरुक्षेत्र) में अंधविशास मिटाओ, वैज्ञनिक चेतना जगाओ कार्यकम का आयोजन किया गया।

दिनांक 8 अप्रैल 2022 को डा.बी.आर. आंबेडकर सेवा समिति-लाडवा (कुरुक्षेत्र) के तत्वावधान मे आंबेडकर जयंती एवं तर्कशील लहर के संस्थापक डा. अब्राहम टी. कोवूर के जन्मदिवस को समर्पित गुरु रविदास धर्मशाला-लाडवा में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की टीम द्वारा सायं 6 बजे से रात्रि 8-30 बजे तक चमत्कारों का पर्दाफाश करने वाला एक प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया। कार्यकम में तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह एवं मा. राकेश कुमार द्वारा जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर पाखंडवाद के नकाब को उतार कर के लोगों मे तार्किक सोच उत्पत्र करने का सफल प्रयत्न किया गयाइस कार्यक्रम का दर्शकों के मनों पर सार्थक प्रभाव देखने को मिला। मा. सुरेंद्र पाल एवं डा. आबेंडकर सेवा समिति-लाडवा के संचालक प्रवीन बौद्ध के प्रयासों से ही यह प्रोग्राम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में मा. बलवन्त सिंह, मा. राकेश कुमार एंव मा. सुरेन्द्र पाल को बाबा साहब डा. आबेंडकर का चित्र भेंट कर के सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के आयोजन में प्रवीण बौद्ध, विक्रम, हरीश, बाबू, शुभम, चंद्रशेखर, राजन, महिंदर पाल एवं अभिषेक इत्यादि सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा।

.**नूरणखेडा गोहाना** (16 अप्रैल, 2022): गाँव नूरणखेडा की अंबेडकर धर्मशाला में जय भीम युवाशक्ति व निर्माणकार्य मजदूर मिस्त्री यूनियन के संयुक्त तत्वाधान में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में 'अंधविश्वासों का पर्दाफाश' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य प्रस्तुति 'तर्कशील पथ' पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह जी ने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखाकर लोगों का मनोरंजन करते हुए ढोंगी बाबाओं के चमत्कारों का पर्दाफाश किया। उन्होंने कहा कि शोषित वंचित तबकों को अंबेडकर जी के संदेश को याद रखना चाहिए कि हिन्दू धर्म असमानता पर आधारित धर्म है और दलित, शोषित वंचित तबकों के खिलाफ है। अंबेडकर जी ने शिक्षा का महत्व बताया था। किंतु आज सरकार जनता को अंधविश्वासों में धकेल रही है। उन्होंने कहा कि आज तमाम शोषित वंचित तबकों का दुश्मन पूंजीवाद है और इसलिए सरकार व उसके आदमी जनता के दुश्मन पूंजीवाद को बचाए रखने के लिए मेहनतकश लोगों को हिंदू मुस्लिम के नाम पर लड़वा रही है. आज हमें बाबा साहेब, शहीद भगत सिंह और उनके साथियों के विचारों से सीख लेकर संगठित होकर मौजूदा शोषण दमन की व्यवस्था को उखाड़ फेंकना होगा।

निर्माण कार्य मजदूर मिस्त्री यूनियन के राज्य प्रधान कामरेड करनैल सिंह ने अंबेडकर जी की शिक्षाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि अंबेडकर जी ने जाति व्यवस्था के मुख्य आधार पर चोट की थी मगर आज भी उसके अवशेष बचे हुए हैं और जिसकी वजह से दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं. उन्होंने बताया कि आज दलित समुदाय व मेहनतकश लोगों का मुख्य दुश्मन पूंजीवाद है इसलिए आज हमें बाबा साहेब की शिक्षाओं को आत्मसात करने के साथ साथ शहीद भगत सिंह के क्रांतिकारी रास्ते पर चलकर व्यवस्था परिवर्तन के लिए संघर्ष करना होगा तभी शोषण दमन का अंत होगा. उन्होंने कहा कि भाजपा संघ परिवार का भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का सिद्धांत एक फासीवादी दमन की व्यवस्था लाने का षड्यंत्र है। हमें एक होकर इस षड्यंत्र को विफल करना पड़ेगा।

निर्माण कार्य मजदूर मिस्त्री यूनियन के जिला प्रधान सुरेन्द्र, जय भीम युवा शक्ति के सोनू, डॉ कपिल, डॉक्टर प्रदीप, संदीप, प्रदीप एलटी, मोहित, सतीश सिवानका, कर्मवीर कोहला सहित कार्यक्रम में भारी संख्या में उपस्थित युवाओं, महिलाओं व बच्चों ने बाबा साहब के मिशन को पूरा करने के लिए शहीदभगत सिंह के बताये रास्ते पर चलने का संकल्प लिया. अंधविश्वासों के खिलाफ अभियान चलाते हुए वैज्ञानिक विचारों का प्रचार प्रसार करने का कार्यक्रम लिया गया।

कविता

अरे ! प्रेम करके तो देख !

-सरला माहेश्वरी

हिजाब पहना तो मारेंगे
जींस पहना तो मारेंगे
बुर्का पहना तो मारेंगे
टाँगें दिखाई तो मारेंगे
घूँघट हटाया तो मारेंगे
बोली तो मारेंगे !
न बोली तो मारेंगे !
खिलखिलाई तो मारेंगे
मोबाइल रखा तो मारेंगे
प्रेम किया तो मारेंगे
नौकरी की तो मारेंगे
घर पर रही तो मारेंगे !
इस बहाने ! उस बहाने मारेंगे !
धर्म के नाम पर मारेंगे !
अधर्म के नाम पर मारेंगे !
तुम मारोगे जरूर
ढकूं या उघाड़ूँ कुछ भी
मेरे होने के लिए ही मारोगे
जन्म के पहले ही मारोगे !
सच यह है कि तुम्हे
हमारा हिजाब भी डराता है !
हमारी जींस भी डराती है !
घूँघट उठाना भी डराता है !
हमारा बुर्का भी डराता है !
हमारा चुप रहना भी डराता है !
बोलना भी डराता है !
हमारा पढ़ना भी डराता है !
ना पढ़ना भी डराता है !
नौकरी करना भी डराता है !
और घर में रहना भी डराता है !
हमारा खिलखिलाना भी डराता है !
चुप रहना भी डराता है !
गोया हम इंसान नहीं
मुट्ठी में बंद तुम्हारे डर का दूसरा नाम हैं !
पर वे दिन दूर नहीं जब
मार ! मार ! मार ! होगा पलटवार !
पलटवार !
खार ! खार ! खार ! ये मार ! वो मार !
ये मार ! वो मार !
तब लड़ाई बराबरी की होगी !
तब आएगा लड़ाई का मज़ा !
अरे कायर पुरुष मत डर !
मत डर !
हम इंसान है !
मुट्ठी खोल हाथ मिला !
साथ चलकर तो देख !
अपने से निकल कर तो देख !
हमारी आँख से भी देख !
ज़िंदगी को फूलों की तरह महकते तो देख !
पागल ! नजरों को दो-चार करके तो देख !
अरे! प्रेम करके तो देख

धर्म एक ऐसा आवरण बन गया जिसकी ओट में अपार, अनकमाई दौलत और भूमिगत यौन शोषण को पनपने का भरपूर अवसर प्राप्त हो गया है। इससे हर प्रकार का गुनाह छिपाया जा सकता है और जब तक धर्म कायम रहेगा, छिपाया जाता रहेगा।

– गिरधारी लाल व्यास

अज्ञान और भय पर केवल दो ही जी सकते हैं- भगवान और भूत।

– डा. कृष्णा कान्त पाठक

कविता

युद्ध के ख़िलाफ़

भले मुझे निष्कासित कर दो
इस मुल्क, इस दुनिया-जहान से
लेकिन मैं एक अपराध करना चाहता हूँ
मैं चाहता हूँ
बग़ैर हथियारों वाली एक दुनिया
मैं चाहता हूँ
हज़रत नूह की तरह मैं भी एक नाव बनाऊँ
दुनिया के तमाम हथियार भर दूँ उसमें
और बहा दूँ किसी बरमूडा ट्राइंगल की जानिब
मैं बेदख़ल कर देना चाहता हूँ
दुनिया भर की तमाम पुलिस फोर्स को
छीन लेना चाहता हूँ फ़ौजियों के मेडल
जो सरहदों पर किन्हीं के ख़ून का हिसाब हैं
मैं सरहदों को मिटा देना चाहता हूँ
या कि वहाँ बिठा देना चाहता हूँ
फ़ौजियों की जगह दीवानों को
मीराँ को, सूर, कबीर, ख़ुसरो, फ़रीद, मीर, ग़ालिब, फ़ैज़,
जालिब और निदा को
इतिहास की किताबों से पोंछ देना चाहता हूँ
जीत की गाथाएँ
हार की बेचैनियाँ
ध्वस्त कर देना चाहता हूँ
कीलों, महलों में टँके जंग के प्रतीक-चिह्न
संग्रहालयों में रखे हथियारों की जगह रख देना चाहता हूँ
दुनिया भर के प्रेम-पत्र
मैं लौट जाना चाहता हूँ हज़ारों साल पीछे
और मिटा देना चाहता हूँ
तमाम धर्मग्रंथों से युद्ध के किस्से
छीन लेना चाहता हूँ हाथ से धनुष
राजाओं, शहंशाहों के हाथ से तलवार
मिटा देना चाहता हूँ
कर्बला की इबारत
मैं कुरुक्षेत्र, कर्बला और तमाम युद्धस्थलों को लिख देना चाहता हूँ
खेल के मैदान
मैं कविताओं से सोख लेना चाहता हूँ वीर रस
एक कप चाय के बदले सूरज की तपिश को दे देना चाहता हूँ
तमाम डिक्शनरियों के हिंसक शब्द
हिंसा के खिलाफ़ कहे और लिखे गए
मैं अपने हिंसक शब्दों के लिए माफ़ी चाहता हूँ!

फ़िरोज़ ख़ान

औरत

वो समाज जो न कर सके
हर औरत का सम्मान
जिस समाज में बसते हो
वहशी जैसे इन्सान
जहाँ नजर हर गुण्डे की
औरत पर टिक जाती हो
जहाँ नहीं औरत को
सड़क पर चलने की आज़ादी
उस समाज का बहिष्कार
अब कर देगा इन्सान
कल की सुबह अनोखी होंगी
कल की शाम निराली
नाचेगी औरत के मन में
खेतों की हरियाली
इन सब को सच करने की
अब ली है मन में ठान
माँ बहनों को मिल पायेगा
दुनियां में सम्मान
मिलकर कदम बढ़े है
अब पूरे होंगे अरमान ।

- सफदर हाशमी

जज्बे को सलाम!

देश के सबसे चर्चित डिजाइनर कुणाल मर्चेंट ने ऐसे वक्त में भी प्रधानमंत्री मोदी के लिए टेबल डिजाइन करने से इनकार कर दिया है, जब पूरा देश फासीवाद से जूझ रहा है। किसी पद के लालच में बड़े-बड़े नेता राज्यसभा की सदस्यता या किसी अन्य पद के लिए अपनी विचारधारा को बेचने को आतुर हैं। कुणाल को पी.एम. के कार्यालय ने एक ईमेल में संपर्क किया था जिसमें कहा गया था कि प्रधानमंत्री मोदी चाहते हैं कि आप उनके कार्यालय के लिए एक टेबल डिजाइन करें। कुणाल ने पी.एम.ओ. यानी प्रधानमंत्री कार्यालय को एक ई-मेल में लिखा है कि... ''प्रधानमंत्री कार्यालय के लिए एक टेबल डिजाइन करना मेरे लिए अनैतिक होगा, जहां पर अल्पसंख्यको के साथ भेदभाव और उन्हें अधिकारों से वंचित करने वाले कानूनों पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।'' कुणाल केवल यहीं पर नही रुके उन्होंने कहा कि उनके काम करने वाले कर्मचारियों में दलित, महिलाएं, अल्पसंख्यक आदि शामिल हैं, सभी एक साथ काम कर रहे हैं। ऐसे कार्यालय के लिए काम करना उन सभी सदस्यों के साथ विश्वासघात करना होगा।



(नोट: दिल्ली पुलिस ने अब कुणाल मर्चेंट के खिलाफ केस दर्ज किया है)

ब्लाईंड स्पॉट

मानव आँख की संरचना ऐसी होती है कि उसके देखने के क्षेत्र में एक ऐसा बिंदु होता है जहाँ वह कुछ भी नहीं देख सकता है, डॉक्टर इसे ब्लाइंड स्पॉट कहते हैं। हम इस दोष को नहीं जानते क्योंकि हमारा मस्तिष्क उस बिंदु को उसके चारों ओर की जानकारी से भर देता है। मुझे लगता है कि बौद्धिक जीवन में अधिकांश लोगों के लिए यह अंधा स्थान उनका अपना धर्म है। नेक लोग भी जो हर दूसरी घटना को तार्किक रूप से समझने में सक्षम हैं, वे भी अपने धर्म की तर्कहीनता को समझने में असमर्थ होते हैं।

डॉ. सुभाष परिहार

ਮਨ ਮਸਤਕ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ, ਚੇਤਨਾ ਦੀ ਲੋਅ ਜਗਾਉਣ ਲਈ ਤਰਕਸ਼ੀਲ ਸੁਸਾਇਟੀ ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.) ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਪੁਸਤਕਾਂ (ਭਾਗ-1)



If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....